भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमोअरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमोआयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष : 59 अंक 12
दिसम्बर, 2002 मार्गशीर्ष, 2059

स्नेह का स्वर्णिम नजराना

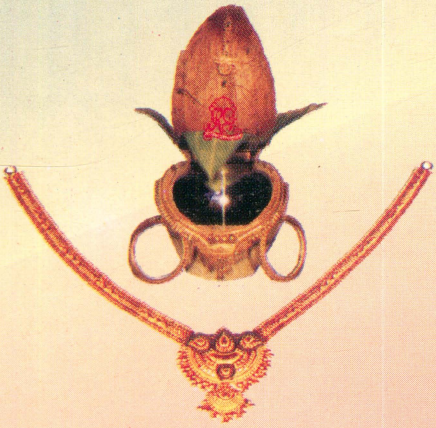

सर्वगुणसंपन्न अलंकारों का
स्नेह एवं विश्वास का स्वर्णिम बंधन
रतनलाल सी. बाफणा ज्वेलर्स
जहाँ सोने की गुणवत्ता भी है
और आभूषणों की
विशाल मात्रा में विविधता भी है ।
स्वर्णिम सौंदर्य संस्कृति की
अद्वितीय विशेषताएँ
स्वर्ण आभूषणों की हरदम
नई कलात्मक वेरायटी ।
रेडी स्टॉक में अलंकारों के
अनगिनत प्रकार ।
भाव एवं मजूरी वाजिब ।
आभूषणों की 'वापसी विश्वसनीयता'
स्पष्ट रूप में आभूषणों पर मुद्रांकित ।
'वापसी' दी हुई गारंटीनुसार
चालू भाव से ५० रु.
कम भाव से लेने का वचन ।
हर समाज के विशिष्ट परम्परानूरूप
गहने उपलब्ध ।
हीरों के आभूषण एवं चांदी बर्तनों की
नई विशाल मालिका ।
केवल स्वनिर्मित
(R.C.) अलंकारों की बिक्री ।
ज्वेलरों के लिए होलसेल बिक्री सुविधा ।
स्पष्ट व स्वच्छ बातचीत
एवं विनयशील व्यवहार ।.
पधारिये!
जहाँ विश्वास ही परम्परा है।

RC
जहाँ विश्वास ही परम्परा है

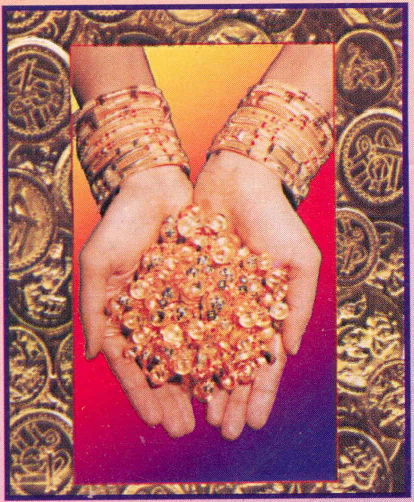

रतनलाल सी. बाफना, ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी बर्तन शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

कलामुद्रा

चेतावनी : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नहीं!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997

- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

- **सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

- **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
  3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981

- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
  डाक पंजीयन सं. RJ2803/02

- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

नच्चा नमइ मेहावी,
लोए कित्ती से जायई।
हवइ किच्चाणं सरणं,
भूयाणं जगई जहा॥
–उत्तराध्ययन सूत्र 1.45

**प्राज्ञ जानकर विनय करे,
जग उसकी महिमा होती है।
विनयी हो धर्माश्रय वैसे,
ज्यों जीवशरण भू होती है ॥45॥**

दिसम्बर 2002
वीर निर्वाण सं. 2529
मार्गशीर्ष, 2059

वर्ष : 59 **अंक** : 12

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

जैन साधु वन्दनीय क्यों? : आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. 3
सेवा, विनय, उदारता एवं निस्पृहता के धनी आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. (2) : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. 7
साधक-साधिकाओं के प्रेरणादायी प्रसंग(2) : शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. 15
जीवन को ढोना नहीं, जीना सीखें : श्री पदमचन्द गांधी 18
पराधीनता कैसे मिटे? : श्री एन.के.खींचा 20
रेशम नहीं एरी रेशम : श्री गजमल लोढ़ा 25
समता एवं समरसता का संचार : श्री भीखमचन्द बाफना 26
चिन्तन को सकारात्मक बनाएँ : श्रीमती पिंकी जैन 28
मौत के क्षण और जीवन का सच : श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरड़िया 33

विचार / संस्मरण

रेस्टॉरेंट का अन्तः सच : श्री नितिन सोनी 21
प्रभु स्मरण : पी.मंजू कोठारी 24
मित्रता : एक अमूल्य रत्न : श्रीमती पिंकी जैन 29
विचार-कण : श्रीमती मदनदेवी बुरड़ 31

कथा / कविता / प्रेरक-प्रसंग

भोज की सीख : श्री प्रकाश गुन्देचा 6
आध्यात्मिक गीत : विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया 14
विकार भाव ही पतन है : श्री महावीर प्रसाद अजमेरा 19
शालिभद्र जी : संकलित 30
साधना : श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास' 32
व्यवहार : श्री प्रकाश कर्णावट 35
श्रद्धांजलि गीत : श्री सचिन भाण्डावत 45

स्तम्भ / अन्य

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. का महाप्रयाण : संकलित 36
समाचार-संकलन : संकलित 46
संक्षिप्त समाचार : संकलित 63
बधाई / चुनाव : संकलित 64
श्रद्धांजलि : संकलित 65
साभार–प्राप्ति–स्वीकार : संकलित 68
अंकेक्षण रिपोर्ट : संकलित 71

जैन साधु वन्दनीय क्यों?

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

जैन साधु की वन्दनीयता वेश से नहीं, साध्वाचार से है। साध्वाचार का पालन करते हुए वह अनेक दोषों से बचता है। तभी वन्दनीय-पूजनीय बनता है। आचार्यप्रवर के इस प्रवचनांश में निन्दा-त्याग, विकथा-प्रपंच-त्याग एवं विभूषा व स्त्री-संसर्ग-त्याग की महती प्रेरणा करते हुए साधक को सावधान किया गया है।—सम्पादक

संसार के समस्त त्यागी वर्ग में आज जैन त्यागी (साधु) वर्ग ही एक ऐसा वर्ग है, जो अपने कुछ आदर्श को बनाये हुए है। धन-संग्रह, दार-संग्रह और भूमि-संग्रह आदि से जहां संसार का त्यागी वर्ग दूषित है, वहाँ जैन त्यागी वर्ग अपवाद साबित हुआ है। यह वर्ग वाहन का उपयोग नहीं करता, हर समय पैदल यात्रा करता है। इस वर्ग के साधु भोजन-पान-वस्त्रादिक भी स्वयं भिक्षा से प्राप्त करते हैं। सादा और निर्व्यसनी जीवन इनका आदर्श है। ऐसे साधु संसार के सम्मान पात्र हों, इसमें कोई आश्चर्य नहीं, परन्तु आज उनकी वन्दनीयता की आधारशिला दोलायमान हो रही है। आज उनको निद्रा, विकथा, प्रमाद आदि विकारों ने घेर रखा है। ज्ञान-ध्यान एवं त्याग का अभ्यास शनैः शनैः घट रहा है। ऐसी दशा में आज संशोधक और आलोचक वृत्ति के लोगों में उनका सम्मान बना रहना कठिन है। मेरी समझ में साधु-साध्वियों को अपनी वन्दनीयता की आधार-शिला स्थिर करनी चाहिए, जिसके लिये निन्दा-त्याग, विकथा-प्रपंच-त्याग, शोभा एवं स्त्री-संसर्ग का त्याग करते हुए उपशमभाव एवं असंग्रहवृत्ति को अपनाना चाहिए।

पूर्व समय के संत-महात्मा व्यक्तिगत या सांप्रदायिक किसी भी प्रकार की निंदा नहीं करते थे। ***शास्त्र में निंदा का निषेध करते हुए कहा है– 'पिट्ठी-मंसं न खाइज्जा' अर्थात् परोक्ष में किसी की बुराई करना पृष्ठ मांस भक्षण करना है।*** अतएव किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए। आत्मार्थी संत दूसरों के दोष सुनने में भी रस नहीं लेवे।

विकथा और गृहस्थों के परिचय बाबत शास्त्र में कहा है कि– ***'मिहो कहाहिं न रमे'***, परस्पर विकथाओं में रमण मत करो। तथा– ***'गिहिसंथवं न कुज्जा'*** गृहस्थों से अधिक परिचय मत करो।

उपर्युक्त दोनों नियमों के पालनार्थ पहले के संत सावधान रहते थे। छोटे बड़े गांवों में आगन्तुक स्त्री-पुरुषों के साथ उनको संभाषण भी करना पड़ता था। सामाजिक जानकारी भी करनी पड़ती, किन्तु छोटे-बड़े सभी साधु-साध्वी उसमें संलग्न नहीं रहते थे। ***विकथा प्रपंच से बिल्कुल निर्लेप रहने वाले भी महात्मा मिलते थे,***

जो सदा ज्ञान-ध्यान या सेवा में ही मस्त रहते थे। प्रमुख संत-सती भी प्राथमिक एवं आवश्यक परिचय के उपरान्त वार्तालाप से बचे रहते थे। इसी से उनको आत्म-बल की साधना का अवसर भी प्राप्त होता था। सांसारिकों का अति परिचय नहीं होने से, उन्हें जनता के अवज्ञापात्र होने का प्रसंग नहीं आता था। खेद के साथ कहना पड़ता है कि आज हम संतों में विकथा का प्रमाद इतना बढ़ गया है कि गृहस्थों से हम घुल-मिल गये हैं। इसी से गृहस्थ हमारी बहुत सी अंतरंग बातें भी जानने लगे हैं और साधु-वर्ग पर भी उनका असर होने लगा है। मुनियों को विकथा और गृहिसंसर्ग से सदा बचते रहना चाहिए।

'विभूसा इत्थि संसग्गं'- शास्त्र में कहा है कि शरीर आदि की शोभा और स्त्रियों का संसर्ग ब्रह्मचारी के लिये हलाहल विष के समान है। इसलिये पूर्वाचार्यों ने मर्यादा की है कि सुबह व्याख्यान और तीसरे प्रहर शास्त्र-वाचन या चौपाई के अलावा संतों के यहाँ स्त्रियों को तथा सतियों के यहाँ पुरुषों को नहीं बैठना चाहिए। क्योंकि अधिक संसर्ग से मोह बढ़ता है, जो समय पर दोनों के अहित का कारण हो सकता है। किसी बाई को धार्मिक विषय में कुछ पूछना हो, संत-सतियों के समाचार कहना हो, विदेश का कोई दर्शनार्थी हो या संघ-संबंधी परामर्श करना एवं खास आलोयणा करना हो तो समझदार भाई की साक्षी से संतों के स्थान पर स्त्रियाँ आवश्यकतानुसार बात कर सकती हैं। ऐसा ही सतियों के स्थान पर भाइयों के लिये भी समझें। परन्तु यह संभाषण संघाड़े के प्रमुख तथा दीक्षा या ज्ञान से स्थविर संत-सतियों के अलावा सबको नहीं करना चाहिये। बड़ों को कभी अवकाश नहीं हो और किसी की बात सुननी पड़े या किसी को कुछ कहना समझाना पड़े तो बड़ों के सामने या अनुमति से करना चाहिए। सारांश यह है कि *धर्मोपदेश और ज्ञान-ध्यान के सिवा अन्य समय में स्त्रियों को खाली बिठाकर बातें करना मोह वृद्धि का कारण है, अतः साधुओं के मर्यादा विरुद्ध स्त्री-संसर्ग और साध्वियों को पुरुष-संसर्ग से सदा बचते रहना चाहिये।* खास कर आज के युग में तो इसका अधिक सावधानी से पालन करना जरूरी है।

प्राचीन समय के संत-महात्मा उपशम भाव के आदर्श थे। वे क्षमा और निरहंकार भाव का यथोचित रूप से पालन करते थे। वे शास्त्र के आदेशानुसार *'जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ से न समुक्कसे'* वंदना नहीं करने वाले पर क्रोध नहीं करते और वंदना पाकर अहंकार नहीं करते थे। साधुओं के दशविध धर्म में क्षमा, निर्लोभता, सरलता, मार्दव, निरभिमान आदि वृत्तियां प्रधान धर्म हैं। समूह में रहने वाले साधु- साध्वियों में क्रोध आदि कषायों की मन्दता नहीं होने से स्वपर को अशान्ति का कारण मान बैठते हैं। वर्तमान में दृष्टिगोचर होने वाले कलह, कदाग्रह

और गुरुजनों की आज्ञा का तिरस्कार, ये क्रोध, मान के ही परिणाम हैं। क्योंकि अनुपशान्त कषाय वाले को गण कैद और साधु-साध्वी शत्रु से दिखाई देते हैं। गण से पृथक् रहने वाले साधु-साध्वी अधिकांश इसी के प्रमाण हैं। त्यागी वर्ग की यह दशा देखकर गृहस्थों की श्रद्धा-भक्ति भी कम हो जाती है। लोग कहने लगते हैं कि संसार की झंझटों को छोड़ कर जब साधु बन गये, तब उनमें झगड़ा कैसा? झगड़े तो मानापमान के होते हैं। जिन्होंने मान-अपमान को छोड़ दिया उनकी अशान्ति कैसी? यह तो वैसी बात है कि 'एक अंचंभो हो रह्यो, जल में लागी आग।' आज कल अधिकांश देखा जाता है कि विरक्त दशा में शान्त, दान्त और विनयशील दिखने वाले व्यक्ति भी संयम का बाना धारण करके ४-६ महीने में ही रंग बदल देते हैं, जबकि पूजनीय संत-मंडली में आकर तो उन्हें अधिक सद्गुणों का विकास करना चाहिये। मुनिवरों को चाहिये कि वे अपने उपशम भाव को अबाधित बनाये रखें और सबसे मिलजुल कर रहें। सावधानी रखते हुये कदाचित् कारणवश क्रोध आ भी जाय तो मुनियों के मन में पानी में खिंची हुई लकीर से ज्यादा उनका टिकाव नहीं होना चाहिये। *'अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति'* इस अनुभूत उक्ति के अनुसार क्षमाशील मुनिओं के संसर्ग में क्रोधियों की भी क्रोधाग्नि शान्त हो जाती है। राष्ट्र के महापुरुष गांधी इन्हीं सद्गुणों के कारण जगत्पूज्य हुए हैं। निन्दा और स्तुति में से वे निन्दा की बात को पहले सुनना चाहते थे। सुभाष बोस जैसे क्रान्तिकारी विचारकों के साथ विचार भेद होने पर भी वे मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते देखे गये। फिर विश्व पूज्य भगवान महावीर के अनुयायी संतों में ऐसा आदर्श सहज प्राप्त होना चाहिये, तभी शासन का उत्थान और श्रमणों की वन्दनीयता जगद्मान्य हो सकती है।

जैन साधुओं के लिये शास्त्र में निर्ग्रन्थ या भिक्षु पद का अधिकता से प्रयोग किया गया है। निर्ग्रन्थ या भिक्षु का मतलब होता है, कालान्तर में उपयोग लेने के लिये किसी भी वस्तु का संग्रह कर गांठ नहीं बांधना, किन्तु आवश्यकता उपस्थित होने पर जरूरत के अनुसार वस्त्र, पात्र, अन्न आदि भिक्षा से प्राप्त कर लेना। उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये जैन साधु मर्यादा के उपरान्त किसी भी वस्तु का संग्रह नहीं रखते। इसमें मुनियों की सच्ची आत्मनिर्भरता प्रगट होती है। यह मुनियों की कपोत वृत्ति है। जैसे कठिन से कठिन दुर्भिक्ष में भी कबूतर दाना संग्रह नहीं करता, अपने श्रम, सामर्थ्य और निश्चय के सहारे जीवन बिताता है, वैसे ही साधु भी वस्त्रादि की दुर्लभता के विचार से अपनी आत्म-निर्भरता नहीं खोते। संग्रहवृत्ति को रोकने के लिये एक यह भी नियम रखा गया है कि साधु अपने वस्त्र, पात्र, पुस्तकादि को स्वयं ही उठाकर चले। किसी भारवाही से नहीं उठवावे और न ही किसी गृहस्थ के यहां कपाट आदि में बंद कर रखवावे। आवश्यकता से अधिक या

संत-सतियों को देने के उपरान्त बची हुई सामग्री को गृहस्थ(श्रावक) के पास अपनापन हटाकर वोसरा देना चाहिये।

इन नियमों को जीवन में अपना कर रहने वाले साधु-साध्वी समूह विशेष के नहीं, जगत् के पूजनीय हो सकते हैं। *भाषाज्ञान और व्याख्यान कला में विफल होने पर भी यदि आदर्श चारित्र बल और शुद्ध मनोबल की शक्ति है तो हर समय दुनिया उनके पीछे दौड़ी आयेगी।* सत्ताबल से संघबल और संघबल से आत्म-बल अधिक शक्तिशाली है। जमाना चाहे किधर भी चले आपको (साधु-साध्वी वर्ग का) तो हर जगत् के प्रवाह का मुकाबला करना है। अतः धैर्य और श्रद्धा के साथ संयम में खड़े रहिये और भौतिकवाद एवं बुद्धिवाद के विनाशकारी भंवर से स्वपर को बचाते रहिये। यदि ऐसा हुआ, तो संसार सदा मुनिजनों का स्वागत करेगा और वे भी देश के लिये अनुपयोगी सिद्ध नहीं होंगे। ★

बोध कथा

भोज की सीख

श्री प्रकाश गुन्देचा

राजा भोज अपने पिता की मृत्यु के समय मात्र तीन वर्ष के थे, इसलिये मरते वक्त उन्होंने भोज के बड़ा होने तक अपने भाई मुंज को राज्य सौंपा। राज्य पाकर मुंज के मन में लोभ घर करने लगा कि जब भोज बड़ा होगा, उस वक्त राज्य चला जायेगा। आखिर उसने भोज को मरवाने का निर्णय ले लिया।

उसने दो-तीन व्यक्तियों को लालच देकर भोज को मारने के लिये योजना बना, भोज को उनके साथ जंगल में भेजा। जैसे ही उन्होंने भोज को मारने के लिये तलवार निकाली, भोज ने निर्भय होकर कहा- "चाहे आप मुझे मारें, पर मुझे क्यों मारा जा रहा है, इसका कारण तो बतायें।"

वे व्यक्ति वैसे ही भोज जैसे राजकुमार को मारने से कांप रहे थे। अब भोज की धीरता व गम्भीरता को देख उनका मन गद्गद् हो उठा। हाथ से तलवार छूट गई। उन्होंने दबी आवाज से सारा रहस्य खोल दिया। उनका हृदय बदल गया। उन्होंने भोज को एक गुप्त स्थान पर छिपा दिया। भोज ने उनको एक पत्र मुंज को देने के लिये दिया। उन्होंने वह पत्र पुत्र मुंज को दे दिया। मुंज ने वह पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था-

"सतयुग के भूषण मान्धाता राजा चले गये। समुद्र पर पुल बांधने वाले राम भी आज नहीं है। युधिष्ठिर आदि अन्य राजा भी चले गये हैं, पर किसी के साथ पृथ्वी नहीं गई है। लेकिन तुम्हारे साथ अवश्य जायेगी।"

भोज का यह पत्र पढ़कर मुंज मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। जैसे ही चेतना आई। वह भोज भोज चिल्लाने लगा। जो व्यक्ति भोज की हत्या करने गये थे, उन्होंने भोज को मुंज के सामने प्रकट कर दिया। *-जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर*

सेवा, विनय, उदारता एवं निस्पृहता के धनी आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

रत्नवंश के षष्ठ पट्टधर जैनाचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. विनय, सेवा, उदारता एवं निस्पृहता के साथ आचार-पालन में सजग एवं कठोर थे। उनका जीवनवृत्त आज भी साधकों के लिए प्रेरणा-स्रोत है। रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने दादागुरु की पावन-स्मृति में बालकेश्वर, मुम्बई में श्रावणी अमावस्या संवत् 2059 दिनांक 8 अगस्त 2002 को फरमाया था। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। **-सम्पादक**

(क्रमशः2)

पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज ने आचार्य श्री विनयचन्द जी म.सा. से गुणों को धारण किया। विनयचन्द जी म.सा. ने हजारों-लाखों व्यक्तियों को जोड़ा। उनकी, सबको साथ ले कर चलने की बात सुनेंगे तो आपको लगेगा स्थानकवासी ही नहीं, मूर्तिपूजक क्या, तेरापंथी क्या, सभी परम्पराओं के लोग आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की उदारता-मिलन सरिता के लिए आते थे, ज्ञान-चर्चा करते थे, चाहे वे मूर्तिपूजक परम्परा के शिवजीरामजी महाराज हों अथवा अन्य साधक।

आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज अजमेर विराज रहे थे। तब मुनि चौथमल जी वैरागी थे। उन्होंने आचार्य भगवन्त पूज्य हस्तीमल जी म.सा. के साथ दीक्षा ली। वे लोढ़ा परिवार में एक बार भोजन करने गये। सेठानी ने वैरागी की जेब में चालीस कलदार रुपये डाल दिये। बड़े घर का काम होता है। वे कभी फल भी खाते, दो फल दिये, साथ में कटोरे में मोहर डाल देते। उस समय की बात है जब पैसे में पेट भरता था। एक आने की मिठाई खाकर पेट पर हाथ फेरते। वैरागी भोजन करके आया और आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. को वन्दन करने लगा। वन्दन में छन्न- छन्न की आवाज सुनी। पूछा- चौथमल तेरी जेब में क्या? "गुरुदेव! मैंने मना किया था। मेरे मना करते-करते जबरदस्ती सेठानी जी ने जेब में डाल दिये।" सेठानी आई तब कहा-" ये मोह छोड़ने वाले वैरागी हैं, इन्हें रागी मत बनाओ, रुपये देकर बिगाड़ो मत।" वे कितने सावचेत थे?

नवदीक्षित हस्तीमल जी म.सा. और चौथमल जी म.सा. को जोधपुर पढ़ाने की बात आई। सतारा वाले राय बहादुर मोतीलाल जी ने कहा- इन बाल मुनियों के अध्ययन के लिए हमारे कान्फ्रेंस में एक पण्डित हैं-दुःखमोचन जी झा। वे अभी मुम्बई ऑफिस में काम करते हैं, सेवाभावी हैं। उन्होंने आचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी म.सा., पूज्य घासीलाल जी म.सा. को पढ़ाया है। आप फरमायें तो

उन्हें भेज दूँ। आचार्य भगवंत शोभाचन्द्र जी म.सा. को कुछ खेद तो हुआ कि वीतराग के भक्त और मान्यता वाले श्रावक स्वाध्याय नहीं करते, इसलिए ब्राह्मण पण्डित के माध्यम से अध्ययन की बात कही जा रही है। वह युग था जब एक-एक बहिन को ३००-४०० थोकड़े आते थे। हरसोलाव की एक बहिन को ६०० थोकड़े याद थे। संत-सती स्वयं होकर हरसोलाव चातुर्मास करने की बात कहते, क्योंकि वहाँ एक बहिन जानकार थी। रामपुरा के केशरीमल जी सुराणा बत्तीस शास्त्रों के ज्ञाता थे। पर आज कितने?

मुम्बई की आबादी कितनी? (सभा में से—एक करोड़ से ऊपर) उनमें से जैन कितने? और जैनों में भी विद्वान कितने? बालकेश्वर में है कोई? मुझे आचार्य भगवन्त पूज्य हस्तीमल जी म.सा. के वे शब्द याद आ रहे हैं। एक ब्राह्मण ने ताना मारा- पढ़ा लिखा साधु और अनपढ़ ब्राह्मण बराबर होते हैं।

आचार्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. को पूज्य रत्नऋषि जी म.सा. पढ़ाने के लिए पूना ले कर गये। पण्डित का नाम शायद गणेश शास्त्री गोडबोले था, वह वैष्णव था। उसने जवाब देते कह दिया- जैन नास्तिक होते हैं, उन्हें पढ़ाना पाप है। यह सब सुनकर भी व्यवस्था किनकी ?

हम मुम्बई के उपनगर में थे। कहा- महाराज हमारे यहाँ बहुत पण्डित हैं, जरूरत हो तो कहना। मैं आपसे पूछूँ—जैनों में पण्डित कितने हैं? आपके यहाँ वकील हैं,जज हैं,सी.ए. हैं,बी.ए.हैं,एम.बी.बी.एस.हैं, पर पण्डित नहीं। यह काम किनका?

सतारा वाले मोतीलाल जी को आचार्य श्री ने कहा, पहले देखूँगा-पण्डित कौन है? पण्डित आया। आचार्य श्री ने कल्याण मंदिर की दो गाथाओं का अर्थ करवाया। इस परीक्षा के बाद जब यह ध्यान में आया कि ये गुमराह नहीं करने वाले हैं तब उन्होंने पढ़ाने की अनुमति दी।

आचार्य भगवंत हस्तीमल जी म.सा. ने इसी व्यथा से जयपुर के प्रवचनों में स्वाध्यायशील श्रावक निर्माण करने की प्रेरणा दी जो विद्वान कोविद होकर दूसरों को पढ़ा सकें। फलस्वरूप जयपुर संघ में 'जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान' की स्थापना हुई। संस्थान है, खर्चा उठाने वाले श्रीमंत भी हैं, पर पढ़ने वाले नहीं हैं। क्यों? तो जैनों को तो सी.ए. बनना है। जलगांव में थोड़ी प्रेरणा चली, सुरेश भाई ने वहां विद्यापीठ तो शुरु कर दी, पर वहाँ भी पढ़ने वाले नहीं हैं। विद्यापीठ में पढ़ने वाले के लिए-पाँच-दस हजार की नौकरी देने की तैयारी है, फिर भी लड़के नहीं आते। जैन समाज का लक्ष्य ज्ञान के प्रति कब होगा? दूसरे देशों के लोग हमारे इन ग्रंथों पर रिसर्च कर रहे हैं।

मैं आचार्य भगवन्त पूज्य शोभाचन्द्र जी म.सा. की बात कह रहा हूँ। साधना के क्षेत्र में आपका जीवन अनुकरणीय था। आप प्रतिदिन २००० की स्वाध्याय करते। उत्तराध्ययन सूत्र का प्रतिदिन स्वाध्याय करते। प्रहर रात बाकी रहती तब जागरण कर लेते। आवश्यक कार्य की पूर्ति करके आकाश देखकर समझ जाते कि अब स्वाध्याय का समय हो गया। आज तो घड़ियों से काम चलता है, उस समय घड़ियाँ नहीं थीं, समय का पता आकाश देखकर लगा लेते। शुद्ध रूप से उत्तराध्ययन सूत्र का पाठ करने में ढाई घंटे लगते हैं, किन्हीं-किन्हीं को तीन घंटे लग सकते हैं, यह रोज का कार्यक्रम था। मैं क्या कहूँ, शास्त्र स्वयं कहता है-

''प्रातःकाल होने के साथ साधक गुरु चरणों में पहुंचे, हाथ जोड़ कर निवेदन करे- भगवन्! मुझे आज क्या करना चाहिए? आपकी जिसमें इच्छा है उसमें आप मुझे नियोजित करें। मैं सेवा के लिए भी तैयार हूँ और स्वाध्याय का फरमावें तो भी तैयार हूँ।'' साधु के प्रमुख कार्य क्या? हमारा कार्य सम्पर्क नहीं है, बातचीत भी नहीं। यह तो प्रपंच है। साधु का कार्य सेवा और स्वाध्याय है।

मैं किन-किन महापुरुषों की बात कहूँ- पूज्य काशीराम जी महाराज प्रतिदिन प्रातः २५० लोगस्स और सायं २५० नमोत्थुणं का ध्यान करते। प्रत्येक चातुर्मास में वर्ष भर में ३२ शास्त्रों का स्वाध्याय करते थे। साधु ही नहीं, श्रावक भी ऐसे थे जो पाँच घंटे तक लगातार बिना स्वाध्याय किये मुँह में पानी तक नहीं डालते। मैं चातुर्मास के प्रारंभ में कह गया, यह शास्त्रवाणी आज तक कैसे कायम रही? वाचना से, परावर्तन से और सीखते-सिखाते कायम रही या शास्त्र की बात करते-करते कायम रही?

जिनमें वीतराग वाणी पर आस्था थी-आचार्य भगवंतों के प्रति विनय था वे प्रतिदिन दो हजार की स्वाध्याय करते। आपकी और मेरी तरह नहीं। जल्दी-जल्दी में कोई शब्द रह गया, कोई अक्षर छूट गया, ऐसे नहीं, शुद्ध उच्चारण के साथ जिनका स्वाध्याय चलता था। वहाँ झंझट नहीं था। झटझट में झंझट है। मैं कभी आपका प्रतिक्रमण सुनता हूँ उसमें कई-कई अशुद्धियाँ हैं, प्रतिदिन बोला जाने वाला वन्दना पाठ भी शुद्ध नहीं है।

संवत् १९७४ की बात है, आचार्य पूज्य शोभाचन्द्र जी म.सा. जोधपुर चातुर्मास सम्पन्न कर भोपालगढ़ पधारे। श्रावकों से सम्पर्क किया- भाई, कौनसा शास्त्र सीखोगे? किसी को प्रतिक्रमण नहीं आता तो उसे प्रतिक्रमण याद करने की प्रेरणा करते। लोगों से पाप निवृत्ति के लिए कहते। कोई ५०-६० का दिखता, उसे व्रत-प्रत्याख्यान करवाते, व्रती बनाते। हमारा सम्पर्क किसलिए? आप क्या पूछते हैं? ''गुरुदेव! आपके ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साता है? आपके प्रतिकूलता हो तो हमें

बताओ।" हमारी पृच्छा है-"आप कितना पाप छोड़ सकते हैं?"

मैं जैन की बात क्या कहूँ? जैन बारहव्रती बनें, तपस्वी बनें, उसमें क्या बड़ी बात? हरिजन लोगों ने अठाइयाँ की हैं? आज जैनों को समझाया जा रहा है, साधुओं को कैसे देना? हमें जिन गांवों में जाने का काम पड़ा वहाँ एक भी घर जैन का नहीं- विश्नोई, जाट, माली आदि कौमों के लोग रहते हैं, पर उन्हें भिक्षा कैसे देनी, इसकी जानकारी है।वहाँ एक घर के मुखिया मूलजी विश्नोई थे। वे भोपालगढ़ चातुर्मास में प्रवचन सुनने आये। प्रवचन में बताया जा रहा था- दरवाजा खुला है तो कुत्ता आयेगा, चोर भी आ सकता है। आप घर का दरवाजा खुला रखते हैं या बन्द? शाम को दुकान से आते हैं तो दरवाजा बन्द करके आते हैं या खुला छोड़कर आ जाते हैं? आप सोते समय घर का दरवाजा बन्द करना नहीं भूलते, दुकान में आते समय अच्छी तरह दरवाजा बन्द करते हैं। बन्द करने के बाद भी एक बार फिर से जाँच करते हैं कि ठीक से बंद हुआ या नहीं। "भाई, घर और दुकान का तो आपको ध्यान है, पर इस आत्मा पर संयम के व्रत का ताला कब लगाओगे? यहाँ जो ज्ञान-दर्शन-चारित्र का माल लुट रहा है, उसकी रक्षा का क्या उपाय किया, आपने?

प्रवचन में यह बात सुनी और मूलजी विश्नोई ने खड़े होकर बारह व्रत ग्रहण कर लिये। वह कौन? वह जाति से विश्नोई है। उनका अपना धर्म भी है। विश्नोई के बीस और नौ इस तरह उन्तीस नियम बताये गये हैं, पर उसने एक व्याख्यान सुनने के साथ व्रत अंगीकार कर लिये। दूसरे दिन के व्याख्यान में पूज्य शोभाचन्द्र जी म.सा. ने कहा- "चिड़ी कमेड़ी, कागला रात चुगन नहीं जाय, नर देह धारी मानवी, तूं रात पड़्याँ क्यूं खाय।" वह विश्नोई भाई फिर खड़ा हुआ और बोला—मुझे जीवन पर्यन्त रात को नहीं खाने का नियम दिला दो। अगले दिन प्रवचन में आचार्य भगवन्त ने फरमाया- "रात में अन्न खाना मांस के बराबर है और पानी पीना खून के बराबर है।" वह विश्नोई भाई फिर खड़ा हुआ, कहा-"महाराज! आधा-अधूरा कांई नियम करवाया, रात में पानी भी नहीं पीना, इसका भी नियम करा दो।"

आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. एक बार मूलजी की ढाणी पधारे तो उनको भी कहना पड़ा कि यह विश्नोई भाई जैन श्रावक से बढ़कर है। वह चातुर्मास में आचार्य भगवन्त की सेवा में जोधपुर-पीपाड़ जैसे नजदीक के क्षेत्र में पैदल चल कर आता और अठाई करके जाता। कौन? वह मूल जी विश्नोई। आपकी नजर में वह कुल से जैन नहीं था, किन्तु आचार्य भगवन्त की भाषा में कहूँ-वह नाम का जैन नहीं, करणी से जैन था। उनके लिए जैन कहें कि ये हमारे गुरु हैं, पर वैष्णव परम्परा वालों से भी पूछा जाता कि तुम्हारे गुरु कौन? तो वे आचार्य श्री शोभाचन्द्र

जी म.सा. का नाम बताते। क्यों? क्योंकि वे हर आने वाले को कुछ न कुछ धर्म की प्रेरणा करते रहते। धर्म की प्रेरणा कौन कर सकता है? जिसमें गहरा ज्ञान हो। उस समय, जज रणजीत सिंह जी बैदमूथा प्रतिदिन व्याख्यान सुनने आते। चार दिन नहीं आए तो यह नहीं पूछा कि चार दिन कहां रहे? प्रेरणा जरूर करते।

आज उपालम्भ है- भक्त आया और आप बोले नहीं। इतनी दूर से चलकर आया, आप बात नहीं कर पाते। कम से कम दो मिनट के लिए कुछ पूछ तो लेते। वार्ता प्रेरणा भी हो सकती है, जबकि आने वाले का कोई समय हो। अगर सुबह से शाम तक आते रहेंगे तो इसका मतलब है हमने साधुपना आपके लिए ही लिया है। यदि आप जिज्ञासा करना चाहते हैं, कुछ नियम करना चाहते हैं, जीवन बनाना चाहते हैं तो किसी समय की अवधि बांध लीजिए। समय के साथ आयेंगे तो संतों को सहुलियत रहेगी, अन्यथा संतों का ज्ञान, ध्यान और स्वाध्याय आदि का क्रम गड़बड़ा जायेगा। उन्हें भी अपनी कुछ साधना करनी है।

आज आप अपने नाम के साथ जैन लिखते हैं, कहते भी हैं। मैं पूछूँ- क्या जैन मांसाहारी होता है? क्या जैन गुटखा बना सकता है? क्या जैन धोखाधड़ी कर सकता है? आप विचार करें। आपका व्यापार-व्यवहार कैसा होना चाहिए?

श्रीमद् राजचन्द्र जी कहते हैं- "मैं दूध पी सकता हूँ, खून नहीं पी सकता। अगर मेरे कारण किसी को कष्ट होता है, मेरे पास रखा कागज ले जाइये।" आज जैन का गौरव भुलाया जा रहा है। मैं आपकी क्या बात कहूँ, कई साधुओं के यहाँ जो फंक्शन होते हैं, उनमें मांसाहारी लोगों को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। आमंत्रित करने के पीछे सोच क्या? वह मंत्री है, अफसर है, बस। आप यदि किसी बारह व्रती श्रावक को अतिथि बनाएँ, किसी ब्रह्मचारी को आमंत्रित करें, सदाचारी को बुलायें वह तो ठीक, अन्यथा अभक्ष्य, अपेय खाने-पीने वाले कुत्सित आचारी को जैन-साधुओं के फंक्शन में विशेष अतिथि के रूप में बुलाने का क्या औचित्य?

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की सेवा में मद्रास से, महाराष्ट्र से, मालव प्रदेश से भी श्रावक आते थे। घूमने-फिरने, पिकनिक करने को नहीं, मात्र उपस्थिति बताने के लिए नहीं, किन्तु ज्ञानाराधना के लिए आते थे। दो महीने-चार महीने सेवा करने वाले थे-रतनलाल जी नाहर, दीवान बहादुर मोतीलाल जी मुथा, बालमुकुन्द जी मुथा। वे स्वयं ज्ञान सीखते और ज्ञान सिखाने वालों का सहयोग करते। आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. जिनका जन्म-दिवस कल श्रावण सुदी एकम को है, उन्होंने फरमाया कि मुझे शास्त्र ज्ञान सिखाने में किशनलाल जी मुथा का बहुत बड़ा सहयोग रहा। वे आचार्य भगवंत शोभाचन्द्र जी म.सा. से ज्ञान

सीखकर जाते और महाराष्ट्र में संत-सतियों को सिखाते। आज नहीं बोलने का उपालंभ देने वाले तो कई आते हैं, सीखने-सिखाने वाले कितने? यह कहते हुए मिल जायेंगे कि महाराज! आप उस घर तो गोचरी गए, मेरे घर नहीं आये।

आचार्य भगवन्त पूज्य हस्तीमल जी म.सा. के साथ दीक्षित पूज्य चौथमल जी महाराज से मैंने सुना- रत्नवंश में ऐसे-ऐसे श्रावक थे जिनका राजदरबार में रुतबा था। वे चाहे सतारा वाले मोतीलाल जी मुथा हों, राजमल लखीचन्द जी हों, अजमेर के छगनमल जी मगनमल जी मुणोत परिवार के हों, ढड्ढा परिवार के हों या लोढ़ा परिवार के हों आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. ने उनमें से किसी को बुलाने के लिए एक पत्र तक नहीं लिखवाया। जो आते उनको व्रती बनाते, शास्त्र सिखाते और धर्म में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते।

उनका जीवन खुली किताब की तरह था। किसी से एकान्त में बैठकर बात नहीं करते। साधुओं के लिए क्या एकान्त? आचार्य भगवंत पूज्य हस्तीमल जी म.सा. कभी कमरे में अलग जाकर नहीं बैठे। कोई समस्या आती तब भी जहां बैठे हैं वहीं बात करते, अलग से बात करना उन्हें इष्ट नहीं था। पूज्य चौथमल जी म.सा. तो कहते कि व्याख्यान में पत्र के समाचार सुनकर वहीं जवाब दे देते कि सती-मण्डल के साता हो तो वहां चातुर्मास कर सकते हैं।

पूज्यपाद आचार्य भगवन्त श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. जीवन-निर्माण के कुशल शिल्पकार थे। "गुरु का सामर्थ्य असीम एवं शिष्य का ससीम है। शिष्य अणु और गुरु विराट् होता है। शिष्य सरोवर होता है तो गुरु चेतना का महासागर। गुरु का सान्निध्य एवं कृपा पूर्ण आशीर्वाद पाकर शिष्य अपनी बिंदु रूप सत्ता को सिंधु रूप में विस्तृत करता है। गुरु की अनेकानेक विशेषताएँ हैं उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि वह शिष्य को भगवान् के रूप में प्रतिष्ठित करता है। शिष्य को शिष्य रूप में नहीं रखकर गुरु पद पर प्रतिष्ठित करने वाले थे गुरुवर्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा.।" अनगढ़ पत्थर को कलाकार अपनी छैनी से तराश कर प्रतिमा के रूप में प्रतिष्ठित करता है, कुंभकार माटी से मूर्ति बनाता है, चित्रकार अपनी कलाकृति चित्र का निर्माण करता है। ये सब जड़ के निर्माण करने वाले हैं, जड़ का निर्माण सरल कार्य है, परन्तु चेतन की चेतना का विकास करना कठिन कार्य है। साधनाशील साधक इसमें भी सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी पैनी सूक्ष्म दृष्टि से चेतन की चेतना को समझता है और उसके विकास के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देता है। ऐसे ही जीवन-निर्माण के शिल्पकार थे आचार्य भगवंत पूज्य शोभाचन्द्र जी म.सा., जिन्होंने कुशल शिल्पी के रूप में आचार्य भगवंत पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन का निर्माण कर उनमें समस्त कलाओं का विकास कर समाज को एक अमरकृति भेंट दी।

आचार्य भगवंत पूज्य शोभाचन्द्र जी म.सा., बेजोड़ पारखी के रूप में जाने व देखे जाते हैं। जड़ हीरे का मूल्यांकन करना जौहरी का कार्य होता है, रोग-निदान हेतु चिकित्सक, समस्या निदान हेतु वकील, अज्ञान निवारण हेतु अध्यापक की शरण ग्रहण करना आवश्यक होता है, उसी प्रकार जीवन का मूल्यांकन करने वाले, चैतन्य हीरे को परखने वाले संसार में एकमात्र गुरु भगवंत होते हैं। पारस पत्थर लोहे को सोना बनाता है, पर पारस नहीं। किन्तु गुरु, शिष्य की मेधा को परखता व चेतना को निरखता है एवं उसे गुरु सम बना देता है। ऐसे ही जीवन की परख करने वाले थे गुरुदेव पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा., जिन्होंने बालक हस्ती को परखा, उनकी प्रतिभा को समझा एवं सम्पूर्ण शक्ति से उनके जीवन का विकास कर सच्चे पारखी के रूप में स्मरणीय, वंदनीय एवं अभिनंदनीय बनाया।

आज गुणों की प्रशंसा करने वाले कम और आलोचना निंदा करने वाले अधिक मिलते हैं। उन्नति और सुधार का सुझाव देने वाले कम, किन्तु कमी निकालने के लिए कोई भी तैयार हो जाता है। सबसे सरल काम दूसरों की कमी निकालना अर्थात् आलोचना-निंदा करना है। ऐसा कोई श्रावक कभी आचार्य श्री के चरणों में बैठकर कुछ कहना चाहता तो बात प्रारंभ करने के साथ आचार्य श्री फरमाते-भाई हाथी-घोड़े पर बैठकर गधे पर क्यों बैठता है? साधु रूप हाथी और श्रावक रूप घोड़े की सवारी करके निंदा रूप गधे पर क्यों बैठता है? अमृत जैसी अनुपम और मिश्री जैसी वीतराग वाणी की चर्चा-वार्ता सीखना-सिखाना छोड़कर निंदा-आलोचना की पापकारी-डुबाने वाली वार्ता में समय क्यों गंवाता है? इससे तेरा मुँह खराब होगा और मेरे कान।

इस तरह वे बुराइयों को निग्रह करने में स्वयं भी समर्थ थे और दूसरों को भी बुराइयों से हटाते थे। ऐसी थी उनकी गुणग्राही दृष्टि, दोष निकंदन की वृत्ति।

उस महापुरुष ने जिस समाधि के साथ जीवन यात्रा चालू की, अंतिम समय तक उनकी समाधि बनी रही। साधु कम से कम दो हजार करोड़ होते हैं, पर एक-एक साधु को अन्तिम मनोरथ संथारा-संलेखना पूर्वक समाधि मरण नहीं होता। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. ने अंतिम समय आलोचना-प्रतिक्रमण के साथ समाधिभावों में अपना शरीर छोड़ा। उन्होंने सत्तर साल की अवस्था में भी तप नहीं छोड़ा, स्वाध्याय नहीं छोड़ा। उन्होंने अपना पाट कभी दीवार के सहारे नहीं लगाया। दिन में कभी सोये नहीं। वे एषणा समिति के प्रति पूर्ण सचेत थे। निर्दोष लाना और जहाँ कहीं भी उन्हें दोष की संभावना दिखाई देती तो भूँगड़े और खाखरे खा लिये, पर दोष नहीं लगने दिया। इसीलिए कहते हैं जिनका अन्न शुद्ध, उनका मन शुद्ध। जिनके विचार शुद्ध उनका आचार शुद्ध।

वे स्थानकवासी परम्परा के यशस्वी आचार्य थे, जिनका श्रावणी अमावस्या को जोधपुर में स्वर्गवास हो गया। ब्यावर में मूर्तिपूजक परंपरा के संत इन्द्रविजय जी म.सा. स्वामीजी श्री जोरावरमल जी म.सा. के पास आये, कहने लगे-"एक सहृदय आचार्य की अपूरणीय कमी हुई है।" यह है उदारता और प्रेमव्यवहार का प्रत्यक्ष प्रमाण।

उन्होंने विनय से ज्ञान मिलाया और सेवा से वे महान् बने। आप भी अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करें। आप हम भी उनके सद्गुणों को जीवन में उतारेंगे तो हम अपना जीवन धन्य बना सकेंगे और सुख-शांति-आनन्द को प्राप्त कर सकेंगे।

आध्यात्मिक गीत

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया

यह द्वादशांग का चिन्तन है।।टेर।।

जीवन में जिनधर्म मुखर हो,
उपजे नित्य स्वभाव सुघर हो,
नहीं सतायें किसी जीव को, यह देव शास्त्र गुरु वन्दन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।1।।

संयम से समता जगती है,
समता से ममता नसती है,
और सफल हो सिद्ध साधना, होता पूरन तभी नमन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।2।।

जो है नहीं हमारा, छूटे,
त्याग धर्म के अंकुर फूटें,
नरभव तभी सार्थक होता, तप से मंजता अंतर्मन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।3।।

निर्मल मन ही धर्म हमारा,
अंतकाल में यही सहारा,
अपना दीपक स्वयं जले तब, आलोकित होता तन मन है।
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।4।।

दर्शन मोह मिटे जीवन से,
मुक्ति मिले, भव-भव भटकन से,
खुलते द्वार मोक्ष धाम के होय आखिरी जनम-मरण
यह द्वादशांग का चिन्तन है।।5।।

-मंगल कलश, ३९४ सर्वोदय नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़-२०२००१

साधक-साधिकाओं के प्रेरणादायी प्रसंग

शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.

हमारे विगत इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ अनेकानेक महान् साधक- साधिकाओं के त्याग-तप से संपूरित सुरभित जीवन से आज भी महक रहे हैं। उनका जीवन हमारे लिए महान् प्रेरणा का स्रोत है। यहां पर ऐसे कतिपय साधकों के जीवन की झांकी शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित है, जिसे पढ़कर समझकर और जीवन में धारण कर हम अपना जीवन भव्य और नव्य बना सकते हैं।—सम्पादक

(क्रमशः2)

कठोर अभिग्रही श्री वेणीदास जी महाराज

अभिग्रहों के इस क्रम में सहसा मेरे हृदय पटल पर एक अन्य साधक का चित्र अंकित हो जाता है। यह है मेवाड़ प्रान्त के श्री वेणीदासजी म.सा.। उन्होंने बनेड़ा में एक बार निम्न प्रकार से कठोर नियम ग्रहण किया।

बनेड़ा के राजाधिराज श्री गोविन्दसिंहजी, कुंवर अक्षयसिंह जी, भंवर अमरसिंह जी और कुंवर प्रतापसिंह जी चारों ही पीढ़ी एक साथ मिलकर मेरे पास आकर, मुझे खड़ा देखकर कहे— यह क्या कर रखा है। इसी बीच कुंवर श्री अक्षयसिंह जी जब तक इन कठोर शब्दों में न कहे "बैठ जा वेण्या, कह्यो मान, नहीं तो पकड़ कर गांव बाहर कर दूंगा" तब तक न बैठना।

इस अभिग्रह की मर्यादा छः मास की थी। अभिग्रह किए चार माह से अधिक १० दिन का समय निकल चुका था। परन्तु अभिग्रह सफल न हुआ। साधक के हाथ पैर हाथी के पैर की तरह फूलते गए, पर साधक में कोई कमजोरी नहीं। वे तो अपने व्रत में मेरु पर्वत की तरह अकम्पित थे। अन्ततः चार माह के ऊपर कुछ दिन व्यतीत होने पर यह भीष्म प्रतिज्ञा पूरी हुई। सन्त जीवन की यह इन्द्रिय दमन की दृढ़ता हमें बताती है कि "सन्त जहाँ फूल से कोमल होते हैं, वहाँ साधना में वज्र से भी कठोर।

आत्मबल की आदर्श : छोगा जी महाराज

गुलाबपुरा में संवत् २००० का चातुर्मास, विकराल जल प्रलय, अति भयंकर दृष्टि। निकटतम क्षेत्रों में बाढ़ प्रकोप के समाचारों से जनता भयभीत हो चुकी थी। अपने प्राणों की रक्षा में सचेष्ट जनता ने तत्र विराजमान महासतीजी म.सा. के चरणों में समय की प्रतिकूलता देख अन्यत्र विहार करने की दृढ़ शब्दों में भावभरी प्रार्थना की।

ये क्षण साधक की कसौटी के थे। एक तरफ था प्रकृति का प्रकोप और दूसरी तरफ था एक महान् साधिका का आत्मबल।

साधिका के पास महामंत्र नवकार का बल था। वह नमस्कार मंत्र जिसकी शक्ति के आगे भयंकर से भयंकर उपसर्ग परिवर्तित हो जाते थे। बादल गरजे, बिजलियां चमकी, पानी उछालें भरता महासतीजी के चरणों को चूमने के लिए तैयार हुआ, पर सती ने धैर्य व साहस नहीं त्यागा, आखिर सब विपदाएँ समाप्त हुईं।

भय से आकुल जनता को भी सतीजी ने धैर्य बँधाया और उनमें साहस जगाया। आत्मबल में लीन, साहस और धैर्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति और कोई नहीं रत्नवंश की श्रेष्ठ श्रमणी रत्नों में महासती श्री छोगाजी म.सा. थी। आज भी उनके धैर्य, साहस, वीरता व धीरता की कहानी सुनाते हुए गुलाबपुरा के लोग आनन्द विभोर हो जाते हैं।

ज्ञानदान में तत्पर : महासती अमरकुंवर जी

ज्ञान ही सच्चा अमृत है, उसका छककर पान करने वाला ही सौभाग्यशाली है। वे क्षण धन्य हैं जो ज्ञान के आदान-प्रदान में व्यतीत होते हैं। ज्ञानरसिका स्वनाम धन्या, रत्नवंश की महान् साधिका महासती श्री अमरकुंवर जी एक ऐसी ही साध्वी रत्ना थी।

उनके जीवन का एक प्रसंग है। एक बार उनकी सहवर्तिनी साध्वियों ने मिलकर आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की सेवा में एक प्रेम भरा उपालम्भ दिया कि ये अमरकुंवरजी बहिनों को नया ज्ञान सिखाने में इतनी तन्मय हो जाती हैं कि ये भोजन तक को भुला देती हैं। आने वाली बहिनों को भोजन को छोड़कर पाठ देने में लग जाती हैं। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इन्हें भोजन पर बैठने के पश्चात् सीखने की इच्छुक किसी भी बहन को पाठ देने न उठे, यह नियम दिलवा दें।"

सतियों की बातें सुनकर आचार्य श्री के द्वारा इस प्रकार नियम करने हेतु निर्देश किए जाने पर विनम्र प्रत्युत्तर में महासतीजी का निम्न कथन कितना सुन्दर रहा होगा "गुरुदेव! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, पर क्या करूं मैं विवश हूँ, मन मानता ही नहीं कि कोई मुझसे आध्यात्मिक ज्ञान सीखने आए और मैं उन्हें ज्ञान-दान नहीं दूँ।"

कहाँ तो आज हम लोग, जो ज्ञान से जी चुराकर चलने वाले और कहां सरस्वती के भंडार को मुक्त हस्त से, उदार व प्रसन्न दिल से लुटाने वाली महासती श्री अमरकुंवर जी म.सा.। ज्ञानी साधक-साधिकाओं का सम्मान हर युग में होता रहा है।

स्वादविजेत्री श्री केशरकंवर जी

रसना इन्द्रिय सबसे प्रबल है। इसको वश में करने वाला सच्चा जितेन्द्रिय है। उपवास करना सहज है, पर पारणे के दिन स्वाद काफी कठिन है। पारणे में

गृहस्थ लोगों द्वारा नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों की तैयारियाँ सर्वविदित ही हैं।

पर कुछ एक साधक स्वाद विजयी होते हैं। इस प्रसंग में हम गर्व सहित महासतीजी श्री केशरकुंवर जी म.सा. का नामोल्लेख कर सकते हैं। अनेक तरह से जिह्वा को आकर्षित करने वाले सुस्वादु पारणे के योग्य प्रासुक पदार्थों के होने पर भी सूखी रोटी और छाछ जैसी अति साधारण सामग्री से पारणा करना आपकी एक अति दुर्लभ विशेषता थी। ऐसी कठोर साधना अन्यत्र प्रायः कम देखने को मिलती है। ये साध्वी और नहीं रत्नवंश के गौरव को उत्तुंग गिरि के शिखर पर पहुंचने वाली घोर तपस्विनी साध्वी श्री केशरदेवी जी म.सा. थी।

साधना के राजमार्ग में सन्त और सतियों ने ही अपने कदम नहीं बढ़ाये, बल्कि इस क्षेत्र में श्रावक-श्राविकाओं का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। एक साधक श्रावक और एक श्राविका की झांकी नमूनार्थ यहाँ प्रस्तुत है।

गौरवशाली सेठिया परिवार

आजकल इस कलिकाल में भी उत्कृष्ट श्रेणी के श्रावकों की कमी नहीं है। कई ज्ञानवीर, कई दानवीर और कई तपवीर श्रावक यहाँ उपलब्ध हैं। इन उदाहरणों में श्री भैरोंदान जी सेठिया का जीवन बहुत प्रशंसनीय रहा। आप बहुत बड़े दानी थे। आपने कठिनता से उपार्जित लक्ष्मी का समय-समय पर दान में सदुपयोग किया। दानवीर होने के साथ ही साथ आप ज्ञान के भी पूर्ण रसिक थे। हजारों, लाखों रुपये आपने ज्ञानवृद्धि में लगाए। चतुर्विध संघ के लाभार्थ आपने अपनी ज्ञानशाला में अनेक विषयों के विद्वानों को खोज-खोज कर बुलवाया। जिनके द्वारा आज तक बहुत से साधु-साध्वियों को संस्कृत, प्राकृत, न्याय, दर्शन, व्याकरण, छन्द आदि अनेक प्रकार के विषयों का ज्ञान सहज ही प्राप्त होता रहता है।

यद्यपि सेठिया साहब आज भौतिक पिंड से मौजूद नहीं है, तथापि गुणों की सौरभ से आज भी अनेक रूपों में जीवित हैं। आपका विशाल परिवार आज भी बीकानेर में सुप्रतिष्ठित है। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमल जी सेठिया भी अपने पिता की तरह ही बहुत बड़े ज्ञान रसिक हैं। साथ ही 'वरं विभवभूषा वितरणम्।'' इस पंक्ति का हमेशा ध्यान रखते हैं। दीन, दुःखी और गरीबों को देखकर आपका कोमल हृदय द्रवित हो उठता था। थोड़े शब्दों में कहा जाय तो इतना ही कहना पर्याप्त हो कि ''योग्य पिता की योग्य संतान होती है'' इस उक्ति को आप सोलह आने सत्य कर रहे थे। आपके परिवार से समाज को बड़ी आशाएँ एवं अपेक्षाएँ हैं।

आज के सद्गृहस्थ इनके जीवन से प्रेरणा लेकर और ज्ञान की गंगा-यमुना में गोते लगाते हुए अपने आपको पावन बनावें।

जीवन को ढ़ोना नहीं, जीना सीखें

श्री पदमचन्द गाँधी

प्रातः जगने से लेकर देर रात्रि सोने तक व्यक्ति किसी उधेड़बुन में दौड़ता रहता है। कभी-कभी तो सपनों में भी दौड़ लगाता रहता है। आज की भौतिकता की चकाचौंध में व्यक्ति भोगवादी संस्कृति की भोगलिप्सा के लिए अपने मस्तिष्क में चिन्ताओं का भार लादे हुए ढोता रहता है। वह सदैव चिन्ताओं, वेदनाओं तथा अभावों की पूर्ति इत्यादि से घिरा रहता है। वह हर वक्त स्वयं को इतना बन्धा हुआ महसूस करता है कि चैन की सांस के लिए भी तरस जाता है। वह अपने अन्तर्मन की घुटन में ही घुटता रहता है। वह चाहकर भी अपनी व्यथा किसी को नहीं बता पाता, क्योंकि या तो वह डरता है या उसकी बात कोई सुनने को तैयार नहीं। आज घर का वातावरण भी दूषित होता जा रहा है। वह जीना भूल गया है, ऐसा लगता है। उसके जीवन में कहीं विराम नहीं, कहीं संतोष नहीं, रोता हुआ पैदा होता है, हाय-हाय करता हुआ जीता है तथा कूड़-कूड़ कर मर जाता है। क्या यही जीवन है? जरा सोचें।

आज व्यक्ति आर्तध्यान और रौद्र-ध्यान की अग्नि में जल रहा है, क्योंकि वह जीवन को जीना नहीं जानता है, वह अनजान है, अज्ञानी है, धनाढ्य होकर भी कंगाल है, वह खुश नहीं है, संतुष्ट नहीं है। उसे यदि दुनियाभर की दौलत प्राप्त हो जाय या दुनिया का सर्वोच्च पद भी प्राप्त हो जाये, तब भी वह अशान्त ही रहेगा। वह सदैव अपना रोना रोता रहता है। स्वयं दुःखी रहता है तथा औरों को भी दुःखी करता है। इस सबका कारण है व्यक्ति को जीने की कला नहीं आती है। जीवन किस तरह जीना है, यह सीखना है। अन्तर्मन में झांकना है, देखना है कि हमारे दैनिक कार्यक्रम में तीर्थंकर वाणी को स्थान है या नहीं? परिवार, समाज व देश के लिए कुछ पल हैं या नहीं? यश, कीर्ति, धन-अर्जन करके जीना ही कला नहीं है। केवल 'पेट' एवं 'पेटी' के लिए जीना ही जीवन नहीं है। यह तो जीवन को ढ़ोना है।

जीना भी एक कला है, क्योंकि जीना उसे कहते हैं जिसमें व्यक्ति इस दुर्लभ मनुष्य भव में सच्चे आत्मसुख को प्राप्त कर सकें। सांसारिक सुख एकमात्र भ्रम है जिसमें मनुष्य उलझा रहता है। आज का मानव जीवन जीता नहीं, ढ़ोता है। वह अपने आपको भूल गया है। वह नाशवान सुखों में भटक कर शाश्वत सुखों को भूल गया है।

'जीना' वह है जो प्रेम एवं क्षमा का रस बरसाता हो, क्रोध के बदले में क्षमा का अमृत देता हो, अन्धकार के विरुद्ध प्रकाश फैलाता हो, ऐसे गुण ही जीवन को जीवन्त करते हैं। जीवन की कला सीखने के लिए हमें अपने आपको बदलना होगा,

हमारी सोच को सकारात्मक करना होगा।

व्यक्ति यदि दो अक्षरों को समझ ले तो यह समझो कि उसे खुशहाली का खजाना प्राप्त हो गया है। ये दो अक्षर हैं स+म = सम अर्थात् जहाँ सम की स्थिति हो, जहाँ समभाव हो, जहाँ पर किसी के प्रति राग न हो, द्वेष न हो, निन्दा के भाव नहीं हों तथा संतोष हो वहीं व्यक्ति सच्चे आनन्द को प्राप्त करता है। वह हर परिस्थिति में अपने जीवन को ऊँचा उठा सकता है। प्रशंसा एवं निन्दा के क्षणों में सम रह सकता है। समता की साधना जीवन को ढ़ोना नहीं, जीना सिखाती है। समभाव की साधना पर चरण बढ़ने पर व्यक्ति अपने आपको खुशहाल महसूस करता है। यही जीने की कला है।

-४०२, सहजानन्द पार्क
शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)

विकार भाव ही पतन है

श्री महावीर प्रसाद अजमेरा

जोधपुर शहर में महान मुनिराज आये थे। गांधी मैदान में प्रवचन हो रहा था। हजारों की संख्या में धर्मात्मा गृहस्थ प्रवचन सुन रहे थे। एक धर्मात्मा गृहस्थ मुनिराज के पास बैठा धर्मोपदेश सुन रहा था, उसे अपने आत्म-संयम पर बड़ा गौरव था। उसी समय मुनिराज के दर्शनार्थ कुछ महिलाएँ आई। वे महिलाएँ सोने- चाँदी के आभूषण एवं बढ़िया साड़ियाँ पहनी हुई अति सुन्दर लग रही थीं। वह धर्मात्मा जो मुनिराज के पास बैठा था, महिलाओं की ओर देखे बिना न रहा सका। पहली बार तो देखने पर मुनिराज कुछ नहीं बोले, किन्तु जब यह देखने का क्रम जारी रहा तो मुनिराज बोले- ''हे महानुभाव तुम प्रायश्चित्त लो।'' वह धर्मात्मा गृहस्थ बोला- ''गुरुवर, मेरा अपराध क्या है?'' मुनिराज बोले- ''ओह, अपराध करते हुए भी उसे अपराध नहीं समझते। महानुभाव! एक बार तो किसी की दृष्टि किसी ओर जा सकती है, परन्तु दुबारा तो किसी के विकारी नेत्र ही उठेंगे और आत्मा में विकार भाव आना पतन का श्री गणेश है।'' यह सुनकर वह धर्मात्मा गृहस्थ जिन्हें अपने संयम पर बड़ा अभिमान था, मुनिराज के सामने लज्जित होकर अपने दोनों हाथ जोड़ कर कहने लगे- ''गुरुवर आप जो प्रायश्चित्त देंगे मैं लूँगा।'' *-संवाददाता, जोधपुर (राज.)*

पराधीनता कैसे मिटे?

श्री एन.के.खींचा

यदि अनुभव करके देखें कि जो यह शरीर मिला है, जानने की शक्ति मिली है, बोलने की शक्ति मिली है, सोचने की शक्ति मिली है, काम करने की शक्ति मिली है, क्या उससे हमारा नित्य संबंध रहेगा? उत्तर मिलेगा- नहीं! तो आपको स्वयं अनुभव होगा कि एक दिन न बोलने की स्थिति आएगी। संयोग, वियोग में बदल जाएगा। प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। तब तादात्म्य तोड़ने में क्या कठिनाई है। तादात्म्य टूटता क्यों नहीं, इसके पीछे कारण है- हम अपने प्रति निर्ममता और निष्कामना को नहीं अपनाते।

पराधीनता में हम आबद्ध होते हैं अपनी भूल से। भूल हमारी अपनी उत्पन्न की हुई है। जाने हुए का आदर करने से निर्विकार हो सकते हैं, शांति मिल सकती है, स्वाधीन हो सकते हैं। जाने हुए का आदर करना और ममता, कामना का त्याग करना बिल्कुल एक ही बात है। आप यह जानेंगे कि मिला हुआ अपना नहीं है, मेरा नहीं है। सभी कामनाएँ कभी पूरी नहीं होती। जो पूरी नहीं होतीं उनके लिए क्यों आसक्त होना? क्यों दुःखी होना? अर्थात् मुझे कुछ नहीं चाहिए, मेरा कुछ नहीं है, ऐसा समझने पर शांति, स्वावलम्बन एवं स्वाधीनता आती है।

स्वाधीन जीवन वह है जिसमें अभाव और जड़ता की गंध नहीं है। उस स्वाधीनता को प्राप्त करने में प्रत्येक भाई एवं बहिन साधक एवं साधिका रूप में स्वाधीन है। स्वाधीनता तब प्राप्त होती है, जब पराधीनता सहन न हो। यानी कि सुख की दासता रहते हुए साधक पराधीनता में ही जीवन बुद्धि रखता है। दुःख का भय रहने से भी मुमुक्षु पराधीनता की ओर अग्रसर होता है। अतः दुःख का भय कैसे मिटे? जब सुख का प्रलोभन न रहे। जब हमारे-आपके मन की बात पूरी नहीं होती, तभी दुःख का अनुभव होता है। पराधनीता में जीवनबुद्धि स्वीकार करना ही दुःख है। सुख का प्रलोभन ही वास्तव में असाधन है। दुःख के भोग और दुःख के प्रभाव में बड़ा अन्तर है। दुःख का प्रभाव सुख में दुःख का दर्शन कराता है। दुःख का भोग सुख की दासता में आबद्ध करता है, व्यर्थ चिंतन में आबद्ध करता है। वस्तु, व्यक्ति, अवस्था एवं परिस्थिति का दास बनाता है। दुःख का भोग स्वाधीनता नहीं है, पराधीनता है।दुःख के प्रभाव से जागृति आती है। व्यक्ति स्वाधीनता की ओर बढ़ता है। सुख के सदुपयोग का मूल मंत्र है- 'उदारता' और दुःख के सदुपयोग का मूलमंत्र है त्याग। त्याग का अर्थ है अहम् और मम का नाश। उदारता का अर्थ है- करुणा और प्रसन्नता युक्त जीवन। अहम्-मम के नाश से भी निर्विकार-स्वाधीन जीवन की उपलब्धि होती है। *-उप निदेशक, स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर (राज.)*

रेस्टॉरेंट का अन्तः सच

नितिन सोनी

. शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों आहारों की व्यवस्था वाले होटल विज्ञापन तो इस बात का करते हैं कि उनके यहाँ शाकाहार की पृथक् व्यवस्था है, किन्तु उनकी कथनी और करनी का अंतर शाकाहारियों को कमोबेश मांसाहार भी कराता रहता है और वे इस भ्रम में बने रहते हैं कि वे जो खा रहे हैं वह शुद्ध शाकाहार है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि दोनों आहार वाले होटलों में शाकाहार की मर्यादा व्यावहारिक रूप से संभव ही नहीं है। लेखक ने इस लोक प्रचलित विश्वास को ध्वस्त करने का पूर्ण प्रयास किया है कि दोनों शैलियों के भोजन वाले स्थानों पर दोनों शैलियाँ एक-दूसरे से दूरी बनाए रखती हैं और शाकाहारी ग्राहक को शुद्ध शाकाहार मिलता है। निश्चित ही यह तथ्य ज्ञानवर्द्धक ही नहीं, आँखे खोलने वाला भी है।—सम्पादक

मैंने पिछले एक साल ऐसे रेस्टॉरेंट में प्रबंधन का कार्य संभाला, जहाँ पर शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों तरह का खाना बनता है। अपनी आंखों के सामने ऐसा प्रदूषित वातावरण देखना एक ऐसा पीड़ाजनक अनुभव है जिसे शब्दों में बयान करना बहुत ही कठिन है। मैं स्वयं अपने को दोषी मानता हूँ, ऐसे नारकीय वातावरण में कार्य करने के लिए। परन्तु कभी-कभी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ ऐसे काम करने को विवश कर देतीं हैं।

मुझे अपने इस अनुभव को आप तक पहुँचाना इसलिए जरूरी लगा क्योंकि वे लोग जो ऐसे रेस्टॉरेंट में खाना खाते हैं और सोचते हैं कि वे पूर्णतः शाकाहारी भोजन ही ग्रहण कर रहे हैं, तो वे पूर्णतः गलत हैं। आइए अब आपको एक ऐसे ही शाकाहारी + मांसाहारी रेस्टॉरेंट की रसोईघर यानी किचन की झलक दिखलाते हैं-

सर्वप्रथम तो परिचित करवाते हैं किचन की बनावट से जो सामान्यतः सभी रेस्टॉरेंट में तीन भागों में बँटी रहती है :-

तन्दूर सेक्शन
इण्डियन सेक्शन
चायनीज़् सेक्शन

तन्दूर सेक्शन

- यहाँ पर शाकाहारी व मांसाहारी यानी वेज एवं नानवेज तन्दूरी भोजन सामग्री तैयार होती है।
- तन्दूरी रोटी के साथ नान का आटा भी लगाया जाता है, जिसमें खमीर उठाने के लिए और नरम व सुस्वादु बनाने के लिए अंडे का इस्तेमाल किया जाता है।

- जो टेबल तंदूर उस्ताद के पास होती है वो एक ही होती है जिस पर रोटी का आटा व नानवेज के सारे आयटम एक साथ रखे रहते हैं।
- जब तंदूरी मुर्गा या अन्य मांसाहारी तन्दूरी आइटम बनाना होता है तो पहले उस पर मक्खन व तेल का मिश्रण लगाया जाता है। इसके लिए एक डब्बे में तेल व मक्खन का मिश्रण भरा होता है तथा एक लकड़ी पर कपड़ा बांधकर मिश्रण में डाल देते हैं, जिसके द्वारा वह मिश्रण तन्दूरी मुर्गे पर लगाया जाता है तथा उसी लकड़ी व उसी मिश्रण का शाकाहारी लोगों की रोटी/नान पर भी उपयोग किया जाता है।
- किसी भी तन्दूरी डिश जैसे पनीर टिक्का, पनीर पुदीना टिक्का, वेज सीक कबाब को तैयार करने के लिए पहले टिक्का व कबाब बनाये जाते हैं, जिन्हें लोहे की सलाखों में लगाकर तन्दूर में डाला जाता है। यहाँ ध्यान देने योग्य यह है कि इन्हीं तन्दूर की सलाखों का उपयोग मांसाहारी व्यंजन जैसे तन्दूरी मुर्गा, चिकन टिक्का, तन्दूरी फिश इत्यादि के लिए भी किया जाता है तथा चाहे आर्डर वेज का हो या नानवेज का इन सलाखों को कभी धोया भी नहीं जाता है।
- इन सिके हुये, मक्खन लगे तन्दूरी व्यंजन पर मसाला लगाया जाता है, जो एक बड़े बर्तन में रखा होता है तथा इसी में चाहे शाकाहारी हो या मांसाहारी व्यंजन, दोनों को लपेट-लपेट का मसाला लगाया जाता है।

इण्डियन सेक्शन

- यह रसोई का वह हिस्सा है जहाँ पर सभी सब्जियाँ व दालें बनती हैं। यहाँ पर एक- दो भट्टियाँ व दो टेबलें पास-पास रखी होती हैं।
- टेबल पर सारा कच्चा माल जैसे मावा, पनीर, दूध, दही, क्रीम रखा होता है। उसी टेबल पर मांसाहारी खाने की कच्ची सामग्री जैसे अंडे, मछली, चिकन रखा होता है।
- भट्टी के पास ही सारे मसाले रखे होते हैं। अब यदि कोई भी आर्डर आता है, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी कुक (रसोईया) उसको बनाते समय एक ही फ्रायपान व चम्मच का इस्तेमाल करता है। जैसे उदाहरण के लिये बटर चिकन का आर्डर है तो कुक पहले अपनी बड़ी चम्मच से फ्रायपान में घी डालेगा, फिर फ्रायपान में चिकन डालकर उसी चम्मच से हिलाएगा फिर उसी चम्मच से क्रीम, काजूपेस्ट या कोई भी मसाले जो लेने हैं, लेता है, फिर बनी ग्रेवी जो हर सब्जी या नानवेज के लिये इकट्ठी बनती है उसी चम्मच से लेता

है। बटर चिकन बनने के बाद फ्रायपान तो धुलता है, पर चम्मच वहीं पास रखे पानी भरे तपेलों में डाल देते हैं। किसी दाल को पतला करना हो या ग्रेवी में पानी मिलाना हो तो इसी तपेले का पानी मिलाया जाता है जिसमें हर तरह की वेज-नानवेज लगी चम्मच डालते हैं।

चायनीज सेक्शन

☛ चायनीज बनाने के लिए भी मुख्यतः दो भट्टियाँ लगी होती हैं एवं साइड टेबल कच्चा माल रखने के लिये होती है।

☛ यदि आप स्प्रिंग रोल खा रहे हैं तो उसको चिपकाने के लिए अण्डे की जर्दी का उपयोग होता है।

☛ चिली पनीर के घोल व मंचुरियन के पकोड़ों में भी अण्डे का इस्तेमाल होता है।

☛ सूप में व कोई भी ग्रेवी की चीज बनाने में जो पानी इस्तेमाल होता है वह चिकन स्टाक होता है। (चिकन को उबालकर उसका जो पानी बचता है उसे चिकन स्टाक कहते हैं)

☛ तलने के लिए एक ही कढ़ाई होती है, जिसमें शाकाहार जैसे पापड़, चिप्स व मांसाहार जैसे मछली, चिकन दोनों ही तले जाते हैं।

सब्जी काटने के लिए लकड़ी की पटियों को काम में लाया जाता है। उन्हीं पाटियों पर रखकर जो चाकू सब्जी काटने के काम में आते हैं उन्हीं से मटर-चिकन काटा जाता है तथा इन चाकुओं व पटियों को कभी धोया भी नहीं जाता है।

❁ डीप फ्रीज जो प्रिजर्वेशन के लिए होता है उसमें वेज-नानवेज दोनों रखे जाते हैं।

❁ तंदूरी पर उस्ताद जिन हाथों से चिकन काटते हैं, रोटी का आर्डर आने पर बिन हाथ धोए, रोटी भी बना देते हैं।

❁ स्टील की एक बड़ी टेबल जिस पर कटा हुआ चिकन, मटन रखते हैं उसी वक्त आने पर चावल भी बनाकर ठंडा करने के लिए फैलाये जाते हैं, जिसमें कई बार खून व मांस भी मिल जाता है।

❁ फ्रूट सलाद जिसका नानवेज से कोई संबंध नहीं होना चाहिए, उसे भी टेस्टी बनाने के लिए अंडा फेंटकर मिलाते हैं।

❁ रविवार या छुट्टी के दिनों में या पार्टी होने पर जब भीड़ अत्यधिक होती है तब किचन की सफाई, स्वच्छता पर ध्यान न देते हुए ग्राहक के आर्डर समय पर लगाने पर ध्यान होता है। ऐसे समय में किचन को देखना नरक की

अनुभूति करने के समान है, क्योंकि हर स्थान पर नानवेज के अवशेष भरे पड़े रहते हैं। ऐसे समय कई बार ग्राहकों को गलतफहमी में वेज की जगह नानवेज डिश भी लग जाती है।

❀ पानी की शुद्धता भी प्रमाणित नहीं होती है, क्योंकि वह टंकियों में एकत्रित होता है जिसकी साफ-सफाई महीनों से नहीं होती है।

स्टाफ के सदस्यों के अनुभव के आधार पर यह निष्कर्ष सामने आता है कि चाहे छोटा सा रेस्टॉरेंट हो या बड़ा होटल, यदि वेज-नानवेज साथ-साथ बनता है तो वहाँ इसी प्रकार कार्य होता है।

देखा जाए तो गलत वे लोग नहीं हैं जो ऐसे प्रतिष्ठानों के मालिक हैं या उनमें कार्यरत हैं, क्योंकि वे लोग अधिकांशतः मांसाहारी ही होते हैं, इसलिए उन सबके लिए एक पूर्ण शाकाहारी की भावना समझना कठिन कार्य है।

साथ ही किचन-स्टाफ का कहना है कि बगैर अण्डा या चिकन स्टाक मिलाए कोई व्यंजन बनाते हैं तो ग्राहक को वह स्वाद ही नहीं आता जिसकी आदत उसे वर्षों से पड़ी हुई है।

अंत में मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि यह लेख केवल उन लोगों की जानकारी के लिए है जो कि अज्ञानतावश ऐसे रेस्टॉरेंट में खाना खाते हैं और उन लोगों के लिए भी जो कुछ सच्चाई जानते तो हैं, पर हाई सोसायटी व पाश्चात्यता का नकाब ओढ़ने के कारण यह सब अनदेखा कर देते हैं। यदि इस लेख को पढ़कर एक भी पाठक ऐसे रेस्टॉरेंट (जहाँ शाकाहार एवं मांसाहार दोनों मिलते है) में भोजन करना बंद कर देता है तो मेरा लेख लिखने का उद्देश्य सफल हो जाएगा।

-१०२, पार्क रेसीडेन्सी, २/४, रेसकोर्स रोड़, इन्दौर (म.प्र.)

प्रभु स्मरण

पी. मन्जू कोठारी

हमारा जन्म इसलिये नहीं हुआ कि हम इस संसार में इधर-उधर किसी पतंगे की तरह झटके खायें, बल्कि इसलिये हुआ है कि उसे जगत की सेवा में लगायें, आत्मा को प्रभु-स्मरण में रचा बसा लें और बुद्धि को उसका स्वरूप जानने दें, तो निश्चय ही हम उस परमात्म स्वरूप के निकट जा सकेंगे, जहाँ अनन्त-अनन्त सुख होगा।

-शेनाय नगर, चेन्नई-30

रेशम नहीं, एरी रेशम

श्री गजमल लोढ़ा

जीवों पर अत्याचार कर बनाए जाने वाले उत्पादों के स्थान पर अहिंसक तरीके से बनाई गई चीजें जब मौजूद हैं तो संवेदनशील व्यक्ति अहिंसक चीजों को ही पसंद करेंगे।

बहुत कम लोगों को पता होगा कि रेशम की एक साड़ी तैयार करने के लिए ५०००० रेशम के पतंगों के कोयों की जरूरत होती है। यह कल्पना करने से ही सिहरन होती है कि रेशमी साड़ी के रूप में हम किसी एक की नहीं, बल्कि ५०००० जीवों की हत्या कर बने धागों से बुने वस्त्र को पहनते हैं।

रेशमी वस्त्रों की बहुत प्रतिष्ठा है। विशेष रूप से शुभ अवसरों पर उन्हें पहना जाता है, भले ही गर्मी ४० डिग्री से भी ऊपर हो। इसी बात को ध्यान में रखते हुए श्रीमती मेनका गांधी ने विकल्प की तलाश की। वह विकल्प 'एरी रेशम' के रूप में उन्हें मिल गया। उसके उत्पादन में निरीह जीवों की हत्या नहीं की जाती।

जीवों के प्रति दया का भाव रखने वाले लोग अहिंसक रेशम तैयार करने में जुटे हैं ताकि उसे पर्याप्त मात्रा में बाजार के लिए वित्तीय दृष्टि से सक्षम तरीके से बनाया जा सके। गुजरात और असम में बहुत से लोग कैस्टर पौधे की खेती करते हैं। कैस्टर के पौधे पर पलने वाले रेशम के कीड़ों को रेशम निकालने के लिये मारा नहीं जाता। अहिंसक रेशम में उन कोयों का इस्तेमाल होता है जिनसे सुंडियां विकसित होकर बाहर उड़ जाती हैं। यह प्रक्रिया निश्चय ही कहीं अधिक श्रमसाध्य है और रेशम के लिए ज्यादा संख्या में कोयों की आवश्यकता होती है। इसलिये अहिंसक रेशम अन्य रेशम के मुकाबले ज्यादा महंगा है। लेकिन देखने और पहनने में बिल्कुल वैसा ही रहता है। जो किसी जीव की जिन्दगी का मूल्य समझते हैं, उनके लिए पैसा उससे ज्यादा महत्त्व नहीं रखता।

अतः जिनवाणी के पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि एरी रेशम का प्रयोग करें व हिंसक रेशम का बहिष्कार करें। जितनी ज्यादा एरी रेशम की मांग बढ़ेगी उत्पादन स्वतः बढ़ने लगेगा और एक समय एरी रेशम भी हिंसक रेशम की कीमत पर प्राप्त होने लग जायेगा। ऐसा मेरा विश्वास है। (राजस्थान पत्रिका 25.9.2002 में प्रकाशित श्रीमती मेनका गांधी के लेख 'रेशम : जीवों की हत्या से बना धागा' पर आधारित)

-१४/७८, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)

समता एवं समरसता का संचार

श्री भीखमचन्द बाफणा

दूध में थोड़ी शक्कर मिलती है तो वह अपना अस्तित्व खोकर दूध के साथ घुलमिल जाती है। वहीं रेत का कण जैसे का तैसा ही रहता है और साथ में दूध की उपयोगिता को भी बिगाड़ देता है। वैसे ही जिनवाणी यदि मानव के स्वभाव व आचरण में मिल जाती है तो जीवन निखर जाता है। लेकिन भौतिकता के आकर्षण, अर्थ की अंधी दौड़, विलासिता के पोषण और नित के वैज्ञानिक अनुसंधानों ने मानव के जीवन को प्रदूषित कर दिया है। उसने आत्मगुणों को आच्छादित कर दिया, ढक दिया, आवरण डाल दिया है। मिथ्यात्व-अन्धश्रद्धा-भौतिकवाद का साम्राज्य छा गया है। मान-प्रतिष्ठा, अहं, यश-कीर्ति-वाहवाही-सम्मान-पद की असीम लालसा ने मानव की सुख-शान्ति-आनन्द को छीन लिया है। प्रेम, एकता, अपनत्व व संगठन को दिखाऊ और खोखला बना दिया है। लज्जापूर्ण दयनीय स्थिति पैदा हो गई है। खींचतान-तनाव, असामञ्जस्य-वैमनस्य-समस्याओं-उलझनों में नित्य उलझकर स्वयं दुःखी हो रहा है। समाज पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। भावी पीढ़ी धर्म से विमुख हो, कोस रही है। चिन्ता की स्थिति है।

स्थानकवासी समाज को सजगतापूर्वक चिन्तन की आवश्यकता है। यहाँ पर कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं-

१. दूसरों के नहीं हर कोई अपने स्वयं के जीवन में रहे दोषों को देख उसे दूर करने का प्रयास करे। पर-दोष दर्शन और दोषारोपण को छोड़ कर स्वदोष दर्शन और स्व के जीवन को शुद्ध बनाने की कोशिश करे।

२. तत्त्वों के स्वरूप को समझे। स्वाध्याय की रुचि जागृत कर आगम जो आज सरल हिन्दी भाषा में अनूदित एवं उपलब्ध हैं उनका अध्ययन करे। तीर्थंकर केवलज्ञानी महाप्रभु ने हमें क्या मार्गदर्शन दिया है, जीवन जीने की अनमोल कला क्या बताई है, देव-गुरु, धर्म का क्या स्वरूप बताया है, उसे निर्मल भावना, एकाग्रचित्त एवं ज्ञानदृष्टि से समझने का पुरुषार्थ करे।

३. भौतिक, चकाचौंध, अनुसंधान द्वारा इन्द्रिय-पोषण के साधन से जीवन कितना परावलम्बी, संस्कार-विहीन, अशांति-अचैन देने वाला बना है, उसकी वास्तविकता को निष्पक्षता से समझने की कोशिश करे।

४. धर्म रहित धन ने हमारे जीवन को किस दिशा में धकेला है, को बड़ी शान्ति गंभीरता के साथ सोचें। पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, यशकीर्ति की लालसा क्यों बढ़ी? गहराई से सोचें।

५. जिनवाणी के स्वरूप को जैसे आत्मार्थी अनगारों ने आगम के अनुसार बताया

उस तरह वास्तव में हरेक ने समझा क्या? अथवा आडम्बर दिखावे, वाह-वाही, यश-कीर्ति, मान-सम्मान को ही धर्म समझा? इसकी अन्तरमन से समीक्षा करें।

६. सम्प्रदायवाद को प्रमुखता देकर हमने तेरे मेरे के तनाव, वाद-विवाद, ईर्ष्या, राग-द्वेष की प्रवृत्तियों को तो नहीं बढ़ाया है, इसकी समीक्षा करें। जिनवाणी का आदर कर स्वयं का जीवन जिनवाणीमय बनाने, संघ का संगठन बनाने का प्रयास करें।

प्रभु ने सभी श्रावकों के लिये आचरण करने योग्य १२ व्रत बताये हैं और संसार का त्याग कर संयम की आराधना करने वाले अनगार साधु-संतों के लिये पाँच महाव्रत बताये हैं। *किसी सम्प्रदाय के साधु या श्रावकों के लिये अलग और दूसरी सम्प्रदाय के लिये अलग, ऐसा नहीं है, फिर आपस में इतनी दूरी, तनाव, वाद-विवाद, समस्याएँ, उलझन, तेरा-मेरा क्यों? इसके मूल कारण को निर्मल भावना और निष्पक्षता से समझें। सरलता के साथ जिनवाणी समझने, उसके अनुसार आचरण में भूल छद्मस्थता के कारण हुई हो, तो सहर्ष एवं सहजता के साथ स्वीकार करें, उन्हें दूर करें, उसमें शर्म और हिचकिचाहट का अनुभव न करें। ऐसा करने से स्वयं की आत्मा हल्की होगी, निर्मल विशुद्ध बनेगी।*

यदि *ऐसे सरलभाव अभी तक जागृत न हुए हों तो कम से कम ऐसी हरकतें तो न करें जिससे परस्पर राग-द्वेष बढ़े, ईर्ष्या-प्रतिस्पर्धा की भावना पनपे, कलह-कषाय खुले प्रांगण में निधड़क होकर नाचे।* जीवन में जैनत्व के प्रति नाज हो। तीर्थंकर केवलज्ञानियों का धर्म मिला है, उनका दिल में गौरव हो। परस्पर का व्यवहार एक दूसरे के प्रति कटु, अशोभनीय, निन्दनीय तो न हो। जैन कुल में जन्मे हैं, अतः आचरण में जैनत्व एवं उसकी झलक हो। प्रेम, वात्सल्य एवं अपनत्व का व्यवहार हो।

इतने विशाल परिवार में सबके विचार और सबका आचरण एक जैसा ही हो, ऐसा सम्भव नहीं। लेकिन सब के दिल में मिलकर, संगठित होकर एक दूसरे के पूरक होकर चलने के उच्च विचार और भावना हो। परस्पर वार्तालाप द्वारा सत्य को, वास्तविकता को समझकर चलने के भाव हों। बड़ों की आज्ञा के पालन के प्रति श्रद्धा हो। अनुशासन आनन्द देने वाला है, ऐसे दृढ़ विश्वास के साथ समर्पण भाव हो तो दूषित निन्दनीय वातावरण पनप ही नहीं सकता। स्थान पा नहीं सकता।

-चेन्नई

सूचना

जिनवाणी पत्रिका के लिए रचनात्मक, मार्गदर्शक, आध्यात्मिक और नैतिक स्वरचित निबंध, कविताएँ, कथाएँ और संस्मरण आमंत्रित हैं। रचनाएँ पृष्ठ के एक ओर स्पष्ट अक्षरों में लिखित अथवा टंकित होनी चाहिए। *-सम्पादक*

चिन्तन को सकारात्मक बनाएँ

श्रीमती पिंकी जैन

मनुष्य के चिंतन का उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। चिन्तन मनुष्य के कर्म एवं भविष्य का लक्ष्य निर्धारित करने में अहम् भूमिका निभाता है।

चिन्तन अर्थात् विचार (सोच) दो प्रकार के हैं- सकारात्मक एवं नकारात्मक। सोचना एक कला है। इस कला को जो जान लेता है वह कठिनाइयों में भी सफलता हासिल कर लेता है। सकारात्मक सोच हमेशा लाभदायक सिद्ध होती है। सफल व्यक्ति ही परिस्थितियों को सकारात्मक(पोजेटिव) स्वरूप देते हैं। जिससे स्वयं तो सफल होते ही हैं, साथ में समाज को भी नयी दिशा देने में सहायक सिद्ध होते हैं। इसके विपरीत नकारात्मक दृष्टि का परिणाम है- अपने आपको कायरता व निराशा के भंवर में फँसाना अर्थात् जीवन में असफलता का हाथ थामना। नकारात्मक चिन्तन के द्वारा हम अपनी योग्यता को भूल कर गरीबी, दीनता, कायरता और बीमारी को बुलावा देते हैं। इस स्थिति में व्यक्ति समय पर उचित निर्णय नहीं कर पाता, नतीजन लाभ की स्थिति भी हानि में बदल जाती है। हमारे अंदर साहस की कमी आ जाती है। नकारात्मक सोच के परिणामस्वरूप कई बार ऐसा भी होता है कि लाइलाज बीमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। हाई ब्लेड प्रेशर, लकवा, हार्ट अटैक, डाइबिटिज आदि इसी के परिणाम हैं।

मनुष्य की अजीब प्रवृत्ति है। अच्छा काम करने वाला जल्दी निराश हो जाता है और बुरा काम करने वाला निराश नहीं होता, अर्थात् जितनी गहरी आस्था बुराई में होती है उतनी अच्छाई में नहीं होती है। अच्छाई में उतनी आस्था पैदा करने के लिए सकारात्मक सोच जरूरी है। सकारात्मक चिन्तन से रचनात्मक और उत्पादकता की ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है। फिर ऐसा व्यक्ति कभी निरुत्साही नहीं होता। यदि उसकी उन्नति का एक मार्ग बन्द हो जाता है तो दूसरा मार्ग स्वयं के ही पुरुषार्थ से खोल लेता है तथा साहस व विश्वास के साथ कर्म क्षेत्र में उतरता है, जिससे सफलता उसके चरण चूमती है, जबकि नकारात्मक सोच से भय, मानसिक अशान्ति, तनाव, निराशा, कुण्ठा तथा कर्त्तव्य से पलायनता आदि विचार मन में जगह बना लेते हैं।

मनुष्य के विचार उसके व्यक्तित्व का दर्पण होते हैं। जैसे विचार वह मन में रखता है वैसे ही भाव उसके चेहरे पर उभर आते हैं। अशुभ विचार वाले या नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति रोगी व भोगी बनते हैं, और सकारात्मक चिन्तन वाले स्वस्थ, उल्लसित एवं आध्यात्मिक विचारों से परिपूर्ण रहते हैं। वे सदा युवा रहकर

जीवन को सुखमय तरीके से जीते हैं। जीवन की सफलता का महत्त्वपूर्ण पहलू सकारात्मक सोच में निहित है। इस तरह के भाव संतुलित विचार वाले व्यक्ति में आते हैं। जिसके मन में एकाग्रता एवं चित्त में निर्मलता होती है वह ही शुभ भावों को चिन्तन में ला सकता है। अतः अपने विचारों में शुद्धता लाने के लिए दृढ़ता की आवश्यकता है तथा दुर्विचार को दूर करना ही चिन्तन का मुख्य रूप होना चाहिए।

आदर्श विचार आत्मा की शुद्धि में भी सहायक सिद्ध होते हैं। उससे मन में उत्साह की तरंग रहती है, साधना में सफलता हासिल होकर रहती है।

-पत्नी श्री अनिल जैन, जैन विद्या संस्थान
श्री महावीरजी (करौली)

मित्रता : एक अमूल्य रत्न

श्री संदीप नाथ मोदी

मित्रता दो या दो से अधिक व्यक्तियों की सम अनुभूति, विचार व दृष्टिकोण का समन्वय है। मित्रता में अपनत्व की भावना व पराकाष्ठा होती है। यह दृढ़ विश्वास एवं स्नेह द्वारा सिंचित होती हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में सच्ची मित्रता के अनेक उदाहरण हैं। राम व सुग्रीव तथा कृष्ण व सुदामा की मित्रता सर्वविदित है। यह सृष्टि अमूल्य रत्नों का खजाना है। इन रत्नों में अत्यन्त मूल्यवान सहेज कर रखने योग्य रत्न है-मित्रता। सच्ची मित्रता के लक्षण बताते हुए कवि भर्तृहरि ने कहा है- "जो मित्र को निरन्तर भलाई की ओर अग्रसर करता है, मित्र के दोषों को निःस्वार्थ भाव से दूर करता है, गुणों का विकास करता है, उसे दुःखों में छोड़कर नहीं जाता तथा समय आने पर उसकी सहायता करता है, वही सच्चा मित्र है। दृढ़ मित्रता को निभाने वाले ऐसे व्यक्ति के गुणों में स्वतः वृद्धि होती रहती है।

मित्रता निभाने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए :-

1. मित्रों की आवश्यकताओं और रुचियों को समझें एवं उनकी समस्याओं पर तहे दिल से विचार करें।
2. मित्रों के दुःख-सुख के सच्चे भागीदार बनें तथा अपनत्व एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करें।
3. मित्रों की उन्नति और सफलताओं पर बधाई देने व शुभकामनाएँ प्राप्त होने पर धन्यवाद देने में कंजूसी न करें।
4. मित्रों से सद्गुण लें एवं व्यावहारिकता का पाठ सीखें।
5. मित्रता में सच्ची दिलचस्पी लीजिए, सदैव मुस्कराते रहिए, सबके प्रति समभाव रखिए। यही जीवन्तता का परिचायक है।
6. अच्छे श्रोता और वक्ता बनिए। वाग्भूषण ही सबसे कीमती आभूषण हैं।

-११/६८३, चौ.हा.बोर्ड, जोधपुर (राज.)

शालिभद्रजी

श्रेणिक बिम्बसार मगध देश के राजा थे। उनकी नगरी राजगृही में गोवर्धन नाम के एक बड़े सेठ रहते थे। शालिभद्र जी उन्हीं के प्रिय पुत्र थे। उनके पास अपार धन था। एक दिन की बात है कि कुछ रत्न कम्बलों के व्यापारी राजगृही में आये। वे सब से पहले श्रेणिक राजा के पास पहुँचे। राजा ने रानियों के पास कम्बलें भेजी। रानियों ने उन्हें बहुत पसन्द किया। लेकिन एक कम्बल की कीमत ही सवा लाख मोहरें थी। केवल एक या दो कम्बल खरीदने से ही काम नहीं चलता था। अतः व्यापारियों को निराश हो लौट जाना पड़ा।

प्रातःकाल जब वे राजगृही से जाने लगे, तब शालिभद्र की कुछ दासियों ने जो पनघट से पानी भरकर आ रही थी, उन्हें देखा। व्यापारी उदास थे। उन्होंने उनकी उदासीनता का कारण पूछा। उनमें से एक व्यापारी ने तनकर जवाब दिया- "तुम्हें क्या काम है इससे? चलो तुम अपना काम करो।" इस पर एक दासी ने उनसे कहा- "आप गरम क्यों होते हो? व्यापारी को तो बड़ा सरल होना चाहिये।" यह बात बूढ़े व्यापारी को चुभ गई। उसने कहा- "बहिन हम रत्न-कम्बलों के व्यापारी हैं। श्रेणिक राजा का नाम सुनकर यहाँ आये थे। लेकिन राजा ने एक कम्बल तक नहीं खरीदा। अतः निराश हो वापिस जाना पड़ रहा है। यही कारण हमारी उदासी का है।"

"बस यही बात है, चलो हमारे सेठजी से भी मिल लो। वे तुम्हें ऐसे ही नहीं लौटने देंगे। वहाँ जो कोई भी आता है, खाली हाथ नहीं जाता है।" व्यापारी तो चाहते ही यही थे। वे तुरन्त उनके साथ हो गये।

सेठजी के घर में प्रवेश करते ही व्यापारियों की आँखें चकराने लगी। चारों तरफ दीवारों पर हीरे-पन्ने जड़े हुए थे। महल क्या था, मानों देवपुरी ही दुनिया में थी। दासियों ने शालिभद्र की माता भद्रा से व्यापारियों का परिचय कराया। भद्रा ने व्यापारियों से कहा- "कम्बल कितने हैं?" व्यापारियों ने उत्तर दिया- "सोलह, और एक-एक की कीमत है, सवा लाख स्वर्ण मोहरें।"

"मैं कीमत नहीं पूछती हूँ। मुझे तो ऐसे ३२ कम्बलों की आवश्यकता थी। खैर! मुनीमजी, इनको बीस लाख मोहरें देकर कम्बल ले लो।"

भद्रा की उदारता और अकूट सम्पत्ति देख कर व्यापारी उनकी प्रशंसा करते हुए वहाँ से विदा हुए।

माता भद्रा ने एक-एक कम्बल के दो-दो टुकड़े कर अपनी ३२ ही वधुओं को बाँट दिये। बहुओं ने एक दिन ओढ़कर दूसरे दिन अपना-अपना शरीर पोंछ कर महल के पीछे फेंक दिया। मेहतरानी महल साफ करने आई। उसने उन कम्बलों को

उठा लिया और अपने घर ले गई। वही मेहतरानी राजमहल में भी झाडू लगाती थी। एक दिन वह रत्न कम्बल ओढ़कर राजमहल में झाडू लगा रही थी। इतने में रानियों ने उसे देख लिया। रानियों ने उसे पास बुलाकर पूछा-"तुमको यह कम्बल कैसे मिला?" मेहतरानी ने सारा हाल कह सुनाया। रानियों ने राजा से यह बात कही और शालिभद्र की सम्पत्ति की सराहना की। राजा ने शालिभद्र से मिलने की ठानी। उसने एक दिन उनको अपने महलों में बुलाया, लेकिन भद्रा ने कहलाया कि मेरा पुत्र किसी से मिलता-जुलता नहीं है। अगर राजा चाहें तो मैं उपस्थित हो सकती हूँ। तब राजा स्वयं शालिभद्र से मिलने के लिये आये। भद्रा ने उनका बड़ा मान-सम्मान किया। महल को देखकर राजा चकित हो गये।

राजा को रत्न जड़ित सिंहासन पर बैठाकर भद्रा ने अपने पुत्र को नीचे बुलाया। शालिभद्र ने जवाब में कहा- "माँ, यदि श्रेणिक नाम की कोई चीज आई है, तो आप उसे खरीद लें। मैं कुछ समझता नहीं हूँ।"

माता ने कहा- "नहीं बेटा, श्रेणिक कोई खरीदने की चीज नहीं है। यह तो अपने राजा हैं। जरा नीचे आकर मिल तो लो।"

शालिभद्र नीचे आये। राजा ने उनका सिर चूमा और अपनी गोद में बैठा लिया। कुछ देर बातचीत कर शालिभद्र पुनः ऊपर चले गये। लेकिन यह बात उनके हृदय में कांटे की तरह चुभ गई कि अब भी मेरा कोई राजा है? अब तो मुझे ऐसा काम करना चाहिये कि जिससे मेरा कोई राजा ही नहीं रहे। इन्हीं विचारों ने शालिभद्र के हृदय में वैराग्य का अंकुर पैदा कर दिया। जब उन्होंने भगवान् महावीर का उपदेश सुना तो उनकी यह भावना और अधिक प्रबल हो गई। फिर क्या था? अपनी अटूट सम्पत्ति को ठोकर मारकर वे धन्नाजी के साथ साधु बन गये और संयम पालन करते हुए मोक्ष मार्ग के पथिक बने।

विचार-कण

श्रीमती मदनदेवी बुरड़

- संपत्ति बढ़ते ही घर में फालतू अनावश्यक अटाला(विपत्ति)आना शुरू हो जाता है।
- सूर्य रश्मियां कागज को जला देती हैं, परन्तु कब? एकत्र होने के बाद। मन के शुभ अध्यवसाय कर्मों को जला देते हैं। कब? एकाग्र होने के बाद।
- समाधि पसंद है, पंडितमरण पसंद है तो अभी से ही आरंभ-परिग्रह कम करते जाइये।
- पदार्थ मिले तो तृप्त होने नहीं देते, नहीं मिले तो दीन बनाये बिना नहीं रहते।
- योगत्रय में मनोयोग प्रथम है। जिसका मनोयोग स्थिर नहीं उसे समाधि प्राप्त हो सकती नहीं।

- भीलवाड़ा

साधना

श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास'

प्राप्त जय आहार, आसन और निद्रा पर करो,
जिनदेव के मत के यही अनुकूल है, मन में धरो।
गुरुदेव के प्रसाद से फिर ज्ञान पावन पाइये,
आत्मा का ध्यान तद् अनुसार करना चाहिये।।

संसार जीवों के सदा सम्पूर्ण ज्ञान-प्रकाश से,
उनके तथा अज्ञान एवं मोह तम के नाश से।
राग एवं द्वेष का भी क्षय वे कर देते यदा,
मोक्ष का एकान्त सुख हो प्राप्त उनको सर्वदा।।

गुरु तथापि वृद्धजन सेवा प्रथम सत्कार्य है,
अज्ञ जन सम्पर्क का परित्याग भी अनिवार्य है।
करना सदा स्वाध्याय अरु एकान्त रहना जानिये,
सूत्रार्थ चिन्तन धैर्य मिलकर मार्ग सुखप्रद मानिये।।

श्रमण तप धारी जिसे होवे समाधि कामना,
अल्प भिक्षाहार की रखे हृदय में भावना।
तत्त्व ज्ञाता पुरुष संग के भाव भी मन में धरे,
योग्य चिन्तन के सदा स्थलवास की इच्छा करे।।

हित आहारी मित आहारी अल्प आहारी तथा,
इस भांति आचरण है जिन मानवों का सर्वथा।
वैद्य का इलाज आवश्यक न उन्हें होता कभी,
वे स्वयं के स्वयं ही बनते चिकित्सक हैं सभी।।

रस पदार्थों का अधिक सेवन न वांछित मानिये,
प्रायः उन्हें उन्मादवर्धक भव्य मानव! जानिये।
उन्माद से आविष्ट नर यों काम पीड़ा को गहे,
ज्यों मधुर फल युक्त तरु को छेदता पक्षी रहे।।

नारी रहित शय्या से जीवन को नियन्त्रित कर सदा,
दमन करते इन्द्रियों का अल्प भोजन से तदा।
वे पराजित न कभी हों राग-द्वेष विकार से,
रोग देता कष्ट न ज्यों औषधि उपचार से।।

वृद्ध अवस्था जिस समय तक मनुज न धारण करे।
व्याधियां बढ़ कर तथा निर्बल न मानव तन करे।
इन्द्रियाँ जब तक शिथिल होती नहीं संसार में,
धर्मपालन कीजिये तब तक सकल आचार में।।

-१२ सी डी, आजम बाग, लखनऊ (उ.प्र.)

मौत के क्षण और जीवन का सच

श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरड़िया

जीवन भी अजीबोगरीब है। कभी-कभी नये अनुभवों से गुजरना होता है। कभी कुछ सीखते हैं, कुछ समझते हैं। कभी अदृश्य व अनजान रहस्य की परतें खुलती रहती हैं।

दिनांक ६-६-२००२ को अचानक, अस्वस्थ, हॉस्पिटल में भर्ती। धड़कन बन्द। रिश्तेदार परिवार के सदस्य शुभचिन्तक हालत देखकर आशंका से एकत्रित हो गये। बस अखबारों में फोटो छपने ही वाली थी कि शरीर में हलचल हुई। डाक्टरों और परिवार वालों को राहत मिली।

"जिन्दगी और मौत के बीच एक क्षीण रेखा है।
कब क्या कहाँ हो जाय, किसने देखा है।।"

परन्तु बडेरों की पुण्याई कहो या गुरुदेव का शुभ आर्शीवाद कहो, देवताओं की कृपा समझो या मंत्र जाप का प्रभाव समझो या दिल की गहराई से की गई दुआ का असर समझो, मांग की सिन्दूर का दीर्घकालीन योग समझो, सौभाग्य का प्रतीक बिन्दी का चमत्कार, चाहे कुछ भी समझो। पुनः जीवन-दान मिला।

शुभचिन्तक कुशल क्षेम पूछते रहे और हृदय से शुभ-शुभ होने की प्रार्थना करने लगे। इस तरह सभी शुभ हुआ।

हमारी भारतीय संस्कृति में जीवन के अन्तिम क्षणों में अपने-अपने मतानुसार कुछ पवित्र मंत्र सुनाये जाते हैं। इसलिए कि आखिरी समय में चेतन व अवचेतन मन में अच्छे भाव रहें ताकि सद्गति मिले। ऐसे समय अगर हमारे दिमाग में कोई बात रह जाती है तो वह हमारे मन में बार-बार आती रहती है। अगर खुशी है तो खुशी लाती है, गम के भाव हों तो गम दरवाजा खटखटाता रहता है। यह बिल्कुल सत्य है। आप भी हमेशा अपने मन में सद्विचार का प्रवाह गतिमान रखें। अच्छा सोचें, अच्छा करते रहें।

इस दुनियां में जो रिश्ते बनते हैं, कुछ लोग ही निभा पाते हैं। कुछ लोग दौलत को ही भगवान समझते हैं। उनके लिए रिश्ते-नाते कोई मायने नहीं रखते। उनके मन में हृदय में प्रेम व रिश्तों की गरमाहट नहीं होती, अपनत्व नहीं होता।

उनको अपने स्वार्थ से मतलब होता है। अपंने फायदे के लिए सत्य को असत्य बनाने पर तुल जाते हैं और असत्य को सत्य समझते हैं। अभी कुछ भले लोगों का साथ हो गया। कभी-कभी आदमी दूसरों से अपनी समझ पर अधिक विश्वास कर लेता है। लेकिन अपने स्वार्थ के लिए आदमी किस तरह दूसरे को भ्रमित कर देता है, हर रोज नई-नई कहानियां गढ़ कर बार-बार दोहराता रहता है

तो वह सच्चाई न होते हुए भी सच्ची समझी जाने लगती है। झूठ के हाथों सच बदनाम हो जाता है।

उसे कदम-कदम पर धोखा मिलता है। अटलजी के शब्दों में-

मुझे किसी से नहीं शिकायत।
यद्यपि छला गया पग-पग में।।

५० वर्षों के विश्वास, प्रेम, स्नेह को एक ही झटके में आदमी किस तरह तोड़ता है, यह अनुभव जीवन में पहली बार हुआ। जिनको हम अपना समझते हैं, वे ही अगर विश्वास को तोड़ते हैं तो मन में पीड़ा होती है।

किसी ने लिखा है-

इस मतलब की दुनियां में, कौन किसका होता है।
धोखा वहीं देता है, जिस पर भरोसा होता है।

जब कोई इन्सान की प्रामाणिकता व नियत पर संदेह करता है तो मन अन्दर तक आहत हो जाता है। मन उदास रहने लगा। गम के गहरे बादल घूमघूम कर गहराते रहते थे। मन को गहरी चोट लगी। दुःख जरूर हुआ, लेकिन मेरे मन में उनके प्रति कोई दुर्भावना या बदनाम करने की या नुकसान पहुंचाने की भावना नहीं आयी। अभी भी यही सद्भावना है कि वे अपने तरीके से शुभ कार्य में सफल रहें संलग्न रहें। आर्या अर्चनाजी ने एक दफा कहा था- "आप ऐसा कोई काम मत करो जिससे बाद में पछताना पड़े।"

ज्ञानी पुरुषों की वह बात सत्य है कि चिंता ही चिता का कारण बन जाती है। इसलिए मैंने जो चिंता करने की भूल की थी, वह आप तो नहीं करें। यह आपसे कहने आया हूँ। चिंता मन करता है, परन्तु इस गलती की सजा तन को भुगतनी पड़ती है।

गत वर्ष मुझे ५ गांवों की गोशाला में जाने का सौभाग्य मिला। उन्हीं को देखने, जानकारी लेने के लिए राजस्थान गया था। उन स्थानों में गौ के रहने के लिए ठाण, पीने के पानी और चारा रखने के गोदाम नहीं थे। गांव वालों ने मिलकर सहयोग दिया और सभी जगह काम हो गया। जिसकी मुझे खुशी थी। रात और दिन दिल और दिमाग में नव निर्माण करने की योजना बनती रही, मन्थन होता रहता। जहाँ-जहाँ गौशाला में ट्यूबवेल नहीं था, वहां चालू करवाये गये। मेरा यह मानना है कि जिस गौशाला में हरे चारे की व्यवस्था होगी, वह गौशाला स्वावलम्बी होकर चलती रहेगी।

यह कार्य करते हुए मुझे घर व परिवार की याद नहीं आई। मुझे इस कार्य में गांव वालों का पूरा सहयोग मिला। उनकी नजरों में अपार स्नेह व आदर के भाव देखता तो मन में एक आनन्द की अनुभूति होती और कार्य करने के लिए प्रोत्साहन

रूप ऊर्जा मिलती, जोश मिलता।

अब डॉक्टर के कहने से विश्राम कर रहा हूँ। प्रतिदिन प्रवचन के कैसेट सुनता रहता हूँ। अब यह महसूस हो रहा है कि मुझे इन बातों को इतनी गहराई से नहीं लेना चाहिए। यह तो जीवन का अंग है, रंग है। हर स्थिति में मन शान्त रहे, स्थिर रहे, संतुलन बनाये रखें।

जीवन एक यात्रा है। अतः हमारे जीवन में कई अवसर आते हैं जब ऐसा-वैसा होता रहता है, ऊँचा-नीचा होता रहता है, उस समय अपने धैर्य का साथ नहीं छोड़ें।

जिन्दगी का राज वह इन्सान पा नहीं सकता।
जो रंज में भी खुशी के गीत गा नहीं सकता।।

जो भी जनकल्याण का, मानव सेवा का अच्छा कार्य कर जायेंगे तो कुछ वर्षों तक तो लोग आपको याद करते रहेंगे, आशीर्वाद देते रहेंगे। नहीं तो इस दुनिया में कौन किसी को याद रखता है? तीन घंटे में मित्र, तीन दिन में समाज और तेरह दिन में तो परिवार वाले भुला ही देंगे। इसलिए-

रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ।।

बस यही संदेश आप तक पहुंचाना चाहता हूँ।

- 52, Kalathi Pillai Street, Chennai-600079

व्यवहार

श्री प्रकाश कर्णावट, इजरायल

अपने से छोटों को समझें, अपने समान ही उन्हें,
तो दिख पाएगा सच्चा सम्मान, उनकी आंखों में तुम्हें।
चाहते हो जैसा कराना, वैसा ही तुम किया करो,
तभी वास्तव में समझ पाओगे, किसी को तुम अपना।
नीचा दिखाकर दूसरों को, अपना सम्मान खतम होगा,
समझना अपने समान सबको, यह व्यवहार उत्तम होगा।
दूसरों को गिराने वाला, अपने आपसे गिर जाता है,
दूसरों को उठाने वाला, स्वयं ऊपर उठ जाता है।
सबको समान समझने वाला, सम्मान सभी का पाता है,
इसीलिए कहते महत् जन, जगाता जा सब में अपनापन।।

सेवा एवं सरलता की प्रतिमूर्ति साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी लाडकंवर जी म.सा. का महाप्रयाण

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा.ने कार्तिक शुक्ला १० संवत् २०५९ गुरुवार १४ नवम्बर २००२ की रात्रि में ११ बजकर ४५ मिनट पर संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। कार्तिक शुक्ला ११ दिनांक १५ नवम्बर को उनकी पार्थिव देह की अन्तिम-यात्रा वर्द्धमान भवन पावटा से प्रातः ९ बजे प्रारम्भ हुई, जिसमें जोधपुर, भोपालगढ़, मेड़ता आदि अनेक स्थानों के सैकड़ों नर-नारी सम्मिलित हुए। अन्तिम यात्रा जय-जयकार करती हुई सिरे बाजार होकर सिवांची गेट के निकट स्थित स्वर्गाश्रम पहुँची, जहाँ प्रातः ११ बजकर ४० मिनट पर उनकी पार्थिव देह अग्नि को समर्पित की गई।

साध्वीप्रमुखा महासती जी का जन्म विक्रम संवत् १९७९ ज्येष्ठ कृष्णा ११ को पीपाड़शहर में श्री फतेहराज जी मुणोत की धर्मसहायिका धर्मपत्नी श्रीमती बदनबाईजी की कुक्षि से हुआ था। महामंदिर, जोधपुर निवासी आपके पतिदेव श्री जुगराजजी भण्डारी का असामयिक देहावसान हो जाने से आपमें वैराग्य भाव प्रस्फुटित हुआ, जिसकी परिणति थी- १६ वर्ष की वय में विक्रम संवत् १९९५ माघ शुक्ला त्रयोदशी को आपकी जैन भागवती दीक्षा। आप महासती श्री अमरकंवर जी म.सा. की शिष्या बनीं तथा सेवाभाव, सरलता, निस्पृहता, आचारनिष्ठा आदि विविध गुणों से सम्पन्न होकर आपने ६४ वर्षों तक संयम-पर्याय का निरतिचार पालन किया। आपने दीक्षा लेने के साथ ही शिष्या नहीं बनाने एवं नये वस्त्र धारण न करने का नियम ले लिया था, जो उनकी निस्पृहता एवं त्यागवृत्ति के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। सेवाभाव की आप प्रतिमूर्ति रहीं। आपने महासती श्री स्वरूपकंवर जी, महासती श्री धनकंवर जी, महासती श्री किशनकंवर जी(खींवसर वाले), महासती श्री ज्ञानकंवर जी, महासती श्री वृद्धिकंवर जी एवं प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. की पूर्ण निष्ठा के साथ सेवा की। आपने खांगटा, निमाज, सैलाना, जयपुर, नागौर, भोपालगढ़, अजमेर, ब्यावर, पीपाड़ शहर, मदनगंज, बीकानेर, भीलवाड़ा, कोसाणा, जोधपुर, दिल्ली आदि क्षेत्रों में विचरण किया। सूर्यनगरी जोधपुर में आपने ३९ चातुर्मास किए, तथापि आपका किसी से कोई मोह नहीं था। श्रावक-श्राविकाओं को आप कभी उपालम्भ नहीं देते थे तथा उनकी धर्म-प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करते रहते थे। आप प्रवचन-कुशल होकर भी नई सतियों को प्रवचन करने हेतु प्रोत्साहित

करते थे। आपने अपनी गुरु भगिनियों की सेवा ही नहीं की, अपितु कई सतियों को दृढ़ आचार की दृष्टि से घड़ने का कार्य भी किया। आप संयम-साधना में प्रतिपल जागरूक महासती थीं। स्वास्थ्य प्रतिकूल होने पर भी आप समभाव में रहकर साधनाशील रहती थीं।

पूज्यपाद आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ने विक्रम संवत् २०४६ मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी ६ दिसम्बर १९८९ को आपको उपप्रवर्तिनी पद से विभूषित किया था तथा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. के स्वर्गारोहण के पश्चात् विक्रम संवत् २०५१ आश्विन शुक्ला दशमी १४ अक्टूबर १९९४ को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने आपको 'प्रवर्तिनी' पद से सुशोभित किया।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. स्वास्थ्य संबंधी कारणों से सकारण वर्द्धमान भवन, पावटा विराजमान थे। विगत तीन-चार वर्षों से उनके रक्तचाप में न्यूनाधिकता रही। शारीरिक कमजोरी और वृद्धावस्था के साथ बीमारी से स्वास्थ्य में दिन-प्रतिदिन गिरावट रही। संघ-सेवी अनुभवी चिकित्सक डॉ. एम.एल. बाफना साहब प्रायः जब भी पावटा की ओर पधारते साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती जी म.सा. के दर्शन-वन्दन के साथ श्रमणोचित औषधोपचार में बराबर सहयोग करते। सुज्ञ श्रावकों ने श्रमणोचित उपचार में सदा जागरूकता का परिचय दिया एवं हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. सांघवी और सनसिटी के चिकित्सकों ने भी उपचार में अपनी भावनापूर्वक सेवाएँ दी।

कार्तिक शुक्ला अष्टमी को रात्रि में दर्द के साथ कुछ घबराहट देखने में आई। वीतराग-स्मरण के साथ समताभावों में रात्रि व्यतीत हुई। प्रातः चिकित्सकों ने स्वास्थ्य का निरीक्षण-परीक्षण कर परामर्श दिया कि साध्वीप्रमुखा को चिकित्सालय में भर्ती कराना उचित होगा। चिकित्सकों के परामर्श के बाद जब साध्वीप्रमुखा से अस्पताल में भर्ती होने विषयक उनकी भावना पूछी गई तो सरलता की प्रतिमूर्ति का उत्तर था- सोहनजी! शफाखाने का क्यों टंटा लगाते हो। डाक्टर जो दवा दे, मैं यहाँ ले सकती हूँ। व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी (सोहनजी) म.सा. साध्वीप्रमुखा की सतत सेवा में रहने से उनके मनोभावों से पूरी तरह परिचित थीं। उन्होंने कहा- अस्पताल में भर्ती करवाने की न साध्वीप्रमुखाजी की भावना है और न ही हमारा मन गवाही देता है। उपचार के साथ समय-समय पर प्रत्याख्यानों का बराबर महासती मण्डल ने उपयोग रखा।

१४ नवम्बर को पूरे दिन प्रायः यथास्थिति बनी रही। सूर्यास्त पूर्व चिकित्सा के उपकरण हटा दिये और नित्य प्रति की प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान किए। साध्वीप्रमुखा जी की जागरूकता पूरी तरह बनी हुई थी। रात में लगभग १० बजे

साध्वीप्रमुखा जी ने कहा भी कि मुझे नीचे सुला दो, लेकिन महासती मण्डल ने पाट पर लेटने का निवेदन कर उन्हें कुछ न कुछ सुनाते रहने का क्रम बनाए रखा। साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. के पाटे से नीचे सुलाने की बात के संदर्भ में पृच्छा की तो लगा शायद साध्वीप्रमुखा को कोई पूर्वानुमान हुआ हो, अतः संथारे के विषय में भावना पूछी गई। साध्वीप्रमुखा ने सजगता में संथारे की भावना व्यक्त की, इस पर व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. ने संथारे के प्रत्याख्यान करवाये और साध्वीप्रमुखा आत्मचिन्तन-आत्मरमण में लीन रह सके, इस भावना से उन्हें श्रुत स्वाध्याय का संबल प्रदान किया।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. ने संघनायक आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी .म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-मुनिराजों की सेवा में जो सुदूर महाराष्ट्र में विराजित हैं, क्षमायाचना के भावों के साथ समाचार लिखवाये कि मेरी वृद्धावस्था है, बीमारी अलग से है और आप इतने दूर विराज रहे हैं कि मैं आपके दर्शन, वन्दन का लाभ प्राप्त कर सकूँ यह संभव नहीं, अतः आपश्री से मैं हार्दिक क्षमायाचना करती हूँ।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. का सुदीर्घ संयमी जीवन अनुकरणीय रहा। सेवा-सरलता-समता के साथ उनका संघ के प्रति समर्पण अद्वितीय था। सरलता और सेवा धर्म की साधना में सन्नद्ध महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. ने अपनी गुरुबहिन साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म. सा. की सेवा में जो आदर्श प्रस्तुत किया वह वर्षों तक प्रेरणा देता रहेगा। समता-साधिका ने अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वाध्याय और सेवा के बल पर अपना विशिष्ट स्थान संघ में स्थापित किया। संघ नायक के प्रति समर्पण एवं संघ-व्यवस्था के अनुपालन में उन्होंने सदा अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। कम बोलना, निन्दा-आलोचना से अलग रहना और संयम-मर्यादा में सजग रहना उनकी विशेष पहचान थी। शरीर से भले ही दुबले-पतले रहे हों, संयम-साधना में उनकी दृढ़ता थी। बीमारी में समत्वभाव उनका विशेष गुण रहा। ऐसी संयम साधिका ने अन्त समय में समाधि मरण का वरण कर नश्वर देह का त्याग किया वह रत्नवंश के गौरवशाली परम्परा में एक नया अध्याय कहा जा सकता है।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. के संथारे के साथ समाधि मरण के समाचार उसी रात को मुम्बई-होलनांथा सहित अनेक ग्राम- नगरों तक श्रावकों के माध्यम से पहुंच चुके थे। दिनांक १५ नवम्बर के दैनिक समाचार-पत्रों के माध्यम से ज्ञात सूचना से जोधपुर के आबाल-वृद्ध हजारों सदस्य साध्वीप्रमुखा के पार्थिव देह के अंतिम संस्कार में सम्मिलित हुए, वहीं समीपवर्ती

क्षेत्रों के श्रावकों ने जोधपुर पहुंचकर साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती जी के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। वर्द्धमान भवन, पावटा से साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती जी का पार्थिव देह सुसज्जित खण्डी में पद्मासन के साथ रखा हुआ था, सैकड़ों भाई-बहिनों ने श्रद्धा-भक्ति के साथ दिवंगत महासतीजी को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। जय-जय नन्दा, जय-जय भद्रा के जयनादों के साथ महाप्रयाण यात्रा का विहंगम दृश्य हजारों-हजार लोगों ने अपलक रूप से देखा।

महाप्रयाण यात्रा में सभी सम्प्रदायों के प्रमुख पदाधिकारियों के अलावा विशाल संख्या में जनमेदिनी गगनभेदी जय-जयकार करती हुई ओसवाल स्वर्गाश्रम पहुंची, जहाँ साध्वीप्रमुखा के सांसारिक परिजनों और संघ पदाधिकारियों ने चन्दन व पीपल की सूखी लकड़ियों से निर्मित चिता पर पार्थिव देह रखा और मुखाग्नि प्रदान की। जन-जन की जिह्वा पर साध्वीप्रमुखा की समता- सरलता और सेवा भावना के आदर्श की चर्चा थी।

देश में अनेक स्थानों पर दिवंगत साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती जी को लोगस्स के पाठ से श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा उनके गुणों का स्मरण किया गया।

मुम्बई– साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. का १४ नवम्बर की रात्रि में करीब ११.४५ बजे संथारा सीझने की जानकारी संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत के माध्यम से रात में मिलते ही चार लोगस्स का निर्वाण कायोत्सर्ग कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। १५ नवम्बर को प्रवचन बंद रखा गया तथा १६ नवम्बर २००२ को गुणानुवाद सभा के माध्यम से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने गुणानुवाद सभा में फरमाया कि रत्नवंश की गौरवशाली परम्परा में आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव स्वनामधन्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. ने संघ में महासती श्री हरकंवर जी, महासती श्री सुन्दरकंवर जी महाराज को प्रवर्तिनी पद से अलंकृत कर संघ में एक अभिनव सर्जना का शुभारंभ किया। प्रवर्तिनी महासती श्री सुंदरकंवर जी महाराज के पश्चात् महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. ने इस पद को सुशोभित किया। प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. की सेवा में समर्पित महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. को आचार्य भगवन्त ने वि.सं.२०४६ में उपप्रवर्तिनी पद संभलाया। प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. के समाधि मरण पश्चात् वि. सं.२०५१ की विजयादशमी को उप प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. को प्रवर्तिनी पद से विभूषित किया गया। सरलता की प्रतिमूर्ति, सेवा- धर्म की साधना में सजग साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. का जीवन प्रेरणादायी

था।

आपने फरमाया-साध्वीप्रमुखा महासती जी ने सेवा की भावना के साथ ज्ञानार्जन भी किया और जीवन को ऊँचा उठाने का प्रयास किया। स्वयं साधना में आगे बढ़े औरों को बढ़ाने में सहयोग दिया। वे स्वयं व्याख्यात्री थी, शास्त्रों की ज्ञाता थी। उनका सीखने-सिखाने का क्रम चलता रहता था। उन्होंने तीर्थंकर गोत्र बांधने वाला एक गुण अपनाया और वह था वैयावृत्त्य। ७० साल की उम्र में भी गुरुणी जी की सेवा में हर समय तैयार रहती थी। दूसरे सारे काम गौण करके सेवा में समर्पित रहना उनका अद्भुत गुण था।

आचार्यप्रवर ने साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी जी महाराज के जीवन परिचय के साथ उनकी सेवाओं का स्मरण करते कहा कि विगत कुछ वर्षों से स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होते हुए भी समता में कोई कमी नहीं आना उनकी विशेषता थी जो अंत समय तक बराबर बनी रही। सेवा में सन्नद्ध महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि साध्वियों ने स्वास्थ्य- समाधि के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों का बराबर ध्यान रखा, और अंत समय चिकित्सकों के इस परामर्श को कि साध्वीप्रमुखा जी को अस्पताल में भर्ती करवाया जाय, लेकिन अस्पताल के दोषों से बचाने का साध्वी मंडल का सहयोग अनुकरणीय कहा जा सकता है।

पूज्य आचार्यप्रवर ने गौरवशाली रत्नवंश में सेवा-धर्म की साधना में समर्पित जीवन को प्रेरणादायी बताते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपनी मनोभावना व्यक्त करते हुए जो संदेश महासतियां जी की सेवा में प्रेषित कराया वह इस प्रकार था-

''सुदीर्घ संयमी महान् साधिका प्रवर्तिनी श्री लाडकंवर जी म.सा. का अंतिम मनोरथ समाधि-मरण रत्नवंश की गौरवशाली परम्परा को दीप्तिमान करने वाला है। परन्तु दीर्घ अनुभवी परम सेवाभाविनी महासती जी का वियोग संघ के लिए अपूरणीय क्षति है। लघुवय में संयम अंगीकार कर जीवन पर्यन्त उसका निरतिचार पालन करते हुए सेवा में हर समय तत्पर रहने वाली साधिका ने जीवन पर्यन्त नवीन वस्त्रों को ग्रहण नहीं कर अपनी अलग पहचान बनाई। क्षीण काय शरीर में वेदना को समता भाव से सहन कर सहनशीलता का परिचय दिया। कहना चाहिये साधक के दो प्रमुख कर्त्तव्य स्वाध्याय और सेवा दोनों को उन्होंने दक्षतापूर्वक निभाया।

व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. प्रभृति महासतियां जी ने अग्लानभाव से श्रमण मर्यादा के अनुरूप सेवा-सुश्रूषा एवं संयम-साधना में सतत जागरूकता बनी रहे, इसका पूरा उपयोग रखा जो यशस्विनी परम्परा के अनुरूप है। महासती मण्डल की दीर्घकाल की सेवा-साधना अनुकरणीय व अनुमोदनीय है।

आसन्न उपकारिणी गुरुणीजी का वियोग हृदय में संवेदना उत्पन्न करने वाला होता है, परन्तु महासती मण्डल पूर्ण धैर्य के साथ गुरुणीजी के अनुकरणीय आदर्शों का अनुकरण करते हुए संघ दीप्ति में वृद्धि करते हुए साधना-मार्ग में आगे बढ़े, यही अपेक्षा है।

साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासतीजी के समाधिमरण पर अभिभूत हृदय से गहरी संवेदना।"

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए फरमाया- मुझे संयम-साधना में आगे बढ़ाने के लिए आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा., वर्तमान आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा रही तो उन महासती जी की सतत प्रेरणा भी प्राप्त हुई। वर्षों तक जोधपुर में रहने के कारण जब-जब भी सेवा में जाने एवं वन्दना के लिए जाने का कारण रहता वे मुझसे सदा यही कहती तुम समय को बर्बाद कर रहे हो, क्यों नहीं साधना में आगे बढ़ते हो। मेरी ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना में उनका सहकार मेरे गृहस्थ जीवन से रहा। आचार्य भगवन्त का चातुर्मास सवाईमाधोपुर में था। उस समय मैं चरण सेवा में पहुँचा और दीक्षा की भावना रखी। मुझे आचार्य भगवन्त ने कहा तुम जोधपुर रहकर अपनी ज्ञान-साधना बढ़ाओ। मैं उस साधिका के चरणों में पहुँचा, वहाँ पण्डित जी से अध्ययन करता था। वैराग्यवती सोहनजी भी अध्ययन करती थी। महासती श्री लाडकंवर जी और महासती श्री सायरकंवर जी का हर समय संरक्षण बना रहता था। उनकी सेवा साधना कैसी थी, उन्होंने भले ही दीर्घ तपस्या की आराधना नहीं की होगी, पर तप से उनका जीवन सुगंधित था। ६४ वर्ष के संयम पर्याय में उन्होंने जो सेवा की वह चाहे प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. की सेवा रही हो, महासती श्री राजीमती जी की सेवा रही हो या ज्ञानकंवर जी या अन्य किसी साधिका की, उस साधिका ने अग्लान भाव से सेवा की। उनकी संयम के प्रति कैसे जागरूकता थी। २०३० का प्रसंग है। महासती श्री बदनकंवर जी म.सा. महासती श्री किशनकंवर जी म.सा. की सेवा में जोधपुर विराजमान थे। आचार्य भगवन्त की असीम अनुकम्पा से मैंने अठाई की। पारणे का प्रसंग था, दूर होते हुए भी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. गोचरी के लिए करीब ४ किलोमीटर चल कर पधारे। परिवारजनों के हर्ष का पार नहीं था, उल्लसित भावों में घर के किसी एक सदस्य ने पानी का गिलास इधर से उधर रख दिया। गोचरी के लिए पधारे, अठाई का पारणा है, चार किलोमीटर दूर से पधारे हैं, पर गिलास इधर से उधर कर देने के कारण घर असूझता हो गया और महासती जी वहाँ से लौटने लगे। महासती जी को खाली लौटते देखकर मन भर आया। मैंने निवेदन किया कि आप इसका मुझे

प्रायश्चित्त प्रदान कर दीजिये, आप इतना कष्ट उठाकर पधारे हैं, मेरा पारणा कैसे होगा? महासती जी ने कहा आप किसी अन्य घर पर अपना हाथ फरस लें, पर आपके घर से आज कुछ नहीं लिया जायेगा। आज तो साधकों की ऐसी हालत है कि वे देखी-अनदेखी कर देते हैं, पर उस साधिका ने मर्यादा का रक्षण किया। उनके हृदय में त्याग और सेवा की भावना थी। ६४ वर्ष में उन्होंने कभी नया वस्त्र ग्रहण नहीं किया। पुराना वस्त्र या तो श्रावक से याचना करके लाते या सतियों के काम में लिया वस्त्र काम में लेते। प्रवर्तिनी महासती जी दो साल से व्याधि से ग्रस्त होते हुए भी समभाव से वेदना सहन कर रहे थे। चार साल पहले मैं आचार्यप्रवर की आज्ञा से दीक्षा प्रसंग पर जोधपुर गया तब मैंने देखा उनका वजन करीब ४० किलो के आसपास था। अभी आचार्य भगवन्त की सेवा में समाचार आए कि मेरी अवस्था है, शरीर भी साथ नहीं देता इसलिए आपके दर्शनों की अभिलाषा पूरी हो सके, न हो सके, पर मैं आपके प्रति हार्दिक क्षमायाचना करती हूँ।

उस साधिका के जीवन में अनेक गुण थे। संयम-साधना के प्रति पूरी सतर्कता थी। हम साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती जी के अनेकानेक गुणों में से कोई एक गुण भी ग्रहण करें तो वह हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने साध्वीप्रमुखा के संयमी एवं सेवाभावी जीवन पर प्रकाश डालते हुए मरण से नहीं डरने की एवं मरण सुधार करने की प्रेरणा की।

कच्छ सम्प्रदाय की महासती श्री चन्दनबाला जी म.सा. ने भी अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. के प्रेरक जीवन में रहे अनेकानेक गुणों में से कोई एक गुण अंगीकार करने की प्रेरणा करते कहा कि हम जीवन में गुण ग्रहण करके उनकी आत्मा को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

संघ संरक्षक प्रो. चांदमल जी कर्णावट ने अपनी ओर से एवं मुम्बई श्रीसंघ की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित किये। श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन एवं कुमारी अंशु कटारिया ने भी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। चार लोगस्स के ध्यान के साथ श्रद्धांजलि सभा विसर्जित हुई।

-मुणोत नवरत्न एस. जैन

जोधपुर– यहाँ पर रविवार १७ नवम्बर २००२ को वर्द्धमान भवन, पावटा में सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में प्रातः ९ बजे श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। दिवंगत

साध्वीप्रमुखा के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. ने फरमाया कि महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. उत्कृष्ट संयमी जीवन की धनी, सेवाभावी एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थीं। उन्होंने सहज वात्सल्य से न केवल महासती सौभाग्यवती जी, सुश्री प्रभा जी आदि महासतियों का निर्माण किया(घड़ा) है, अपितु उन्होंने अपने अमृतमय वात्सल्य एवं औदार्य से हमें भी घड़ा है। व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. ने साध्वीप्रमुखा के उपकार का स्मरण करते हुए उनके वात्सल्य, सेवाभाव, सरलता, संयम के प्रति जागरूकता आदि गुणों पर प्रकाश डाला। महासती जी ने फरमाया-वे संयम के प्रतिपल संजग थे। थोड़ा भी स्वास्थ्य ठीक होते ही स्वाध्याय में लग जाते। हम उनका ध्यान रखते, उससे भी अधिक वे हमारा ध्यान रखते थे। बड़े होकर छोटों की सेवा करते, किन्तु अपने को बड़ा नहीं माना। महासती सुश्रीप्रभा जी ने कहा कि जैसी गुरुणी जी सेवाभावी थी, वैसी ही उनकी शिष्या महासती सौभाग्यवती जी हैं। उन्होंने सेवा का आदर्श प्रस्तुत करते हुए हमें प्रेरणा दी। महासती रुचिता जी ने साध्वीप्रमुखा के सरलता, सेवाभाव, समता आदि गुणों पर प्रकाश डाला।

श्रद्धांजलि सभा का संचालन करते हुए शासन सेवा समिति के सदस्य श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने दिवंगत साध्वीप्रमुखा का परिचय देते हुए उनके रत्नत्रय की निर्मल साधना पर प्रकाश डाला। सभा में डॉ. राजकृष्ण जी दुगड़, श्री फतेहमल जी पटवा, मोहनोत पत्रिका के सम्पादक श्री राजेन्द्र जी मोहनोत(साध्वीप्रमुखा के सांसारिक भतीजे), दिव्या डागा (सांसारिक दौहित्री), ओसवाल सिंह सभा के अध्यक्ष श्री नारायणचन्द जी मेहता, स्वाध्याय संघ के पूर्व संयोजक श्री सम्पतराज जी डोसी, पूर्व संघमंत्री श्री अनराज जी बोथरा, शासन सेवा समिति के सदस्य श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पी.एम. चोरड़िया, चेन्नई, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री अरूण जी मेहता, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा, अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की महामंत्री श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, संघ संरक्षक न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा, क्षेत्रीय प्रधान श्री नरपतराज जी चौपड़ा, जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन, श्री सचिन जी भाण्डावत आदि ने भी साध्वीप्रमुखा का गुणानुवाद करते हुए श्रद्धांजलि प्रकट की। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष डॉ.सम्पतसिंह जी भाण्डावत ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ सनसिटी अस्पताल के श्री पारसमल जी जैन, सुनील जी कुम्भट, पारस जी गिड़िया आदि सहयोगियों का आभार प्रकट किया।

बालोतरा– श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संघ द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा

में तत्त्वचिन्तक तपस्वी श्री धन्नामुनि जी म.सा. ने संयमी जीवन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए साध्वीप्रमुखा के वृद्धावस्था में भी शुद्ध निर्मल संयम को श्रेयस्कर बताया। महासती भावना जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शरीर के प्रति ममत्व को त्याग कर आत्मा के प्रति जागरूकता के गुण पर प्रकाश डाला। संघमंत्री श्री ओमप्रकाश जी बांठिया ने प्रवर्तिनी साध्वीप्रमुखा जी के जीवन का परिचय देते हुए बताया कि साध्वीप्रमुखा जी ने वृद्धावस्था में भी सतत जागरूकता से संयम-साधना एवं समाधि-मरण की श्रेष्ठता को साकार किया। *-ओमप्रकाश बांठिया*

सूरत– पं. रत्न श्री प्रेमचन्द जी म.सा. के सान्निध्य में श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ ने श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर चार लोगस्स का कायोत्सर्ग किया। मुनि श्रेष्ठ श्री प्रेमचन्द जी म.सा. ने साध्वीप्रमुखा के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख किया। जोधपुर से पधारे सुश्रावक श्री चंचलमल जी चोरड़िया ने भी साध्वीप्रमुखा के संयम-जीवन पर प्रकाश डालते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

-सुगनचन्द बरलोटा

अहमदाबाद– मणिनगर, अहमदाबाद में १५ नवम्बर को व्याख्यान बन्द रखा गया तथा १६ नवम्बर को श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई। श्रद्धांजलि सभा में व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. ने फरमाया- साध्वीप्रमुखा महासती जी ने दीक्षा लेने के बाद जो संघ की सेवा की तथा हम सब छोटी-छोटी सतियों को जिस ढंग से संभाला और संयम में आगे बढ़ाया, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उनके चले जाने से रत्नवंश में ही नहीं, पूरे जैन समाज में एक उत्कृष्ट साध्वी की कमी हुई है। प्रवर्तिनी म.सा. तन से चाहे दुबले-पतले थे, पर उनका संयमबल बड़ा मजबूत था। महासती श्री सौभाग्यवती जी धन्य हैं, जिन्होंने लम्बे समय तक ऐसी महान् सतीवर्या की सेवा का लाभ लिया।" *-कान्ता भंडारी*

जयपुर–आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. के सान्निध्य में १६ नवम्बर २००२ को लालभवन में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में शासन सेवा समिति के सदस्य श्री विमलचन्द जी डागा ने साध्वीप्रमुखा जी का जीवन परिचय देते हुए उनके माधुर्य, सरलता, वात्सल्य, समभाव, सहनशीलता आदि गुणों को रेखांकित किया। श्री राजेन्द्र जी पटवा ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए बताया कि महासती जी धर्म में अडिग थी। संघमंत्री डॉ. (श्रीमती) मंजुला जी बम्ब ने कहा कि महासती जी म.सा. में अनुशासन कूट-कूट कर भरा हुआ था तथा सतियों को शिक्षा देने में आप हर समय अग्रणी रहती थीं। आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. ने फरमाया कि महासती जी म.सा. के दर्शनों का सौभाग्य तो उन्हें नहीं मिला, किन्तु जोधपुर से दर्शन कर पधारने वाले श्रावकों से उनके बारे में बहुत कुछ ज्ञात हुआ। महासती जी

ज्ञान-ध्यान में अडिग एवं धर्ममार्ग में निडर थी। अन्त में चार लोगस्स का ध्यान करके गुणानुवाद सभा विसर्जित हुई।

भोपालगढ़— श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने महासती जी को संयम-साधना की सजग पथिका, अध्यात्मयोगिनी, सरलस्वभाविनी, धैर्यशालिनी और गम्भीर गुरुभक्ता बताते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। अन्त में ११ महामंत्र एवं ११ लोगस्स का जाप किया गया तथा उनके सम्मान में विद्यालय में अवकाश घोषित किया गया।

-महावीरचन्द कांकरिया, मंत्री

पाली (मारवाड़)—सामायिक स्वाध्याय भवन में महासती श्री इन्दुबाला जी म. सा. आदि ठाणा ३ के सान्निध्य में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. ने फरमाया कि साध्वीप्रमुखा जी अत्यन्त सरलहृदया एवं महान् सेवाभाविनी थी। शारीरिक अस्वस्थता में भी वे संयमी जीवन की उत्कृष्ट साधना के प्रति सदैव की भांति पूर्ण रूप से सजग थी। संघमंत्री ने सकल संघ की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि यह एक अपूरणीय क्षति है। उनके गुणों को जीवन में उतार कर हमें भी साधना- आराधना में सक्रिय रहना चाहिए।

-ताराचन्द सिंघवी

श्रद्धांजलि गीत

श्रद्धालु जनों के लाडले थे जो, लाडकंवर जी जिनका नाम।
समाधि भाव से कर संथारा, पहुंच गये जो स्वर्ग धाम।।
सरल, सौम्य, अनुशासनप्रिय थी, रत्नवंश की दिव्य मणी।
खूब दीपाया जिनशासन को, कहते लोग सब खम्मा घणी।।
निर्मल संयम निर्मल जीवन, सेवा गुण की बनी मिशाला।
देते सदा धर्म प्रेरणा, अन्तर हृदय था अति विशाला।।
प्रवर्तिनी पद से बनी सुशोभित, बढ़ाया गुरु हीरा का मान।
चौसठ वर्ष तक संयम पाला, गुण गौरव से पाया सम्मान।।
छोड़ी देह पर बसे हृदय में, कैसे भूले हम उपकार।
जोधपुर के भक्त जनों की, वे थी पावन तारणहार।।
वो आतम सम्यक्त्व सम्मुख बन, पावे अपना लक्ष्य महान्।
आत्म शांति मिले सर्वदा, मुनि गौतम का यह अरमान।।

—प्रस्तोता-सचिन भाण्डावत, रचयिता-श्री गौतममुनि जी म.सा.

समाचार-संकलन

बालकेश्वर का यशस्वी चातुर्मास एवं स्मरणीय समापन

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ का बालकेश्वर, मुम्बई का चातुर्मास स्थानकवासी परम्परा के पोषण के साथ युवकों में धर्म-जागृति की दृष्टि से अपूर्व रहा। एक दर्जन से अधिक मासखमण, १३० से ऊपर अठाइयाँ तथा ४०,२५,२१,१६,१५,११,१०,६, ७ व ५ की अनेक तपश्चर्याएँ हुई। धर्मचक्र, पचरंगी, नवरंगी के साथ पूरे चातुर्मास में दया-संवर, उपवास-पौषध का अनवरत क्रम बना रहा। सिद्धि तप, आयंबिल तप और एकाशन विपुल मात्रा में हुए। चातुर्मास में देश भर के श्रीसंघों का एवं श्रद्धालुओं का आवागमन बना रहा और आगत भक्तों ने व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर सेवा-भक्ति का अपूर्व लाभ लिया। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभा के सफल आयोजन के साथ महाराष्ट्रीय रत्नबंधुओं का सम्मेलन, स्वाध्यायियों का शिविर एवं कार्यशाला, बालक-बालिकाओं के साप्ताहिक ज्ञानाभ्यास शिविर, महिलाओं के शिविर, सामूहिक सामायिक साधना जैसे अनेक विशिष्ट आयोजन भावनापूर्वक सम्पन्न होना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रही। मुम्बई महानगर में दया-पौषध के कार्यक्रम स्थान विशेष की दूरी के कारण प्रायः नहींवत् होते हैं, लेकिन आचार्यप्रवर आदि संतों की प्रेरणा एवं अतिशय से पूरे चातुर्मास में धर्म साधना-आराधना के विविध कार्यक्रम उत्साह पूवक सम्पन्न हुए। आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों की ज्ञान-क्रिया में रमणता, शुद्ध साध्वाचार के पालन की सजगता एवं आडम्बरविहीन स्थानकवासी परम्परा के प्रति प्रतिबद्धता देखकर मुम्बई महानगर वासी आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों की संयम- साधना से प्रभावित हैं तो उनके प्रेरक और सामयिक प्रवचनों को श्रवण कर अभिभूत हैं।

आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों की निस्पृहता का मुम्बईवासियों पर ऐसा प्रभाव जमा कि प्रत्येक परम्परा के श्रावक-श्राविकाओं ने धर्म स्थान में खुले मुंह बात करने से स्वतः परहेज रखा, माइक-बिजली की बात तो दूर सैल की घड़ी और मोबाइल जैसे उपकरण तक लोग बाहर रखकर आते और सत्संग-सेवा और संत-समागम में भावनापूर्वक भाग लेते।

आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों ने जहाँ शुद्ध साध्वाचार का सम्यक् आराधन किया वहीं श्रावक-श्राविकाओं ने भी शुद्ध श्रावकाचार के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर चातुर्मास को स्मरणीय बनाया। देश भर से श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन बना रहने पर भी आवास-भोजनादि व्यवस्थाएँ सुचारु चलना मुम्बई महानगर में अजूबा लग रहा

था, लेकिन परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग के कारण पूरे चातुर्मास में कहीं कोई बाधा नहीं आई। बालकेश्वर संघ के पदाधिकारी एवं ट्रस्टी अचंभित हैं कि सैकड़ों-हजारों लोगों की सुन्दर व्यवस्था के साथ चातुर्मास में प्रार्थना-प्रवचन, शास्त्र-वाचन, प्रतिक्रमण, जप-तप, ध्यान मौन के कार्यक्रम, गौरव-गरिमा के साथ निर्विघ्न सम्पन्न हुए। इसमें आचार्यप्रवर का अतिशय ही एकमात्र चमत्कार है, अन्यथा बालकेश्वर के इतिहास में पहले कभी ऐसा सुन्दर रूप देखने में नहीं आया।

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से अनेक दम्पतियों ने शीलव्रत के खंद किए, सैकड़ों व्रती श्रावक हुए, हजारों लोगों ने व्यसनों के त्याग किए और पूरे चातुर्मास में बालकेश्वर स्थानक आबाल-वृद्ध सबके लिए आकर्षण का केन्द्र रहा। दिनांक १६ नवम्बर को बालकेश्वर संघ की ओर से प्रवचन सभा में विदाई समारोह में ट्रस्टी श्री चम्पकभाई लखानी, श्रीमती उर्मिला बहन, श्री नानूभाई, श्री रमेशभाई दफ्तरी आदि वक्ताओं ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते कहा कि चातुर्मास कैसे और कब समाप्त हो गया, इसका पता ही नहीं चला। वक्ताओं ने कहा कि आचार्यप्रवर में सरलता, उदारता, विनम्रता, सहजता, गुणग्राहकता जैसे विशिष्ट गुण हैं तो ज्ञान और क्रिया के प्रति सजगता, आचार्य श्री की पहिचान है। कच्छ परम्परा की विदुषी महासती श्री उषाबाई जी महाराज जिन्होंने पूरे चातुर्मास प्रवचन-श्रवण का नियमित लाभ लिया, उनकी सुशिष्या ने आचार्यप्रवर को जिनशासन का अनमोल हीरा बताते कहा कि आचार्यप्रवर आदि सभी संतों का जीवन श्रेष्ठ है। महासती जी ने आचार्यप्रवर के इस चातुर्मास में धर्म-आराधना शांतिपूर्वक सम्पन्न होने के साथ उपस्थित जन समुदाय को आह्वान किया कि हमने चार माह जो कुछ सुना है उसे जीवन में प्रयोग करके समकित प्राप्त करने की जरूरत है। महासती मण्डल ने अविनय-आसातना के लिए क्षमायाचना भी की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से विचार व्यक्त करते हुए संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने आचार्यप्रवर की महती कृपा के लिए कहा कि मैं इतना ऋणी हूँ कि यह ऋण सात जन्म तक नहीं चुका सकता। आचार्यप्रवर की ओजस्वी वाणी, संतों के प्रेरक प्रवचन और महासती मण्डल का सान्निध्य पाकर बालकेश्वर श्रीसंघ हर्षित है। ऐसा आडम्बरविहीन जीवन मुम्बईवासियों ने पहले कभी नहीं देखा। जीवन में व्याख्यान सुनने का सबसे ज्यादा अवसर मुझे इस चातुर्मास में मिला। मुझे पहली बार लगा कि मैं के.जी. में भटक रहा हूँ। जीवन का लक्ष्य क्या, शायद इसकी हमें कल्पना नहीं है। मुणोत साहब ने स्पष्टतः कहा कि हमने चार माह जीवन-निर्माण के सूत्र सुने हैं, पर हम इतने ढीठ हैं कि यह जागृति थोड़ी देर रहकर खत्म हो जाती है। आचार्यप्रवर की ओर मुखातिब हो मुणोत साहब ने कहा कि आप हमें शक्ति दें जिससे हमारी जागृति बनी रहे।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मुणोत साहब ने महासती श्री निरंजनाबाई जी का बहुत बहुत उपकार मानते हुए आभार व्यक्त किया कि इस चातुर्मास को पाने में उनका बड़ा उपकार रहा है। बालकेश्वर संघ के पदाधिकारियों का तहेदिल से धन्यवाद

ज्ञापित करते अपने सहयोगी कार्यकर्त्ताओं का भी उन्होंने आभार मानते हुए व्यवस्था में किसी भी प्रकार की कमी के लिए करबद्ध क्षमायाचना भी की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने अपने मनोभावों को रखते कहा कि दुनियां की कितनी ही ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त हो जाय, हम अपने-आपको पुण्यशाली नहीं समझ सकते, पर एक अच्छा गुरु मिल जाना सबसे बड़ा पुण्य का कारण है। बाफना साहब ने अपनी ओर से एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से बालकेश्वर श्री संघ का धन्यवाद ज्ञापित करते कहा कि मुम्बई महानगर में इतने सुन्दर चातुर्मास की मैं कल्पना नहीं कर सकता था, क्योंकि महानगर में हजारों लोगों की व्यवस्था करना टेढ़ा काम होता है लेकिन मुम्बई के इस चातुर्मास में आवास-भोजन आदि व्यवस्था के साथ लोगों को लाने-ले जाने की व्यवस्था आपकी आत्मीयता से संभव हो सकी है।

समापन समारोह में सुश्राविका श्रीमती हुकमकंवर जी कर्नावट, मुम्बई, श्रीमती रंजना ही ओस्तवाल, कोल्हापुर, श्री हीराचन्द जी हीरावत, जयपुर, श्रीमती सुनिता जी डागा व श्री शोभाचन्द जी संचेती, वैजापुर ने एवं मुम्बई महिला मण्डल ने सामूहिक गीत के माध्यम से अपने भाव रखे।

मुम्बई चातुर्मास की उपलब्धि को रेखांकित करें तो चातुर्मास पश्चात् बालकेश्वर, ऑपेरा हाउस, बोरीवली, भायन्दर में साप्ताहिक सामूहिक सामायिक-साधना का कार्यक्रम प्रारम्भ करने का संकल्प एवं बालकेश्वर, भायन्दर, बोरीवली आदि क्षेत्रों में धार्मिक पाठशाला का शुभारंभ करने का निर्णय महत्त्वूपर्ण उपलब्धि कही जा सकती है। नित्य प्रति सामायिक धर्मस्थान पर करने के भी अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने नियम अंगीकार किये।

आचार्यप्रवर अपने आज्ञानुवर्ती संतों के साथ २० नवम्बर को प्रवचन पश्चात् बालकेश्वर स्थानक से विहार कर राजहंस पधारे। दिनांक २१ को राजहंस से विहार कर वरली, तदनन्तर खार, विले पार्ले, अंधेरी, गोरेगांव आदि उपनगरों को पावन करते हुए मुम्बई महानगर के क्षेत्रों को सिंचित कर रहे हैं।

होलनांथा में अपूर्व धर्म प्रभावना

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ३ का होलनांथा चातुर्मास ज्ञानाराधना, तपाराधना, धर्माराधना की दृष्टि से अपूर्व रहा। गांव वालों ने पूरे चातुर्मास सत्संग-सेवा और संत-समागम का भावनापूर्वक लाभ उठाया। श्रद्धा-भक्ति और सेवा भावना के सुन्दर रूप के साथ परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग से चातुर्मास दीप्तिमान रहा। प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्न चर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों में आबाल-वृद्ध सबकी भागीदारी एवं ज्ञान-ध्यान सीखने में रुचि से उपाध्यायप्रवर का होलनांथा चातुर्मास क्षेत्र के लिए बड़ा उपयोगी कहा जा सकता है। उपाध्यायप्रवर के प्रेरक प्रवचनों के साथ उनका आत्मार्थी पुरुषार्थ का रूप

जन-जन के मन को आकर्षित और प्रभावित करने वाला है और यही कारण है कि संकेत मात्र से लोग स्वतः होकर धर्म साधना-आराधना में आगे बढ़ने लगते हैं। जीवन सुधार के लिए उपाध्यायप्रवर के अनमोल सूत्र समाधि-मरण जो श्रावकों का अंतिम मनोरथ है, होलनांथा में देखने को मिला, वह वस्तुतः अनुमोदनीय है। संवर और पौषध साधना में होलनांथा के श्रावक-श्राविकाओं की भावना अनुकरणीय है। उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों की संयम-साधना से होलनांथा गांव में ही नहीं, क्षेत्र में शुद्ध साधना के प्रति जनभावना जागृत होना चातुर्मास की विशेष उपलब्धि कहें तो उसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

उपाध्यायप्रवर के विहार में गांव के आबाल-वृद्ध सभी ने भाग लेकर एवं चातुर्मास पश्चात् सामायिक-स्वाध्याय के प्रति नियमबद्ध होकर होलनांथा निवासियों ने चातुर्मास पश्चात् लीला-लहर का सुन्दर रूप बनाए रखने का संकल्प किया है, वह अविस्मरणीय रहेगा।

पालासनी गांव पर अमिट छाप

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. आदि ठाणा २ का पालासनी चातुर्मास जैन-जैनेतर समुदाय में धर्म जागृति की दृष्टि से अपूर्व रहा। गांव के सभी वर्गों के लोगों ने सत्संग-सेवा और संत-समागम के प्राप्त अवसर का भावनापूर्वक लाभ उठाया और यही कारण है कि पूरे चातुर्मास काल में प्रवचन में सदा अच्छी उपस्थिति रही। जाट, राजपूत, सुथार, सुनार, माली आदि सभी कौमों के आबाल-वृद्ध ने जिनवाणी श्रवण का लाभ तो प्राप्त किया ही, त्याग-तप के आराधन की भावना चातुर्मास के अन्त तक बराबर बनी रही और तेले, पाँच आठ, दस, ग्यारह, इक्कीस तक की तपश्चर्याओं का ऐसा ठाट रहा कि आगत श्री संघ एवं श्रद्धालु जैनेतर भाई-बहिनों के त्याग से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे, अपितु उन्होंने उनसे प्रेरणा भी प्राप्त की। सामूहिक तेलों के अनुष्ठान में बच्चे-बच्चियों तक ने अपनी भागीदारी प्रदर्शित की। गांव में सभी जातियों में अहिंसा-सत्य-सदाचार की भावना का संचरण एवं सैकड़ों ग्रामीणों द्वारा व्यसन-त्याग के नियम पालासनी चातुर्मास की उपलब्धि के रूप में सदा याद रखे जायेंगे। इस चातुर्मास के पहले गांव में एक लोकधारणा जमी हुई थी कि जैन संत-सतीवृन्द जैनियों को उपदेश देते हैं, लेकिन गांव के आबाल-वृद्ध सबने व्याख्यान श्रवण के साथ त्याग-तप में अपनी भूमिका प्रदर्शित कर यह मिथक तोड़ दिया और उन्हें लगा कि महाराज जैनियों के नहीं हम सबके हैं। चातुर्मास के अन्त में एक भावुक जैनेतर बन्धु ने यह टिप्पणी की कि हमें तपश्चर्या से इतना आनन्द मिला जिसे कहा नहीं जा सकता। एक अन्य भक्त ने अपनी भाषा में कहा कि महाराज जा रहे हैं हमें ठा पड़ती तो म्हां तप रा धुवां काढ़ देता। आतिथ्य सत्कार में गांव की आत्मीयता थी- अपनत्व था। अतः हर आगत ने चातुर्मास व्यवस्था के लिए संतोष तो प्रकट किया ही, छोटे से गांव की सुन्दर व्यवस्था को आदर्श बताया। जिनवाणी श्रवण के प्रति जन-भावना के लगाव का अन्दाज

इसी बात से हो सकता है कि मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के मौहल्ले-मौहल्ले में प्रवचन की मांग अन्त तक बनी रही। मुनिश्री ने स्थानीय संघ की सहमति से चार-पांच मौहल्लों में प्रवचन किया भी, लेकिन शेष विनति करने वालों से धर्मस्थान पर आकर प्रवचन सुनने की बात कहकर मुनिश्री ने सबको सन्तुष्ट करने का प्रयास किया। दिनांक २१ नवम्बर को पालासनी स्थानक से विहार एवं २२ नवम्बर को पालासनी से बिसलपुर तक के विहार में मानो पूरा गांव उमड़ पड़ा। विहार के इस अद्भुत दृश्य को देखकर गांव में पहले कभी इतने लोगों का एक साथ जुड़ाव देखने में नहीं आया, लोगों के मुंह से विहार में अपार जन समुदाय देखकर यही टिप्पणी सुनने को मिली। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों ने एवं श्रद्धालुओं ने पालासनी चातुर्मास में गांव की श्रद्धा-भक्ति और सेवा-भावना देखी तो उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ कि छोटे से गांव में कैसी सुन्दर धर्मप्रभावना चल रही है।

साध्वी-मण्डल के चातुर्मासों में भी प्रभावी धर्मजागृति

जोधपुर– साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ५ के पावटा चातुर्मास में, सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा ५ के घोड़ो का चौक तथा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा ४ के नेहरूपार्क चातुर्मास में ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप का अच्छा ठाट रहा। जोधपुर के तीनों प्रमुख केन्द्रों पर चातुर्मास के कारण लोगों को समीपवर्ती स्थानों पर जिनवाणी श्रवण करने एवं धर्म ध्यान करने का अवसर मिलने से बहुत सुविधा रही। दया-संवर, उपवास-पौषध, पचरंगी-सप्तरंगी-नवरंगियों के आयोजनों के साथ उपवास, बेले,तेले, पाँच,आठ, दस, ग्यारह, पन्द्रह, बीस, मासखमण तक की विपुल तपस्याएँ हुई। सामूहिक तेलों के आयोजन में बालक-बालिकाओं तक ने अपनी भागीदारी निभाई। अष्टमी-चतुर्दशी एवं विशिष्ट प्रसंगों पर व्रत-प्रत्याख्यानों में तीनों ही क्षेत्रों में अपूर्व उल्लास रहा। आयंबिल ओली की साधना में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सैकड़ों आयंबिल हुए। साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. सकारण जोधपुर विराजमान हैं, उनके स्वास्थ्य में अनुकूलता-प्रतिकूलता के चलते भी धर्म साधना-आराधना में एवं प्रवचन-शास्त्रवाचन जैसे कार्यक्रमों में निर्विध्नता बनी रहना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है। चातुर्मास में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. का संथारे के साथ समाधिमरण से संघ की गरिमा बढ़ी है।

धनारीकलां– सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ का धनारी चातुर्मास ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप की दृष्टि से सफल रहा। धनारी श्रद्धा-भक्ति वाला क्षेत्र है और गांव के जैन-जैनेतर सभी

लोग व्याख्यान- वाणी का लाभ लेते हैं। महासती मण्डल का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होना, गांव में सामायिक-स्वाध्याय की रुचि जागृत होना और व्यसन-फैशन से दूर रहने की भावना विकसित होना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

भोपालगढ़– क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., महासती श्री जागृतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का चातुर्मास सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं के सहयोग से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। शांतस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. ने अपने स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में दो लघु सतियों के साथ व्याख्यान वाणी का एवं शास्त्र वाचन-चौपाई का कार्यक्रम व्यवस्थित संचालित किया। ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों की भी अच्छी प्रभावना हुई।

तोंडापुर– जलगांव जिलान्तर्गत तोंडापुर में व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म. सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा ७ का चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और धर्म जागृति की दृष्टि से बहुत श्रेयस्कर रहा। छोटा गांव होते हुए भी वहाँ रुचि और भावना होने से करीब पन्द्रह भाई-बहिनों ने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ किया है, वहीं बोल-थोकड़ों की सीखने में अच्छी रुचि है। तोंडापुर में तीन शीलव्रत के खंद के अलावा कई दम्पतियों ने चार माह, छह माह, एक वर्ष, दो वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करने का नियम अंगीकार किया। महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा. ने मासखमण किया। उससे प्रेरणा प्राप्त कर कई भाई-बहिनों ने तपाराधन में पुरुषार्थ किया। तोंडापुर में सामायिक-स्वाध्याय के लिए धर्मस्थान की कमी थी। परन्तु उदारमना सुश्रावक श्री रतनलाल जी रांका ने स्थान उपलब्ध कराकर इस कमी की पूर्ति की, जो सराहनीय है। चातुर्मास पश्चात् तोंडापुर श्रीसंघ के सदस्यों ने संकल्प किया कि आगामी चातुर्मास तक आयंबिल की लड़ी चालू रखेंगे, धर्म स्थान में सामूहिक सामायिक का क्रम गतिमान रखेंगे, महासती मण्डल की प्रेरणा से प्रारम्भ पाठशाला बराबर चलायेंगे और दैनिक प्रार्थना का रूप विखंडित नहीं होने देंगे। श्रीसंघ के संकल्पों से लगता है चातुर्मास पश्चात् भी धर्मध्यान का वहाँ रूप देखने को मिलेगा जो अनुकरणीय है।

अहमदाबाद– व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा ५ के चातुर्मास में अहमदाबाद में ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप की अच्छी प्रभावना हुई। प्रातः ८ से ९ बजे तक नमस्कार महामंत्र के जाप के साथ जिनवाणी श्रवण करने में अहमदाबाद वासियों ने भावना पूर्वक लाभ उठाया। संस्कार एवं ज्ञानाभ्यास वृद्धि हेतु समय-समय पर शिविरों के आयोजन से एवं प्रश्नमंच-प्रश्नोत्तर कार्यक्रम से धार्मिक ज्ञान पुष्ट हुआ। १५.१०.२००२ से १८.१०.२००२ तक के महिला शिविर और १९.१०.२००२ को परीक्षा के सफल आयोजन से बहिनों में रुचि पैदा हुई है। शरद पूर्णिमा पर सामायिक के मासखमण आयोजन से साधना के प्रति उत्साह जागृत होना शुभ संकेत है।

ताहाराबाद– विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दिराप्रभा

जी म.सा. आदि ठाणा ३ के चातुर्मास में ताहाराबाद में जहाँ आम-अंगूर-अनार की भरपूर पैदावार होती है, चातुर्मास के सुयोग से ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में जैन-अजैन भाई-बहिनों ने भक्ति भावना से पूरे चातुर्मास काल में अनवरत प्रयास कर चातुर्मास को दीप्तिमान बनाया है। दो मासखमण के साथ १६,१५,६,६,५,४,३,२ की अनेक तपश्चर्याएँ छोटे से गांव में सम्पन्न होना अच्छी उपलब्धि है। रत्नवंश का पहला चातुर्मास नासिक जिले का एक आदर्श चातुर्मास रहा जहाँ ज्ञान-ध्यान सीखने में और व्रत- प्रत्याख्यान अंगीकार करने में रुचि व भावना देखने को मिली।

मेड़ता सिटी– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा ५ का भक्ति नगरी मेड़ता सिटी का चातुर्मास अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव से सानन्द सम्पन्न होना महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप में श्रावक-श्राविकाओं ने भावनापूर्वक लाभ उठाया।

मुकटी– धुलिया जिले का श्रद्धा-भक्ति वाला क्षेत्र मुकटी व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., महासती श्री विनयप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के चातुर्मास से एक दशक पश्चात् संघ में धर्म-जागृति का संचरण हुआ है। प्रवचन समय में मुकटी श्रावक संघ ने दुकाने बंद रखकर प्रवचन का लाभ उठाया। जैनेतर भाई-बहनों ने भी प्रवचनों का पूरा लाभ लिया। तेले, पाँच तथा ग्यारह की तपस्या जैनेतर समाज में उल्लेखनीय रही। प्रेत बाधा, बिच्छु डंक आदि में लोगों ने महासती जी की मांगलिक श्रवण कर आराम का अनुभव किया। घर-घर में सामायिक-स्वाध्याय का शंखनाद, त्याग-तप में जैन-जैनेतर जनता की रुचि से एवं समाज सुधार की ओर कदम बढ़ाने से महासती मण्डल का चातुर्मास याद किया जायेगा। पूर्व संघपति के संथारे के साथ समाधि-मरण से गावं में ही नहीं, क्षेत्र में धर्म के प्रति श्रद्धा जागृत होना चातुर्मास की विशेषता कही जा सकती है। छोटे से गांव में मासखमण और शीलव्रत का खंद होना महत्त्वपूर्ण है।

पाली–मारवाड़– व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का पाली चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना से अपूर्व रहा। प्रार्थना-प्रवचन-प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों में विशाल उपस्थिति, दया- संवर, उपवास-पौषध में बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों और बुजुर्ग श्रावक- श्राविकाओं का उत्साहपूर्वक भाग लेना पाली का आदर्श रहा है। चातुर्मास के सुयोग से शास्त्र-वाचन का क्रम पूरे चातुर्मास बना रहा। उत्तराध्ययन, अन्तगड़, कल्पसूत्र, ज्ञाताधर्म आदि शास्त्रों के साथ चन्द्र चरित्र, श्रीपाल चारित्र का पालीवासियों ने भावना पूर्वक लाभ उठाया। प्रश्नमंच, वर्ग पहेली, अन्त्याक्षरी, ध्यान प्रतियोगिता, सामायिक सूत्र, पच्चीस बोल पर प्रश्नोत्तर, उत्तराध्ययन सूत्र दूसरा, तीसरा व चौथा भाग अर्थ सहित, जन्माष्टमी, शरद पूर्णिमा पर करीब ५० बहिनों द्वारा पन्द्रह-पन्द्रह सामायिक, पचरंगियों, नवरंगियों, ग्यारह रंगियों के प्रचुर आयोजनों से पाली चातुर्मास स्मरणीय रहेगा।

गंगापुर सिटी– व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा ३ का गंगापुर सिटी-चातुर्मास पल्लीवाल क्षेत्र में धर्म

प्रभावना की दृष्टि से सफल रहा। जिनवाणी श्रवण में गंगापुरवासियों सहित क्षेत्र के लोगों ने त्याग-तप में विशेष भावना प्रदर्शित की। प्रत्येक रविवार को प्रश्नमंच एवं बाल परीक्षाओं के आयोजनों से बालक-बालिकाओं में संस्कार सृजित हुए, वहीं धार्मिक ज्ञान भी पुष्ट हुआ। स्वाध्याय शिविर व ज्ञानाभ्यास शिविरों के सफल आयोजनों से एवं चार मासखमण, चार शीलव्रत के खंद, 'धर्म खोले भाग्य' में चार बड़े खंद एवं करीब दो सौ अन्य प्रत्याख्यान हुए।

जरखोदा– व्याख्यात्री महासती श्री निःशलयवती जी म.सा., महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का जरखोदा चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और व्रत-नियमों की दृष्टि से अपूर्व रहा। महासती मण्डल के चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश के साथ जैन समाज के प्रायः अधिकांश युवकों-बुजुर्गों ने चार माह ब्रह्मचर्य व्रत आराधन का नियम लिया जो अनुकरणीय है। रात्रि भोजन त्याग के साथ कच्चे पानी का त्याग उनकी धर्मभावना का परिचायक कहा जा सकता है। छोटे से गांव में नौ शीलव्रत के खंद होना, धर्मचक्र पचरंगियों, सप्तरंगी-नवरंगी के आयोजन, दया के मासखमण तपाराधन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। धार्मिक शिक्षण शिविर, स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर, प्रतिदिन नवकार मंत्र का जाप, प्रश्नमंच-प्रश्नोत्तर कार्यक्रम आदि के सफल आयोजनों से जरखोदा चातुर्मास दीप्तिमान रहा। समीपवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालु समय-समय पर जरखोदा पहुंचकर प्रवचन श्रवण का लाभ लेते रहे और व्रत-प्रत्याख्यानों में आगे बढ़ते रहे।

लासूर स्टेशन-- औरंगाबाद जिलान्तर्गत लासूर स्टेशन श्रद्धा-भक्ति वाला क्षेत्र है। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ का लासूर चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और धर्मप्रभावना की दृष्टि से सफल रहा। प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों के साथ दया-संवर, उपवास-पौषध एवं छोटी-बड़ी तपस्याओं में आबाल-वृद्ध सबका उत्साह अनुकरणीय रहा।

विचरण विहार एक नजर में

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ ने २० नवम्बर को प्रवचन पश्चात् बालकेश्वर स्थानक से विहार किया और राजहंस पधारे। बरसी, खार, विले-पार्ले, अंधेरी, गोरेगांव, कांदिवली आदि क्षेत्रों को पावन कर आचार्यप्रवर गुजरात की ओर विहार करें ऐसी संभावना है।
- परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ३ होलनांथा का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर भाटपुर, मांजरोल, थानेर, आमलेपुर आदि मध्यान्तर के गांवों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर शिरपुर पधारे हैं और सैंधवा (म.प्र.) की ओर बढ़ रहे हैं।
- मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा २

पालासनी चातुर्मास पश्चात् बिसलपुर, रूड़कली, बिरानी, डांगियावास, देवलिया, बनाड़ आदि गांवों को पावन करते हुए ३०.११.२००२ को लक्ष्मीनगर, जोधपुर स्थानक पधारे हैं। हेमसिंह जी कटला-महामंदिर, पावटा, घोड़ों का चौक, नेहरूपार्क, सरदारपुरा आदि क्षेत्रों की विनतियां चल रही हैं।

- सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा ३ ने दिनांक २६ नवम्बर को घोड़ों का चौक स्थानक से विहार किया और जालोरी गेट स्थित रामनाथ मेहता भवन एक दिन विश्राम कर दिनांक ३० नवम्बर को सरदारपुरा चौथी बी रोड़ स्थित कुम्भट भवन पधारे हैं। सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. के स्वास्थ्य में कमजोरी एवं महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. के बुखार के कारण ८-६ दिन उन्हें घोड़ों का चौक विराजना पड़ा। महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. के हर्निया के ऑपरेशन के कारण वे सरदारपुरा पधारे हैं।
- शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने नेहरूपार्क, जोधपुर से २१ नवम्बर को विहार किया और सरदारपुरा चौथी बी रोड़ स्थित कुम्भट भवन पधारे। महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. के ऑपरेशन एवं स्वास्थ्य लाभ तक कुम्भट भवन सरलहृदया महासती जी की सेवा में रहने की भावना है।
- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ धनारीकलां चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर २१ नवम्बर को गांव के बाहर ट्यूब वैल के पास विराजे। २२ नवम्बर को नांदिया छोटा गांव फरसकर चांदरख पधारे। कुछ दिन चांदरख विराजकर डांवरा-बावड़ी की ओर विहार की संभावना है।
- शान्तस्वभावी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. के विहार की स्थिति नहीं होने से चातुर्मासार्थ भोपालगढ़ विराजे। स्वास्थ्य की अनुकूलतानुसार ही विहार विषयक चिन्तन हो सकेगा। अभी मेड़ता, पाली और जोधपुर से सतियों के आने के बाद विहार विषयक विचार संभावित है। जोधपुर से महासतियां जी २५ नवम्बर को भोपालगढ़ पहुंच गयी हैं, जबकि मेड़ता सिटी चातुर्मासार्थ विराजित व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा गोटन, बारनी आदि क्षेत्र फरसकर ३० नवम्बर के आसपास भोपालगढ़ पहुंचें, ऐसी संभावना है। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा पाली-मारवाड़ से नीबली-सरदारसमन्द, चन्दलाई, भेटण्डा, पालासनी, बिसलपुर, बीनावास, बुचकला पधारे हैं जहाँ से सालवा, अरटिया फरसते ५ दिसम्बर के आसपास भोपालगढ़ पधारने की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा ७ का तोंडापुर से कजगांव क्षेत्र में विचरण चल रहा है। महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ लासूर स्टेशन का चातुर्मास सम्पन्न कर कजगांव की ओर बढ़ रहे हैं। दोनों के मिलने के बाद विहार का अग्र निर्धारण आचार्यप्रवर की आज्ञानुसार होगा।

- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ ताहाराबाद के समीपवर्ती जायखेड़ा आदि क्षेत्र फरसकर पारोला के आसपास विचरण की संभावना है। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ मुकटी से पारोला क्षेत्र की ओर बढ़ रहे हैं दोनों महासतियों के मिलने पर आचार्यप्रवर की आज्ञानुसार विहार दिशा का अग्र निर्धारण होगा।
- व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ के ब्यावर- अजमेर की ओर विहार की भावना थी, किन्तु व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के दांतों का उपचार चल रहा है। अतः २१ नवम्बर को महासती मण्डल पावटा स्थानक से विहार कर लक्ष्मीनगर स्थानक पधारे और तदनन्तर कमलानेहरू नगर क्षेत्र में उनका विचरण चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ३ ने गंगापुर स्थानक से २१ नवम्बर को विहार किया और नसिया कॉलोनी पधारे। मछीपुरा आदि मध्यान्तर के क्षेत्र फरसते महासती मण्डल का सवाईमाधोपुर की ओर विहार चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ जरखोदा चातुर्मास सम्पन्न कर २१ नवम्बर को गांव के बाहर स्कूल में विराजे, तदनन्तर कैंथूदा आदि क्षेत्रों से सवाईमाधोपुर की ओर बढ़ रहे हैं।

-अरूण मेहता, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा बालकेश्वर, मुम्बई में कार्यशाला आयोजित

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों की समय-समय पर समीक्षा तथा सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार में आवश्यक सुधार होते रहें, इन्हीं भावनाओं को मूर्त रूप देने हेतु बालकेश्वर, मुम्बई (महाराष्ट्र) में द्विदिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक १२ व १३ नवम्बर २००२ को रखा गया। उक्त कार्यशाला में लगभग ३२ महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यशाला का उद्घाटन १२ नवम्बर २००२ को दोपहर १२.३० बजे प्रारम्भ हुआ। इसमें अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्रीमान मोफतराज जी मुणोत, कार्याध्यक्ष श्रीमान कैलाशचन्द जी हीरावत, मुम्बई, संरक्षक श्रीमान चांदमल जी कर्णावट, उदयपुर के साथ स्वाध्याय संघ संयोजक, सचिव व अनेक वरिष्ठ, विद्वान अध्यापक, स्वाध्यायी उपस्थित थे।

कार्यशाला के पाँच सत्रों में निम्नांकित बिन्दुओं पर विचार किया गया-

१. क्षेत्रों की बढ़ती संख्या की पूर्ति हेतु नये स्वाध्यायी तैयार करना।
२. स्वाध्यायियों का स्तर ऊँचा उठाना।
३. निष्क्रिय स्वाध्यायियों को सक्रिय करना।
४. पर्युषण के कार्यक्रमों को प्रभावी बनाना।

५. स्वाध्यायी के लिए न्यूनतम आचार संहिता।
६. स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविरों का पाठ्यक्रम।
७. क्षेत्रीय एवं स्थानीय शिविरों का आयोजन।
८. स्वाध्यायी पुरस्कार
९. धार्मिक प्रचार-प्रसार
१०. धार्मिक पाठशाला का संचालन।

कार्यशाला के विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, मुम्बई, स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सचिव श्री रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर, स्वाध्याय संघ की मेवाड़ शाखा के संयोजक श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर, संघ के क्षेत्रीय प्रधान श्री किशोर जी छाजेड़, हैदराबाद और संघ संरक्षक श्री चाँदमल जी कर्णावट, मुम्बई ने की। पाँच सत्रों की रिपोर्टिंग क्रमशः श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया, संयोजक(पोरवाल शाखा), श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर, (रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आ.शि. बोर्ड), श्री जम्बूकुमार जी जैन, जयपुर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव, संयोजक(महाराष्ट्र शाखा) एवं श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर ने की।

बालकेश्वर मुम्बई एवं जरखोदा में स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर द्वारा पयुर्षण पर्व में बाहर क्षेत्रों में सेवा देने वाले स्वाध्यायियों के लिए पंचदिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर २७ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर तक जरखोदा, जिला-बून्दी (राज.) एवं ८ नवम्बर से १२ नवम्बर २००२ तक बालकेश्वर, मुम्बई (महा०) में आयोजित किया गया। जरखोदा शिविर में ५४ एवं मुम्बई में ७५ स्वाध्यायियों ने विभिन्न क्षेत्रों से भाग लिया।

स्वाध्यायियों को उनकी योग्यतानुसार कक्षाओं में विभाजित कर ज्ञानार्जन करवाया गया। उक्त शिविरों के प्रशिक्षकों में सर्व श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर, श्री चांदमल जी कर्णावट, मुम्बई, श्री सम्पतराज जी डोसी, जोधपुर, श्री रिखबचन्द जी मेहता जोधपुर, श्रीमती सुशीला जी बोहरा जोधपुर, श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर, श्री नवरतनमल जी डोसी, जोधपुर, श्री पदमचन्द जी मुणोत, जयपुर, श्री चंचलमल जी चोरड़िया, जोधपुर, श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, डॉ. स्मृति रेखा जी जारोली, नीमच, श्री नवरतनमल जी भंसाली, बैंगलोर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव, श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर, श्री जम्बुकुमार जी जैन, जयपुर, श्री सुन्दरलाल जी सालेचा, सागवाड़ा एवं श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर की महत्वपूर्ण सेवाएं प्राप्त हुई। मुम्बई शिविर की व्यवस्था-संबंधी कार्यो में विरेन्द्र जी जैन, जोधपुर का उल्लेखनीय योगदान प्राप्त हुआ।

शिविर कक्षाएँ प्रातः ५:३० से प्रारंभ होकर रात्रि ९.३० बजे तक तीन सत्रों में

चलती थी। शिविर की प्रातःकालीन कक्षा में नियमित ध्यान-साधना एवं प्रार्थना का कार्यक्रम चला।

मुम्बई शिविर में प्रवचन सभा में वाणी के जादूगर, प्रवचन प्रभाकर परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा कर्म सिद्धान्त एवं सचित्त-अचित्त विवेक नामक विषयों पर प्रभावोत्पादक एवं सारगर्भित प्रवचन श्रवण का लाभ मिला। सभी स्वाध्यायियों का ज्ञान पक्ष मजबूत हो, इस हेतु प्रत्येक स्वाध्यायी को कम से कम १५ शास्त्रीय गाथा का स्वाध्याय करने का प्रतिबोध देकर पच्चक्खाण करवाया तथा सभी स्वाध्यायियों के लिये इसे अवश्य करणीय बताया एवं अन्य पच्चक्खाण करवाये।

जरखोदा शिविर में संयम रसिक तत्त्वज्ञा महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. ने प्रवचन के माध्यम से स्वाध्यायियों को सामायिक-स्वाध्याय के माध्यम से जीवनोत्थान हेतु प्रेरित किया। साथ ही स्वाध्यायियों के जीवन में ज्ञान और आचरण का विकास हो ऐसा आह्वान किया।

सायंकालीन प्रतिक्रमण सम्पन्न होने के पश्चात् प्रतिदिन रात्रि में ७.३० से ९.३० बजे तक विभिन्न वार्ताओं, प्रश्नोत्तरी, प्रश्नमंच जैसे कार्यक्रम रखे गए।

मुम्बई शिविर के दौरान विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित कर स्वाध्यायियों के लिये उपयोगी वार्ताओं का आयोजन किया गया-

१. विज्ञान और अध्यात्म- डॉ. रामगोपाल जी, जोधपुर
२. सामायिक, प्रतिक्रमण, आलोचना- श्री भंवरलाल जी कोठारी, बीकानेर
३. अहिंसा एवं शाकाहार- श्री रतनलाल जी बाफना, जलगांव
४. अहिंसा एवं स्वास्थ्य- श्री चंचलमल जी चोरड़िया, जोधपुर
५. स्वाध्यायी का क्रियात्मक पक्ष- श्री चांदमल जी कर्णावट, उदयपुर

शिविरों में सभी शिविरार्थियो की भोजन-आवास आदि की उत्तम-व्यवस्था रही।

सुशीला बोहरा
संयोजक

रिखबचन्द मेहता
सचिव

गंगापुर सिटी में आध्यात्मिक नैतिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

शासनप्रभाविका महासती मैनासुन्दरीजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. एवं महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. के पावन सान्निध्य में स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर और श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गंगापुर सिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में १२ वर्ष से २० वर्ष तक की आयु वर्ग के छात्र-छात्राओं का आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षण शिविर दि. ६.११.२००२ से १०.११.२००२ तक आयोजित किया गया। इस शिविर में सवाईमाधोपुर, बजरिया, हिण्डौन, शेरपुर, सुमेरगंजमण्डी, हरसाना, अलीगढ़, खेरली, मण्डावर, कोटा, बडेर, इन्द्रगढ़, भरतपुर, आलनपुर, करौली, बौंण, रूपवास, जयपुर, कुस्तला, चौथ का बरवाड़ा आदि समीपस्थ गांवों तथा स्थानीय छात्र-छात्राओं सहित लगभग २४० शिविरार्थियों ने

ज्ञानार्जन किया।

शिविर में प्रतिदिन प्रातः ६ बजे से सायं ४.३० बजे तक ६ कालांशों में शिविरार्थियों को ११ वर्गों में विभक्त कर ज्ञानार्जन कराया गया। सायंकालीन समय में विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से शिविरार्थियों में वक्तृत्व कला, गायन कला एवं उच्चारण शुद्धि से संबंधित प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। शिविर में महासतियां जी म.सा. ने भी अपने व्याख्यानों में प्रेरक उद्बोधन के साथ ही प्रत्येक दिन एक कालांश के माध्यम से बच्चों में धर्म के प्रति श्रद्धा जागृत की।

शिविर में अध्यापक रूप में श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर, श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, श्री जगदीश प्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमान प्रेमबाबूजी जैन, बजरिया, श्री धर्मेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती मोहनीबाई जी जैन, आलनपुर, श्रीमती कान्तिबाई जी जैन, आलनपुर, श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर, श्री मनीष जी बोथरा, जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, जलगांव, श्री महेश जी जैन, जयपुर, श्री अनुपम जी जैन, जयपुर, सुश्री प्रियंका जी जैन, गंगापुर सिटी, श्री कैलाशचन्द जी जैन, जयपुर ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की।

संघाध्यक्ष बाफना सा. द्वारा दो उपयोगी आह्वान

हमारे अनंत उपकारी शासनपति भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण पधारे २५२८ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। उनकी आदेय, अनुपम, अनमोल, अन्तिम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र के रूप में आज भी जन-जन को जीवन कल्याण का पावन संदेश दे रही है। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. इसे जैन धर्म की गीता कहते थे। इसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, विनय, सेवा, सदाचार, स्वाध्याय, साधना व समाधि जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों तथा धर्मकथा व प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से अनेक महापुरुषों के जीवन-चरित्र का सांगोपांग वर्णन प्रभावशाली प्रेरणा करने वाला है। आचार्य हस्ती ने इस सूत्र का सरल व सुबोध शब्दों में विवेचन किया है जो तीन भागों में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा प्रकाशित हुआ है।

इस निर्वाण दिवस पर मैं संघ के प्रत्येक सदस्य के लिए २ आह्वान कर रहा हूँ। इस विश्वास के साथ कि रत्नवंश के प्रत्येक परिवार में इसकी परिपालना अवश्य होगी।

१. प्रत्येक सदस्य उत्तराध्ययन सूत्र की ११ गाथाओं का प्रतिदिन स्वाध्याय करे। इसमें मूल गाथा पढ़ने में ३-४ मिनिट तथा अर्थ में ५-७ मिनिट कुल १०-१२ मिनिट का समय लगेगा। प्रतिदिन यह क्रम रहने से पूरे उत्तराध्ययन सूत्र की २००० गाथाओं का वर्ष में २ बार स्वाध्याय हो जायेगा। जो जीवन में बहुत बड़ी उपलब्धि रहेगी। स्वाध्याय से एक ओर कर्म-निर्जरा का महान् लाभ होगा तो दूसरी ओर हम जैन धर्म के सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त कर अपने ज्ञान को पुष्ट कर सकेंगे।

२. अपने बहीखातों में सन् और सम्वत् के साथ वीर निर्वाण वर्ष का भी उल्लेख करें।

कार्तिक सुदी १ से वीर वर्ष २५२६ चालू हो गया है। हमारे परम उपकारी परमपिता परमात्मा महावीर को सतत स्मृतिपटल पर रखने का यह सुन्दर व सरल तरीका है। आशा है आप दोनों कार्यक्रमों को शीघ्र लागू करके संघ के गौरव को बढ़ायेंगे।

-रतनलाल बाफना, जलगांव

अध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा से सम्बद्ध आवश्यक सूचनाएँ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा १९ जनवरी २००२ रविवार को दोपहर १२ से ३ बजे तक कक्षा १ से ८ तक के लिये आयोजित की जा रही है। जिन्होंने अभी तक परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र नहीं भरे हैं, वे अतिशीघ्र भर कर बोर्ड कार्यालय घोड़ों का चौक, जोधपुर को भिजवाने की कृपा करावें।

दिनांक ६ व ७ अक्टूबर २००२ को जोधपुर में आयोजित कार्यशाला में परीक्षा-संबंधी गतिविधियों की समीक्षा की गई। परीक्षा व्यवस्था सुदृढ़ बनाने एवं परीक्षार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बोर्ड ने अनेक निर्णय लिये हैं। पाठकों से निवेदन है कि अपने क्षेत्र के प्रत्येक परीक्षार्थी को इनसे अवगत कराने की कृपा करावें, ताकि वे अपनी परीक्षा की तैयारी समुचित रूप से कर सकें।

१. कक्षा पहली व दूसरी की परीक्षा की समयावधि २.३० घण्टे रहेगी, इन दोनों कक्षाओं में भाग 'अ' तथा 'ब' प्रश्न-पत्र नहीं होकर एक ही प्रश्नपत्र रहेगा। उसी प्रश्न पत्र में निर्धारित किये गये स्थान पर ही परीक्षार्थियों को उत्तर लिखने होंगे। उत्तर लिखने हेतु अलग से उत्तर पुस्तिकाएँ नहीं दी जायेंगी।

२. कक्षा तीसरी से आठवीं तक में भाग 'अ' तथा 'ब' दो प्रश्न-पत्र होंगे। भाग 'अ' के उत्तर उसी पेपर तथा भाग 'ब' के उत्तर निर्धारित उत्तरपुस्तिका में लिखने होंगे। परीक्षा की समायावधि ३ घण्टे रहेगी।

३. कक्षा १ से ५ तक में पिछली कक्षा के सूत्र व तत्त्व विभाग में से १० अंकों के प्रश्न प्रश्न-पत्र के भाग 'अ' में पूछे जायेंगे।

४. कक्षा ६ व उससे ऊपर की कक्षाओं में पिछली कक्षा का पाठ्यक्रम नहीं पूछा जायेगा। संबंधित कक्षा की पुस्तक में से ही प्रश्न पूछे जायेंगे।

५. भाग 'अ' प्रश्न-पत्र में कोई विकल्प नहीं होगा। भाग 'ब' में यथासंभव विकल्प दिये जायेंगे।

६. विकल्प का उपयोग न कर यदि कोई परीक्षार्थी पूरे प्रश्न हल कर देता है तो उसके निर्धारित अंक काट लिये जायेंगे।

७. यदि कोई परीक्षार्थी किसी प्रश्न का उत्तर दो बार लिख देता है तो प्रथम बार लिखा गया उत्तर ही मान्य होगा। बाद वाला उत्तर जाँचा नहीं जायेगा। यदि वह चाहे तो उनमें से एक उत्तर रद्द कर सकता है।

८. प्रश्न-पत्र तथा उत्तरपुस्तिका पर कोई भी परीक्षार्थी अपना नाम नहीं लिखे।

केन्द्राधीक्षक रोलनम्बर व कक्षा की सही जांच कर अपने हस्ताक्षर अंकित करें, अपना नाम कहीं पर भी न लिखें। प्रश्न-पत्र एवं उत्तरपुस्तिकाओं पर निर्धारित कोड संख्या ही लिखें।

६. कोई भी परीक्षार्थी नकल नहीं करे। यदि एक दो बार कहने पर भी कोई परीक्षार्थी न माने तो निरीक्षक/केन्द्राधीक्षक को यह अधिकार है कि वह लाल स्याही से रिमार्क लगा दे कि- ***"नकल करते हुए पकड़ा गया, अतः इसके ५ अंक काट लिये जायें"*** इसके उपरान्त भी यदि नहीं माने तो केन्द्राधीक्षक परीक्षा निरस्त कर सकता है। इसे अपने हस्ताक्षर से प्रमाणित अवश्य करें।

-नवरतन डागा, सचिव, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
घोड़ो का चौक, जोधपुर(राज.) फोन नं. ०२९१-६३०४१०

प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर को उज्जैन विश्वविद्यालय से मान्यता

डॉ. सागरमल जैन पारमार्थिक शिक्षण न्यास द्वारा संचालित प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (म.प्र.) को वर्ष २००२ से विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन(म.प्र.) से शोध-केन्द्र के रूप में मान्यता मिल गई है। डॉ. सागरमल जी के निर्देशन में विद्यापीठ में अनेक शोध-छात्र अध्ययन रत हैं। साधु- साध्वियों के अध्ययन के लिए भी यहाँ एम.ए. एवं पी-एच.डी. हेतु व्यवस्था है। विद्यापीठ में भोजन एवं आवास की सुविधा प्राप्त है।

श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर(राज)

अपील

आपका अपना यह विद्यालय अपनी स्थापना के ७४ वर्ष पूर्ण कर "हीरक जयन्ती वर्ष" में प्रवेश के आनंदमय अवसर पर १५ व १६ जनवरी २००३ को आपकी स्नेहिल उपस्थिति एवं वरद सान्निध्य का सादर अनुरोध करता है।

विद्यालय हितैषी स्वजनों से अनुरोध है कि इस वर्ष को किस रूप में, किस प्रकार और किन-किन कार्यक्रमों से सुसज्जित करें? इसके उपयोगी, प्रभावक, सुन्दर एवं सफल आयोजन हेतु आपके बहुमूल्य सुझाव शीघ्र भेजने का निवेदन करते हैं। आपके ये सुझाव हमारे मार्गदर्शक बन कर संस्था की प्रगति का सोपान बन सकेंगे। कृपया विचारों से अवश्यमेव लाभान्वित करावें।

विनम्र प्रार्थना है कि आपके क्षेत्र में व आपकी जानकारी में विद्यालय के समस्त भूतपूर्व छात्रों, संस्था-हितैषियों, भोपालगढ़ क्षेत्र के मूल निवासियों के डाक के पूर्ण पते व फोन नम्बर आदि की सूची भिजवाने का कष्ट करें। बहुत आशा व विश्वास के साथ यह अपील कर रहे हैं। इसे मात्र औपचारिकता न समझ कर व्यक्तिगत भोलावण मान कर पूर्ण सहयोग प्रदान करावें।

सादर साधुवाद। फोन-०२९२०-२२२२८०

(राणीदान भाकर)	(महावीरचंद कांकरिया)	(सूरजराज ओस्तवाल)
प्रधानाध्यापक	मानद-मंत्री	मानद-अध्यक्ष

श्रमणोपासक अब पाक्षिक के स्थान पर मासिक

७,८ एवं ६ अक्टूबर २००२ को सरदारशहर में आयोजित श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के ४०वें वार्षिक अधिवेशन में 'श्रमणोपासक' पत्रिका को अप्रेल २००३ से पाक्षिक के स्थान पर मासिक करने का निर्णय लिया गया। अधिवेशन के अवसर पर आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. ने आगामी वर्ष को 'उपासना विशुद्धि' वर्ष घोषित किया। अधिवेशन में ८ पुस्तकों का लोकार्पण किया गया तथा अकाल में सेवा का संकल्प लिया गया।

-जानकीनारायण श्रीमाली

द्रव्यानुयोग का गुजराती अनुवाद प्रकाशित

अहमदाबाद— अनुयोग प्रवर्तक श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' द्वारा संकलित चार अनुयोग हिन्दी अनुवाद सहित पहले ही प्रकाशित हो चुके हैं। उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' के सत्प्रयत्नों से इनके गुजराती अनुवाद भी प्रकाशित हो रहे हैं। धर्मकथानुयोग एवं गणितानुयोग के गुजराती प्रकाशन के पश्चात् द्रव्यानुयोग के प्रथम भाग के गुजराती अनुवाद के लोकार्पण का आयोजन २७ अक्टूबर २००२ को सम्पन्न हुआ। प्रमुख समाजसेवी श्री कृष्णकान्त भाई पटेल, मुम्बई ने इसका लोकार्पण किया। आगम अनुयोग ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नवनीतभाई पटेल, श्री कुमारपाल भाई देसाई एवं ट्रस्ट के महामंत्री श्री जयन्तिभाई संघवी आदि भी अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सम्पर्क सूत्र- जैन सम्पत खाब्या, फोन-६८२५०-४७३२१

द्विदिवसीय जैन विद्वत् संगोष्ठी सम्पन्न

अहमदाबाद— श्रमणसंघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि जी म.सा. 'कुमुद', उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' आदि ठाणा ५ के पावन सान्निध्य में श्री अम्बागुरु शोध संस्थान, उदयपुर तथा जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में १२ एवं १३ नवम्बर २००२ को जैन विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी में प्रो. प्रेमसुमन जैन, डॉ. शेखरचन्द्र जैन, डॉ. उदयचन्द्र जैन, डॉ. हेमलता बोलिया, डॉ. हुकमचन्द जैन, कर्नल दलपसिंह बया, शोध छात्र श्री दिलीप धींग, श्री रजनीश शुक्ला आदि विद्वानों ने 'प्रज्ञापना सूत्र' के विभिन्न पक्षों पर अपने शोधालेख प्रस्तुत किए।

आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी श्रावक सम्मेलन सम्पन्न

समग्र आन्ध्रप्रदेश का द्विदिवसीय श्रावक सम्मेलन १६ एवं १७ नवम्बर २००२ को श्री अक्षयमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में पूनमचन्द गांधी जैन स्थानक काचीगुड़ा में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में पर्युषण सेवा, पारस्परिक परिचय, शिक्षण- संस्कार, सामायिक-स्वाध्याय, संगठन आदि विभिन्न बिन्दुओं पर विचार-विमर्श हुआ। नगरत्रय, विजयनगरम्, राजमण्डी, विजयवाड़ा, गुण्टूर, कर्नूल, गुन्तकल, खम्मम, कामारेडी, रायचूर, तिरुपति आदि क्षेत्रों से अनेक स्वाध्यायी एवं श्रावक- श्राविकाओं ने सम्मेलन में

भागीदारी निभायी। स्वाध्याय संघ की संयोजिका श्रीमती सुशीला जी बोहरा एवं महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री प्रकाशचन्द जी जैन विशेष अतिथि के रूप में पधारे। दोनों अतिथियों के विचारों से प्रतिनिधि अति प्रभावित हुए। सभी वक्ताओं ने दूर-दराज के क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। आन्ध्रप्रदेश में पर्युषण सेवा प्रारम्भ करने संबंधी विचार हुआ तथा संघ को संगठित एवं सुदृढ़ करने हेतु कार्यकारिणी गठित की गई, जिसमें विभिन्न जिलों से पाँच उपाध्यक्ष एवं ग्यारह सदस्यों का चयन किय गया। सभी प्रतिनिधियों का विशेषतः पर्युषण-सेवा देने वाले सक्रिय सदस्यों का सम्मान किया गया। सम्मेलन का आयोजन आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ ने किया तथा आवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, काचीगुड़ा द्वारा की गई।

-शान्तिलाल गुन्देचा, मंत्री

करुणा अन्तर्राष्ट्रीय का अखिल भारतीय अधिवेशन

करुणा अन्तर्राष्ट्रीय, चेन्नई का अखिल भारतीय अधिवेशन चेन्नई के पुरुषवाक्कम् स्थित सी.यू. शाह भवन (रिथर्डन रोड) में दिनांक ६-१० जनवरी २००३ को आयोजित किया जा रहा है। ध्यातव्य है कि करुणा अन्तर्राष्ट्रीय विगत सात वर्षों से निरन्तर विद्यालयों के छात्र-छात्राओं में अहिंसा, करुणा, दया, मानवता, नैतिकता, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं पर्यावरण प्रेम की भावना का बीजारोपण करता रहा है। करुणा अन्तर्राष्ट्रीय का यह मानना है कि विद्यालय के विद्यार्थियों में प्रारम्भ से ही अगर उपर्युक्त भावनाओं की लौ जागृत की जाती रही तो उनका जीवन भारतीय संस्कृति के अनुरूप एवं देशप्रेम से ओतप्रोत बन जायेगा। करुणा एवं सद्शिक्षा के अभाव में आज का विद्यार्थी आगे जाकर देशद्रोही एवं आतंकवाद का चोला भी पहन सकता है, जिसके कारण राष्ट्र में हिंसा एवं अराजकता की विषम परिस्थितियां और घनीभूत हो सकती हैं। अतः आज प्रत्येक विद्यालय में करुणा क्लब गठित करने की महती आवश्यकता है।

करुणा क्लब आठ प्रान्तों (तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र एवं राजस्थान) में ४५० से भी अधिक विद्यालयों में सुचारु रूप से कार्यरत हैं। शेष राज्यों में करुणा केन्द्र प्रारम्भ करने का प्रयास जारी है।

करुणा अन्तर्राष्ट्रीय को भारत सरकार ने भी मान्यता प्रदान की है तथा भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड ने अध्यापकों को मानवीय शिक्षा का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए १,००००० /- रुपये का प्रारंभिक अनुदान दिया है, साथ ही समस्त भारत के विद्यालयों में मानवीय शिक्षा पाठ्यक्रम निर्मित करने का भी निर्देश दिया है। निर्मित पाठ्यक्रम इसी अधिवेशन में बोर्ड के पदाधिकारियों को समर्पित किया जायेगा।

इस कार्यक्रम में समस्त भारत से लगभग ३०० प्रतिनिधि भाग लेंगे। सारे भारत के २१ उत्कृष्ट करुणा क्लब विद्यालयों को ७०००० (सत्तर हजार रुपये) के पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

इस समारोह में करुणा एवं जीवदया के लिए कार्यरत संस्थाओं के अधिकारी, शिक्षाविद्, प्रबुद्ध पत्रकार एवं अन्य प्रतिष्ठित अतिथिगण भाग लेंगे एवं कार्यकर्ताओं को

मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

अहिंसा एवं करुणा में अनुराग रखने वाली सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से इस अधिवेशन में भाग लेने का विशेष अनुरोध है।

-जी.एल. सुराणा, चेयरमेन, अखिल भारतीय अधिवेश
60 NSC Bose Road, Chennai-600001

जैन अल्पसंख्यक सम्मेलन

लखनऊ— राज्य में जैन समाज को अल्पसंख्यक की मान्यता प्राप्त हो सके, इस उद्देश्य से १० नवम्बर २००२ को लखनऊ में मुनि सौरभसागर जी के सान्निध्य में जैन अल्पसंख्यक सम्मेलन का आयोजन किया गया। अल्पसंख्यक स्वरूप की मान्यता यदि मिली तो जैन समाज की पहचान बनी रहेगी और सुदृढ़ भी होगी। मुख्य लाभ यह है कि जैन समाज द्वारा मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन का पूर्ण अधिकार समाज का होगा। अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा स्थापित एवं संचालित तथा शासन से सहायता प्राप्त संस्थाओं में अल्पसंख्यक समुदाय के ५० प्रतिशत छात्रों को प्रवेश दिया जा सकेगा। *-वीर सुरेश जैन, राष्ट्रीय महामंत्री*

संक्षिप्त समाचार

अंकलेश्वर (गुजरात)—प्रवर्तक श्री उमेशमुनि जी म.सा. 'अणु' ने अंकलेश्वर संघ की प्रबल विनति को ध्यान में रखते हुए अक्षय तृतीया पर दक्षिण गुजरात के अंकलेश्वर नगर में पदार्पण की स्वीकृति फरमा दी है। इससे अंकलेश्वर संघ अतीव प्रमुदित है। गुजरात के सुरत, नवसारी, वापी, नसदा, बारडोली आदि संघ भी उत्साहित हैं।

- अनोखी लाल धोका, प्रमुख, स्थानकवासी जैन संघ, अंकलेश्वर, जिला-भरुच (गुजरात)

पांढरकवड़ा (महाराष्ट्र)— भारतीय जैन संघटना पांढरकवड़ा (महाराष्ट्र) द्वारा विदर्भ स्तरीय (खुली) निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। निबन्ध का विषय- 'अहिंसा : एक सामाजिक आवश्यकता' है। महाराष्ट्र के ११ जिलों (विदर्भ सम्भाग) के व्यक्ति इसमें भाग ले रहे हैं। *-प्रो. सुनील पितलीया*

चेन्नई— आचार्यप्रवर श्री शुभचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से आगम-विवेचक पं. रत्न श्री पार्श्वचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में २५ नवम्बर २००२ को मुमुक्षु भाई श्री दिलीप जी बोहरा ने जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा-समारोह विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

कोटा— दिनांक १८.११.२००२ को जैन दिवाकर सीनियर सैकेण्डरी स्कूल बल्लभवाड़ी कोटा में स्व. जैन दिवाकर चौथमल जी महाराज सा की १२५ वीं जन्म जयन्ती दिवाकर शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री सुभाष जैन की अध्यक्षता में स्कूल के छात्र एवं छात्राओं द्वारा बड़े उल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर छात्रों एवं छात्राओं द्वारा गुणानुवाद किया गया तथा उनके जीवन के प्रेरक प्रसंगों को याद कर उनके बताये हुये सद्मार्ग पर चलने

की प्रतिज्ञा ली।

अध्यक्षीय भाषण में श्री सुभाष जी जैन ने गुरुदेव चौथमल जी म.सा. के बारे में कहा कि दिवाकर जी मानवता के मसीहा थे, वर्ग विहीन समता प्रधान समाज के निर्माण में अग्रदूत थे। अतः सही मायने में वे श्रमण थे। राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण के दौर में आप श्री ने राष्ट्र के सुप्त समाज को जागृत किया। इस अवसर पर शिक्षा समिति के मंत्री श्री सुरेश जैन ने भी स्कूल के बच्चों को संबोधित किया। स्कूल प्राचार्य श्री चन्द्रभान जैन द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। *-चन्द्रभान जैन*

बधाई

जैन कॉन्फ्रेंस के चुनाव

दिल्ली– अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के सादड़ी (मारवाड़) में सम्पन्न चुनावों के अनुसार श्री नेमनाथ जी जैन, इन्दौर को चेयरमेन, श्री नेमीचन्द जी चौपड़ा, पाली को अध्यक्ष तथा श्री सुभाष जी ओसवाल को महामंत्री मनोनीत किया गया है। श्री नेमनाथ जी जैन विगत कई वर्षों से जैन कॉन्फ्रेंस की मध्यप्रदेश प्रान्तीय शाखा के अध्यक्ष एवं केन्द्रीय कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष हैं। आप कुशल एवं सिद्धहस्त उद्योगपति हैं। भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'उद्योग विभूषण' से अलंकृत किए गए हैं। आप श्री जैन दिवाकर चौथमल पारमार्थिक ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री जैन का अनेक संस्थाओं से सक्रिय जुड़ाव है। १५ अगस्त १९४७ को जन्मे श्री नेमीचन्द जी चौपड़ा तरुण वर्ग में जागृति के प्रबल पक्षधर हैं। विगत अढ़ाई वर्षों से उपाध्यक्ष रहे। तकनीकी डिप्लोमा प्राप्त श्री चौपड़ा गोसेवा समिति, राजस्थान के संयोजक हैं। महामंत्री श्री सुभाष जी ओसवाल समाज कार्य के लिए समर्पित एवं मिलनसार स्वभाव के कार्यकर्त्ता हैं। पूना सम्मेलन के समय वे जैन कॉन्फ्रेंस की युवाशाखा के अध्यक्ष चुने गए थे। आप दिल्ली, पाथर्डी आदि की कई संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं।।

- राजेन्द्र नगावत, सम्पादक-जैन प्रकाश

बैंगलोर– गत सितम्बर में श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन

कॉन्फ्रेंस की कर्नाटक शाखा में सर्वसम्मति से प्रमुख समाजसेवी श्री मोहनलाल जी मूथा को अध्यक्ष चुना गया है। पिछली कार्यकारिणी में आप उपाध्यक्ष रह चुके हैं। आप बैंगलोर की अनेक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। कर्नाटक जैन कॉन्फ्रेंस के मन्त्री श्री महावीरचन्द जी रूणवाल सूझ-बूझ के धनी एक सरलमना श्रावक हैं।

-गौतमचन्द ओस्तवाल

बम्बोरा– कवि एवं लेखक श्री दिलीप धींग जैन को जैन कॉन्फ्रेंस की युवा शाखा का राजस्थान प्रदेश साहित्य सचिव एवं प्रान्तीय प्रवक्ता मनोनीत किया गया है। श्री जैन ने गत चार वर्षों में संभागीय साहित्य सचिव के रूप में अहिंसा, शाकाहार और स्वाध्याय प्रचार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। आप श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, उदयपुर की

ओर से आयोजित मासिक सामायिक संगोष्ठी में भी सक्रिय एवं नियमित सहभागिता निभाते हैं। *-संजय भण्डारी*

नगरी—शाकाहार, व्यसनमुक्ति, जीवदया, संस्कार-निर्माण, आध्यात्मिक दिशाबोध, साम्प्रदायिक सद्भाव, समन्वय एवं सामाजिक-जागरण के क्षेत्र में विशेष कार्य के लिए छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ***श्री महेश जी नाहटा, नगरी एवं महावीर सेवा समिति*** को संयुक्त रूप से 'यति यतनलाल अहिंसा पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। धर्म एवं समाज-सेवा में समर्पित प्रेरक व्यक्तित्व श्री महेश जी नाहटा का पशुबलि बन्द कराने, शाकाहार-प्रचार एवं अहिंसा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है। ब्रह्मचारी, वक्तृत्वकला में निपुण, मृदुभाषी, सरल, विनम्र, नेतृत्व एवं संयोजन में दक्ष, संस्कार प्रेरक एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री नाहटा जी को एक लाख रुपये नकद राशि के साथ अहिंसा पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। हार्दिक बधाई। *-राजेश जैन, देवकर*

जलगांव— श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जलगांव के संघपति श्री

दलुभाऊ (दलीचन्द) जैन को महाराष्ट्र श्रमणसंघीय अधिवेशन में 'समाज शिरोमणि' उपाधि से अलङ्कृत किया गया है। संघपति श्री दलुभाऊ जैन समाज-सुधार, ऐक्य, धार्मिक जागृति आदि के संबंध में विगत ४०-४५ वर्षों से कार्य कर रहे हैं। सुश्रावक श्री जैन को यह सम्मान २१ नवम्बर २००२ को 'स्नेह सम्मेलन समारोह' में प्रदान किया गया। *-ग्यानचन्द बरड़ियां, जलगांव*

श्रद्धांजलि

डॉ. के.आर.चन्द्र का निधन

अहमदाबाद— प्राकृत भाषा के विश्वविश्रुत विद्वान् डॉ. के.ऋषभ चन्द्र का अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह में अहमदाबाद में आकस्मिक निधन हो गया। २८ जून १९३१ को पालड़ी, जिला-सिरोही (राज.) में जन्मे डॉ. चन्द्र गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के प्राकृत विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए। आपने २० से अधिक पुस्तकों के लेखन, संकलन एवं सम्पादन और शताधिक शोध-पत्रों से विद्वत् जगत् में विशिष्ट छाप छोड़ी। अर्धमागधी प्राकृत के प्राचीन रूप को प्रस्तुत करने हेतु आपने अथक प्रयत्न किया। 'प्राचीन अर्धमागधी की खोज में' तथा Restoration of the original language of Ardhamagadhi Texts इस दिशा में आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं। आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध के प्रथम अध्ययन का आपने अर्धमागधी भाषा की दृष्टि से पुनः सम्पादन करके विद्वानों के लिए मार्गदर्शन किया है। आप हेमचन्द्राचार्य स्वर्णपदक सदृश पुरस्कारों से सम्मानित हुए तथा प्राकृत जैन विद्या विकास फण्ड, अहमदाबाद के मानद सचिव थे। आपके निधन से प्राकृतभाषा के मर्मज्ञ विद्वान की कमी हुई है। आप अन्तिम क्षणों में भी लेखन कार्य में जुटे हुए थे। जिनवाणी के जैनागम-साहित्य विशेषांक में आपने प्राकृत भाषा विषयक लेख प्रेषित कर विशेषांक की

शोभा बढ़ायी थी। जिनवाणी परिवार आपके सद्गुणों एवं विद्वत्ता का आदर करता है।

जोधपुर—सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवी जी चौपड़ा धर्मपत्नी श्रीमान भंवरलाल जी चौपड़ा, जोधपुर का ५५ वर्ष की उम्र में ८ नवम्बर २००२ को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित सामायिक व्रत की आराधना करती थी। आपके जीवन में त्याग -प्रत्याख्यान के साथ-साथ सेवा-भावना के भी संस्कार थे। आपकी परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि रत्नवंशीय सन्त व सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आप रत्नवंशीय वरिष्ठ सुश्रावक स्व. श्रीमान मिश्रीमल जी सा चौपड़ा की पुत्रवधू थी।

जोधपुर— धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सम्पतराज जी कांकरिया सुपुत्र स्व. श्री भंवरलाल जी कांकरिया (भोपालगढ़ वाले) का ६६ वर्ष की उम्र में संथारापूर्वक स्वर्गवास दिनांक ४ नवम्बर २००२ को हो गया। आप अत्यन्त सरल, विनम्र, सेवाभावी श्रावक थे। आचार्यप्रवर १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपने ४ नवम्बर को ही साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाड़कंवर जी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण किया था। आप अपने पीछे एक पुत्र व तीन पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ कर गये हैं।

जयपुर— श्री मिलापचन्द जी सुखलेचा का ६ नवम्बर २००२ को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने अनेक व्रत, नियम एवं प्रत्याख्यान ग्रहण किए थे। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति आप पूर्णतः समर्पित थे। आप सन्त-सतियो की सेवा में अग्रणी रहते थे। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव रहा। आपका जीवन धर्मनिष्ठता, सेवाभावना, विनम्रता, स्वधर्मी-वात्सल्य आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था।

- प्रकाशचन्द डागा

जयपुर— सुश्राविका श्रीमती चन्दर देवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री मांगीलाल जी बैद का १८ नवम्बर २००२ को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप नियमित सामायिक करती थी। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थी। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थी। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की आप परमभक्त थी। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

गंगापुर सिटी— सुश्राविका श्रीमती मिसरीबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री मदनलाल जी जैन का १२ नवम्बर २००२ को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी एवं अनेक

गुणों से सम्पन्न थीं। इस वर्ष व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के चातुर्मास में आपके परिवार ने जिस प्रकार से सेवा एवं धर्म-ध्यान का आराधन किया है, वह अनुकरणीय है। श्रीमान मदनलाल जी जैन रत्नवंश के वरिष्ठ श्रावकरत्न थे। आपका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ, संस्कारशील एवं रत्नवंश के प्रति समर्पित है।

दुर्ग—समाज सेवी एवं श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के मन्त्री सुश्रावक श्री राणीदान जी बोथरा का ६७ वर्ष की वय में निधन हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

भायन्दर(मुम्बई)— धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री रतनचन्द जी भंसाली (पाली वालों) का २६ अगस्त २००२ गुरुवार को मुम्बई में आकस्मिक देहावसान हो गया। आप सरलता एवं सादगी की प्रतिमूर्ति होने के साथ दृढ़ आस्था-सम्पन्न भक्त श्राविका थीं। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव रहा। सन्त-सतियों की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थीं। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति आपका समर्पण अनूठा था।

श्योपुरकलां (म.प्र.)— सुश्रावक श्री लालचन्द जी मेहर का ६२ वर्ष की अवस्था में २० अक्टूबर २००२ को भण्डारा (महाराष्ट्र) में देहावसान हो गया। आप धर्मनिष्ठ, सरल, विनम्र, मिलनसार, समाजसेवी एवं धर्मक्रिया में रुचिसम्पन्न श्रावकरत्न थे। आप भरापूरा परिवार छोड़कर स्वर्ग सिधारे हैं। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. आपके धर्मगुरु थे। मरणोपरान्त नेत्रदान करने की अभिलाषा के अनुरूप नेत्रदान किए गए।

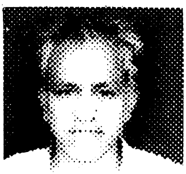

- एस.एम.गांधी

जयपुर— श्री सुरेश जी सिंघवी चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट का २२ नवम्बर २००२ को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण एवं प्रतिभाशाली श्रावक थे। आप सेवाभाव, विनम्रता, मिलनसारिता आदि गुणों से ओतप्रोत थे।

मेट्टुपालयम्— यहाँ के श्रीसंघ के अध्यक्ष सुश्रावक श्री भंवरलाल जी सांखला का ७४ वर्ष की आयु में १८ नवम्बर २००२ को आकस्मिक निधन हो गया। आप समाज के सुदृढ़ स्तम्भ थे। धर्मनिष्ठ, मिलनसार एवं आतिथ्य सत्कार की भावना से ओतप्रोत सांखला जी की कमी संघ एवं समाज को अनुभव हुई। सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहने के साथ आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय के नियम का पालन करते थे।

-आर. भंवरलाल सुराना

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8942 Shri Manohar Ji Malpas, Mumbai (M.S.)
8943 श्री पुखराज जी बैद, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)
8944 Shri Sajjanraj Ji Mahaveer Ji Kothari, Chennai (T.N.)
8945 श्री शरद कुमार जी कटारिया, भोपाल (म.प्र.)
8946 Shri R.Bhagchand Suresh Kumar Ji Bohra, Tiruvallur (T.N.)
8981 Shri Madanlal Ji Lunia, Post-Pichiyak, Jodhpur (Raj..)
8982 श्री वर्द्ध. जैन श्वेताम्बर स्थानक, रामगंजमण्डी, कोटा(राज.)

श्रीमान् अमरचन्द पी.मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से जिनवाणी के 30 आजीवन सदस्य

8947 सौ. सुनिता जी मुणोत, नया जालना (महा.)
8948 श्री राजेन्द्र कुमार जी नरेन्द्र कुमार जी जैन (मुई वाले), स.माधोपुर(राज.)
8949 श्री मिश्रीमल जी जैन, करौली (राज.)
8950 श्री उदयलाल जी जैन, करौली(राज.)
8951 श्री विमलचन्द जी जैन (खौह वाले), जवाहरनगर, जयपुर (राज.)
8952 श्री सुभाषचन्द जी जैन (खौह वाले), मालवीय नगर,जयपुर (राज.)
8953 श्री भोपालसिंह जी प्रकाशचन्द जी नाहर, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा (राज.)
8954 श्री शाह बछराज जी कन्हैयालाज जी सुराना, बागलकोट,बीजापुर (कर्नाटक)
8955 श्री हीरालाल जी जवनमल जी जैन, बंगार पेट, कोल्हार (कर्नाटक)
8956 श्री जवरीलाल जी सुनील कुमार जी नाहटा, बंगारपेट (कर्नाटक)
8957 श्री जुगलकिशोर जी जैन(पटवारी), बामनवास, सवाईमाधोपुर (राज.)
8958 श्री सुमेरचन्द जी जैन (करौली वाले) सोडाला, जयपुर (राज.)
8959 श्री चौथमल जी जैन (मास्टर), पापड़दा, दौसा (राज.)
8960 श्री पूरणचन्द जी जैन, फूलवाड़ा, सवाईमाधोपुर (राज.)
8961 श्री दलपतराज जी जैन(मंडिया वाले), पाली (राज.)
8962 श्री विमलचन्द जी पुत्र श्री कालूलाल जी जैन, अलीगढ़, टोंक (राज.)
8963 श्री देवीलाल जी तातेड़, आसीन्द, भीलवाड़ा (राज.)
8964 श्री मंत्री महोदय, महावीर भवन, भरतपुर (राज.)
8965 श्री सुरेशचन्द जी जैन(स.माधोपुर वाले) मानसिंहपुरा, जयपुर (राज.)
8966 श्री रमेशचन्द जी जैन(स.माधोपुर वाले), सीताबाड़ी, जयपुर (राज.)
8967 श्री सरदारमल जी समरथमल जी कवाड़, सनावद, खरगौन (म.प्र.)
8968 श्री टीकमचन्द जी जैन(टी.सी.), मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राज.)
8969 श्री रिखभचन्द जी जैन, टोडाभीम, करौली (राज.)
8970 श्री कान्तिलाल जी हरकचन्द जी गांधी, कोंडवा खुर्द, पुणे (महा.)
8971 श्री महेन्द्र कुमार ललित कुमार जी जैन(भनोकर वाले),गंजखेरली, अलवर (राज.)
8972 श्री महेन्द्र कुमार जी जैन(पोरवाल), ठाणा, मुम्बई (महा.)
8973 श्री प्रमोद कुमार जी चोरड़िया, जलगांव (महा.)
8974 श्री हीराचन्द जी खेमराज जी बाफणा, मुम्बई (महा.)
8975 श्री शंकरलाल जी गुलाबचन्द जी सिसोदिया, नन्दूरबार (महा.)
8976 श्री कपिल जी रिखबचन्द जी ढाबरिया, गोरेगांव(वेस्ट), मुम्बई (महा.)

श्रीमान् बी. दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई के सौजन्य से जिनवाणी के 40 आजीवन सदस्यों (प्रत्येक 300/– रुपये) में से

8977 Shri B.Ashok Kumar Ji Jain, Tindnanam (T.N.)
8978 Shri Mahaveerchand Ji Katariya, Solinghur (T.N.)
8979 Shri R.Karanraj Ji Dakliya, Chennai (T.N.)
8980 Shri Gokalchand Ji Prakashchand Ji Bagmar, Chennai (T.N.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

1100/– श्रीमती उगमबाई सा. श्री मोहनलाल जी बोहरा, तिरुवकामलै (तमिलनाडु), परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1100/– श्री अशोक कुमार जी राजेश कुमार जी भंसाली (पाली वाले), मुम्बई, अपनी माताश्री श्रीमती कमलादेवी जी (धर्मपत्नी श्री रतनचन्द जी भंसाली) का स्वर्गवास दिनांक 29.8.2002 को हुआ, उनकी स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1000/– श्री गंगाराम जी अणचीदेवी जी चौपड़ा, जोधपुर, जीवित सद्भावना महोत्सव करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1000/– श्री भंवरलाल जी चौपड़ा, जोधपुर, धर्मपत्नी श्रीमती शान्तिदेवी चौपड़ा की पावन स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

501/– श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लूणिया, पल्लीपेट, तिरुवकामलै, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

501/– श्री जौहरीलाल जी पटवा, जयपुर; अपने 77वें जन्मदिवस दिनांक 24.10.2002 को प्रवेश करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

501/– श्री शान्तिलाल जी रांका, श्रीमती कंचनदेवी जी रांका, जोधपुर, पालासनी चातुर्मास में परमश्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. के मुखारविन्द से सजोड़े शीलव्रत ग्रहण करने की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

500/– श्रीमती सरोज देवी श्री सुशील कुमार जी बोहरा, तिरुवकामलै (तमिलनाडु),परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में।

500/– श्री कनकमल जी रंगलाल जी चोरड़िया, चेन्नई, पूज्य आचार्य प्रवर के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्री एस.मोहनलाल जी मूथा, बैंगलोर, अ.भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस कनार्टक शाखा, बैंगलोर में सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर जिनवाणी को सप्रेम।

500/– श्री राजेश जी कांकरिया, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री सम्पतराज जी कांकरिया का दिनांक 4.11.2002 को संथारापूर्वक स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

251/– श्री मोतीलाल जी पारसचन्द जी बोहरा, सवाईमाधोपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के सपरिवार दर्शनों की खुशी में सप्रेम भेंट।

250/– श्री प्रकाशमल जी श्रीमती कमलादेवी जी बोथरा, चेन्नई, चि. सुनील जी द्वारा छह दिनों में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने की खुशी में एवं आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि सन्त–सती मण्डल के दर्शनार्थ आने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

250/– श्री प्रकाशचन्द जी लोढ़ा(नाडसर), श्री शान्तिलाल जी बैंगलोर, श्री महावीर चन्द जी लोढ़ा, चेन्नई, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

201/– श्री धनपतमल जी रोहित कुमार जी चोरड़िया, चेन्नई, सुपौत्री के जन्मोत्सव की

खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

201/- श्री रतनचन्द जी कांकरिया, भोपालगढ़ वाले, पूज्य आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से शीलव्रत ग्रहण करने की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

200/- डॉ. मुखर्जी, जबलपुर, पूज्य आचार्य प्रवर के दर्शनों की खुशी में भेंट।

200/- श्री प्रकाशमल जी बोथरा, चेन्नई, आचार्य भगवन्त के दर्शनार्थ आने एवं चि. सुनील के बी.बी.ए. में तमिलनाडु प्रान्त में 25 वाँ स्थान प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

200/- श्री पी.एम. चोरड़िया, चेन्नई, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

200/- श्री मदनलाल जी जैन, चेन्नई, परम पूज्य आचार्य भगवन्त के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

200/- गुप्तदान।

110/- श्रीमती भगवती देवीजी जैन, भरतपुर, जिनवाणी को भेंट।

101/- श्री धनपतमल जी रोहित कुमार जी चोरड़िया, चेन्नई, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

101/- श्री धर्मेन्द्र कुमार जी कुलदीप कुमार जी जैन, आवासन कॉलोनी, सवाईमाधोपुर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुम्बई में सपरिवार दर्शन करने की खुशी में जिनवाणी को भेंट।

101/- श्री चौथमल जी शान्तिलाल जी(पाटोली वाले),अलीगढ़ (टोंक),श्रीमान् सौभाग्यमल जी जैन की पुण्यतिथि पर जिनवाणी को भेंट।

100/- श्री सरूपचन्द जी उत्तमचन्द जी संचेती, प्रिंपाला (महाराष्ट्र), श्री प्रमोद कुमार जी महावीर कुमार जी संचेती, बुआजी की बहू के नौ उपवास के पच्चक्खाण के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार-प्राप्त

200/- गुप्तदान।

100/- श्री सरूपचन्द जी उत्तमचन्द जी दिनेशचन्द जी संचेती, प्रिंपाला (महाराष्ट्र), बहनोई सा. श्री राजेश जी गादिया पूजादर्शक गादिया के जन्मदिवस के अवसर पर कबूतर चुगा के लिए सप्रेम भेंट।

100/- श्री सरूपचन्द जी उत्तमचन्द जी, श्री मधुरकुमार जी श्री नितेशकुमार जी संचेती, प्रिंपाला(महा.) हमारी बुआजी की बेटी पूजा गादियां के धार्मिक परीक्षा में प्रथम स्थान से पास होने पर जीव दया में सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

30,000/-श्री जी. एस. प्यारेलाल जी कोठारी, चेन्नई के सौजन्य से "जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग **1 व 4**" के पुनः प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सप्रेम प्राप्त।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

10000/-श्रीमती विजया जी मेहता, धर्मपत्नी श्री श्रीचन्द सा मेहता, जोधपुर। स्वाध्याय संघ जोधपुर की स्तम्भ सदस्यता।

1000/- श्री कल्याणमल प्रकाशमल चोरड़िया ट्रस्ट, चेन्नई, स्वाध्याय संघ संवर्द्धक सदस्यता।

500/- श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, स्वाध्याय संघ सहयोगी सदस्यता।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

अंकेक्षण रिपोर्ट

We have examined the Balance Sheet of SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL, Over shop no- 182 &183, Bapu Bazar, JAIPUR as at 31st March, 2002 and the Income & Expenditure Account of Samyag Gyan Pracharak Mandal & its units for the year ended on that date, and we report :

We have obtained all the information and explanation excepting a few supportings and evidences which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of Audit.

In our opinion, proper books of account have been kept by the institution and their units and proper returns adequate for the purpose of audit have been received from the units.

In our opinion and to the best of our information and according to explanations given to us, read with Notes of Account the said accounts give a true and fair view :-

1- In the case of Balance Sheet, of the state of affairs of the above named institution as at 31st March, 2002 and

2- In the case of Income & Expenditure of the Excess of expenditure over Income of the accounting year ending on 31st March 2002.

sd/-

Jaipur
9th August, 2002

For Mehta & Company
Chartered Accountants
Prakash Chand Jain Partner

SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL, JAIPUR

CONSOLIDATED PROFIT & LOSS A/c For 1-4-2001 To 31-3-2002

EXPENDITURE	SGPM	JINWANI	S.SANGH	J.S.S.S.	TOTAL
Salary	204995.00		230393.00	34500.00	**469888.00**
Postage Expenses	12893.00	119856.50	17898.00		**150647.50**
Stationery Expenses	11793.40	668904.50	24441.30		**705139.20**
Medical Expenses	2848.05		6370.45		**9218.50**
Repairs & Maintenance	12058.00			5950.00	**18008.00**
Bank Charges	1505.00	1019.00	364.00		**2888.00**
Office Rent	5304.00		300.00		**5604.00**
Electricity Exp.	2532.00		670.00	9388.50	**12590.50**
Telephone Exp.	441.00	7166.50	21130.15	5317.00	**34054.65**
Depreciation Exp.	29329.12	156.00	5739.15	847.63	**36071.90**
Conveyance Exp.	4684.50	12270.00	3831.00		**20785.50**
Employees Welfare Fund	3300.00		6960.00		**10260.00**
Sundry Exp.	4449.00	314.00	1728.00	5065.75	**11556.75**
Acharya S.H.S.S. Exp.	3365.00				**3365.00**
Cartage & Freigth	2238.00	2680.00			**4918.00**
Staff & Guest Welfare Exp.	3760.00				**3760.00**
Typewriter Exp.	413.00				**413.00**
Advertisement Exp.	1627.00				**1627.00**
Paryushan Exp.			801.00		**801.00**
Packing Exp.	4814.00		152.00		**4966.00**
Swadhyee Pariksha Yojna			2654.00		**2654.00**
Prachar Prasar Exp.	1100.00		58944.15		**60044.15**
Sahitya Anudan Exp.			1602.50		**1602.50**
Despatch exp.	1245.00		942.00		**2187.00**
Agam Ardhan Exp.			3250.00		**3250.00**

INCOME	SGPM	JINWANI	S.SANGH	J.S.S.S.	TOTAL
Interest	400918.54	1979.90	1188.00		**404086.45**
Sahayata (Aids)	570452.00	202702.00	62806.00		**835960.00**
Sales	368205.50		52128.00		**420333.50**
Advertisement		11711.10			**117111.10**
Commission	6920.00				**6920.00**
Subscription		5990.00			**5990.00**
Closing Stock	469899.00		42448.00		**512347.00**
Arthik Sadsayta			34000.00		**34000.00**
Paryushan Sahayata			75271.00		**75271.00**
Sahitya Anudan			10000.00		**10000.00**
Sundry Income			882.00		**882.00**
Excess of Exp. over income		**521949.59**	**405405.70**	**161714.88**	**1089070.17**

Computer Exp.	17960.00	8510.00			**26470.00**						
Shivir Exp.			23203.50		**23203.50**						
Puraskar Exp.			29750.00		**29750.00**						
Sahitya Purchases	494599.50		75075.00		**569674.50**						
Sahitya Prakashan	376582.00		6380.00		**382962.00**						
Remuneration Exp.		25856.00			**25856.00**						
Dharmika Pathshala Exp.			73029.50				**73029.50**				
Travelling Exp.		2500.00	1618.00		**4118.00**						
Paryushan Travelling Exp.			86518.00		**86518.00**						
Uttar Bhejye Puraskar		500.00			**500.00**						
Samayiak Upkaran			384.00		**384.00**						
Mess. Exp.				77151.00	**77151.00**						
Water Charges				610.00	**610.00**						
Sneh Millan Samarh Exp.				22885.00	**22885.00**						
Trial Balance Deffrence	136.00				**136.00**						
Excess of Income over Exp.	612423.47				**612423.47**						
GRAND TOTAL	**1816395.04**	**849732.50**	**684128.70**	**161714.88**	**3511971.12**	**GRAND TOTAL**	**1816395.04**	**849732.50**	**684128.70**	**161714.88**	**3511971.12**

In terms of our separate report of even date

For Mehta & Company
Chartered Accountants

Place: Jaipur
Dated: 9th August, 2002

(C.P.Dungarwal)
President

(P.C.Daga)
Secretary

(P.C.Kothari)
Treasurer

(P.C.Jain)
Partner

SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL, JAIPUR

BALANCE SHEET AS AT 31-3-2002

LIABILITIES	SC. NO.	AS AT 31-03-2002	AS AT 31-03-2001	ASSETS	SC. NO.	AS AT 31.03.2002	AS AT 31.03.2001
Life Membership	1	3,647,550.58	2,767,331.58	Fixed Assets	6	554,658.11	509,709.01
Reserve Fund	2	1,289,567.06	1,289,567.06	Fixed Deposits	7	3,718,540.00	2,968,540.00
Corps Fund	3	585,684.00	585,684.00	ITDS		18,242.75	18,242.75
Other Aids	4	294,914.08	313,414.08	Accrued Interest		210,164.00	169,122.00
Sundry Creditors	5	211,650.25	91,307.75	Security Deposit	8	3,247.00	3,247.00
Staff Welfare Fund		7,500.00	7,500.00	Closing Stock	9	512,347.00	4 80,713.00
				Sundry Debtors	10	164,724.15	102,926.40
				Cash & Bank Balalnce	11	177,577.86	601,585.91
				Excess of Exp. over Income	12	677,365.10	200,718.40
TOTAL		**6036865.97**	**5054804.47**	**TOTAL**		**6,036,865.97**	**5,054,804.47**

Notes On Accounts 13

In Terms of our separate report of even date

For Mehta & Company
Chartered accountants

Place : Jaipur
Dated: 9th August,2002

(C.P.Dungarwal) President

(P.C.Daga) Secretary

(P.C.Kothari) Treasurer

(P.C.Jain) Partner

JAI GURU HASTI

JAI MAHAVEER

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD

RAVINDRA KAVAD

NAVARATHAN KAVAD

ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.

Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्तता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

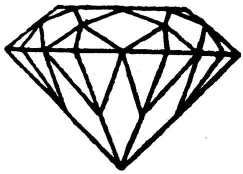

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
© 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company With Fraternity Feel, Holding Hands With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587

Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in

Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in

Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,

Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆

☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।

- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

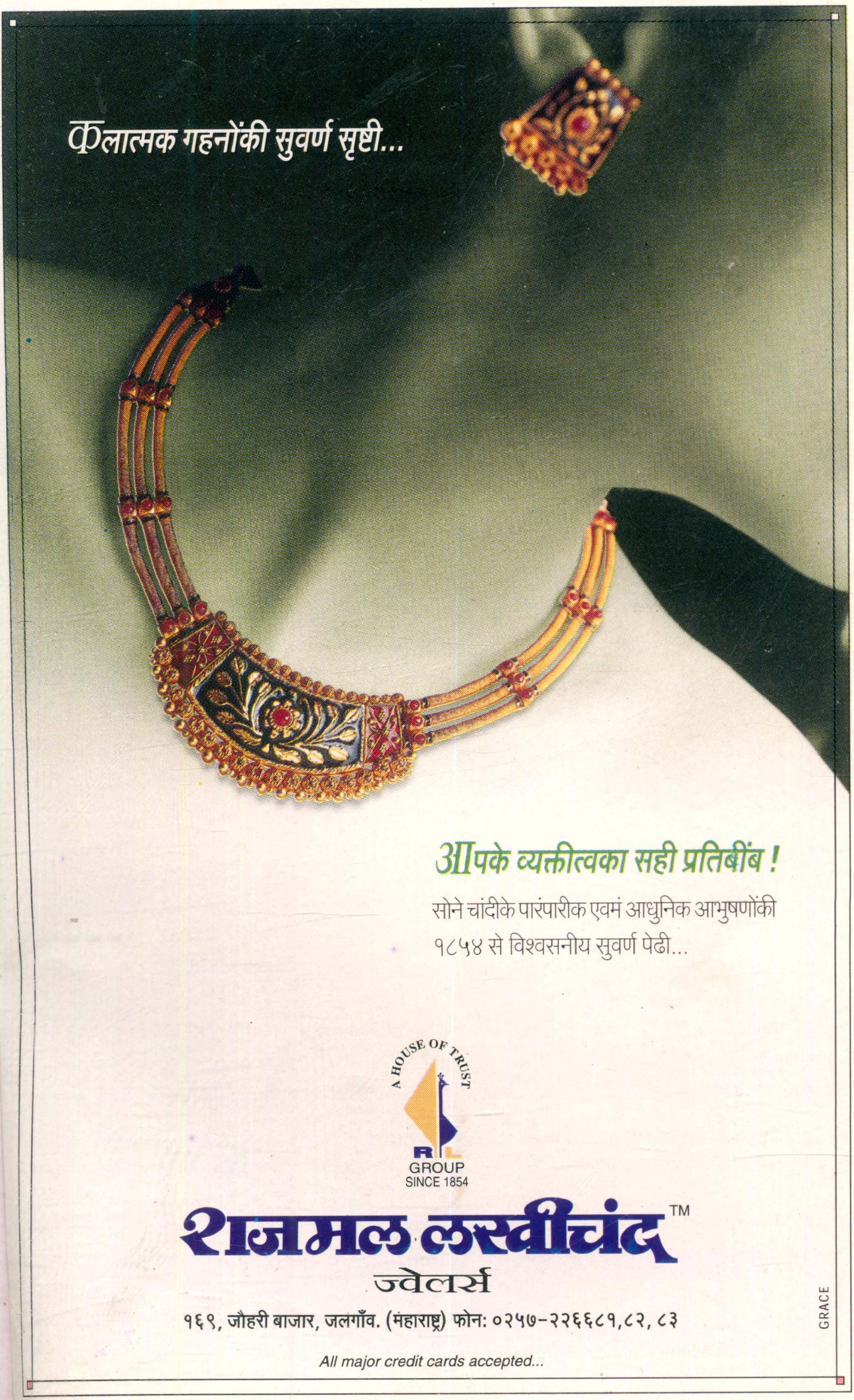

कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (मंहाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
All major credit cards accepted...
GRACE

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

TRITON/2002/KCL/085

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021.
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।